

हिन्दी बँगला शिक्षा

द्वितीय भाग ।

लेखक

हरिदास वैद्य ।

प्रकाशक

हरिदास एण्ड कम्पनी ।

तृतीय संस्करण २०००]

[मूल्य १]

हमारा वक्तव्य ।

स जगदाधार की अमीम कृपा से सत्कार के सम्पूर्ण कार्य सुचारु रूपसे सम्पन्न होते हैं, उसी जगन्नायक की विशेष अनुकम्पा तथा साहित्यसेवी, उदारहृदय और विद्याव्यसनी आहकों की अशेष कृपा का यह फल है कि, आज हम "हिन्दी बँगला शिचा" के दूसरे भाग का तृतीय संस्करण लेकर सर्व माधारण के सम्मुख सपस्थित हो सके हैं ।

यद्यपि हमारी 'बँगला शिचा' के प्रथम भाग ने बँगला सीखने में बहुत कुछ सहायता प्रदान की है, यद्यपि अधिकांश नाम, शब्द, वाक्य और मुहावरों का उसीसे पता लगा जाता है, यद्यपि बँगला सीखे अथाह रत्नभागडार का आनन्द उप करने की शक्ति उसी प्रथम भाग में ही होजाती है, संस्करण जैसे अमूल्य विषय का, जो भाषा को शुद्ध करता है, भीषण अभाव रहजाता है ।

बिना व्याकरण जाने किसी भाषा को पठ लेने की शक्ति
जाने पर भी, उस भाषा को शुद्ध बोलने, लिखने और
भाषा का पण्डित होने में एक बड़ाही विषम घाटा पड़ता
है, जिससे मनुष्य न तो उस भाषा का लेखक ही बन
सके और न बक्ता हो। यही एक प्रधान त्रुटि दूर करने
लिये, हमें 'हिन्दी बँगला शिक्षा का' यह दूसरा
लिखना पडा था।

हमारी बँगला शिक्षा के दोनों भागों से हजारों
बड़ी आसानी से बँगला सीखकर हिन्दी अनुवाद कर
गये हैं। मगर अनुभव से हमें मालूम हुआ है कि, लेखक
अनुवाद तो करने लगते हैं मगर बँगला भाषा की अनेक
कठिनाइयों और मुहावरों के न जानने से बड़ी भद्दी भूलें कर
ते हैं, इसलिये हम इसका तीसरा और चौथा भाग और
कर रहे हैं। उन दोनों भागों के भली भाँति पढ़ लेने
अनुवादकों में किसी भी प्रकार की त्रुटियाँ न रहेंगी।
उच्च कोटि की कोई भी पुस्तक हिन्दी में न रहने से ही,
अनुवादक कच्चे रह जाते हैं। आशा है, कृदरदान,
प्रेमी उन भागों को खरीद कर स्वयं लाभान्वित होंगे
हमें भी उत्साहित करेंगे, जिससे हम बराबर उनका
ही सेवा करते रहेंगे।

छात्ररचय भैरोदान मेठिवा

पुस्तक प्रणालय

हिन्दी-बँगला शिक्षा ।

दूसरा भाग ।

प्रथम खण्ड ।

बँगला व्याकरण ।

जिस पुस्तकके पढनेसे बँगला भाषाका ठीक-ठीक लिखना और बोलना आता है, उसका नाम "बँगला व्याकरण" है ।

वर्ण-ज्ञान ।

२५७५

१। पदके प्रत्येक छोटेसे छोटे टुकड़े या भागको वर्ण या अक्षर कहते हैं ।

"हरि भड़िउह" । यहाँ "हरि" और "भड़िउह" ये दो

पद मिलकर एक वाक्य बना है । इसमें "इत्रि" इस पदमें इ, वि ये दो छोटे टुकड़े या भाग हैं और इ+अ, अ+इ ये चार छोटेसे छोटे (यानी जिनसे छोटा टुकड़ा नहीं हो सकता ऐसे) टुकड़े या भाग हैं । इसीसे इन चारों में से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं । इसी तरह "अडिउछे" इस पदमें अ, डि, उ, छे ये चार छोटे भाग और अ+अ, उ+इ, उ+अ, छ+अ ये आठ छोटेसे छोटे भाग हैं , इसलिये इनमें से प्रत्येक को वर्ण कहते हैं ।

२ । बँगला भाषामें सब लेकर उन्चास वर्ण या अक्षर हैं । उन्हीं अक्षरोंके समुदाय को वर्णमाला कहते हैं ।

३ । वर्ण दो भागोंमें बँटे हैं — स्वर और व्यञ्जन । उनमें १३ स्वर और ३६ व्यञ्जन वर्ण हैं ।

स्वर वर्ण ।

४ । जो वर्ण बिना किसी दूसरे वर्णकी सहायता किये ही (अपने आप) उच्चारित होते हैं उनका नाम स्वरवर्ण है । स्वर वर्ण ये हैं,—अ, आ, इ, ई, ऐ, औ, उ, ऊ, ऋ, ए, ए, ओ, ओ, ॐ । *

* ऋ का प्राय व्यवहार नहीं होता । केवल ॠ, ॡ, ॢ इत्यादि कुछ थोड़ीसी धातुओंके लिखनेमें उनकी ज़रूरत होती है, इसीसे कोई-कोई लोग, ऋ को छोड़कर, स्वर वर्णकी संख्या बारह ही मानते हैं । बँगला भाषामें दीर्घ ऋ नहीं है, किन्तु संस्कृत भाषामें उसका चलन है ।

५। स्वर वर्ण दो प्रकारके हैं —(१) ह्रस्व, और (२) दीर्घ। अ, ई, ऊ, अ, ए ये पाँच ह्रस्व और आ, ऐ, औ, ए, ऐ, ओ, ऐ, ये आठ दीर्घ हैं।

अ, ई, ऊ, अ, ए इन पाँचोंके उच्चारण में थोड़ा समय लगता है और आ, ऐ, औ, ए, ऐ, ओ, ऐ इन आठोंके उच्चारणमें उनसे कुछ अधिक समयकी जरूरत होती है।

स्वर वर्ण जब व्यञ्जन वर्णसे मिलता है तब उसे “वानान” (मात्रा) कहते हैं। अ और ए इन दोनोंको छोड़कर और-और स्वर वर्णों की व्यञ्जन वर्णों के साथ मिलानेसे उनका रूप बदल जाता है। जैसे।

आ=ा, ई=ि, ऊ=ु, ए=ॄ, अ=॑, ए=॒
 ऐ=॑, औ=॑, ए=॑, ऐ=॑।

व्यञ्जन वा हल वर्ण ।

६। स्वर वर्णों की सहायता बिना जो वर्ण साफ-साफ उच्चारित नहीं हो (सक) ते, उन्हें व्यञ्जन वर्ण या हल वर्ण कहते हैं। पहले या पीछे स्वर वर्णको मिलाकर न पढ़नेसे व्यञ्जन वर्णका उच्चारण नहीं हो (सक) ता। प्राय सब ही व्यञ्जन वर्णों के पीछे ‘अकार’ लगा रहता है।

व्यञ्जन वर्ण ये हैं — क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । . * ।

ड, ढ, ण, ये तीनों मृथक् वर्ण नहीं है। ये केवल ड, ढ

इन्हीं तीन वर्णों के रूपान्तर हैं । ये वर्ण जब पदके बीचमें या अन्तमें रहते हैं तब ये ही उ, ङ, य, माने जाते हैं । जैसे—
ऊँ, ङूँ, नयन इत्यादि ।

जिस व्यञ्जन वर्णमें कोई स्वर नहीं रहता, उसके नीचे () ऐसा चिह्न देना पड़ता है, इस चिह्न या निशानका नाम 'हसन्त चिह्न' है* । जैसे—ग्याँइ इत्यादि ।

७ । क से म तक, पञ्चोस वर्णोंको स्पर्शवर्ण कहते हैं । स्पर्श वर्ण पाँच वर्गोंमें विभक्त हैं, आदि के या पहले वर्णको स्वेकार वर्गका नाम होता है । जैसे—क वर्ग, छ वर्ग, ट वर्ग, ठ वर्ग, ञ वर्ग ।

८ । य, र, ल, व, इन चारोंका नाम अन्त म्य वर्ण है,

* व्यञ्जन वर्णके बाद, स्वर वर्ण रहनेसे वह स्वर वर्ण व्यञ्जन वर्णमें मिल जाता है । जैसे—ऊँ = ऊ + ङ + न् + अ ।
दिन = द् + इ + न् + अ ।
वालिका = व् + आ + ल् + ई + क् + अ ।
छत्र = छ् + अ + न् + द् + र् + अ ।

हर एक पदमें दो या उससे अधिक वर्ण रहते हैं, इसी प्रकार वर्ण-विन्यास द्वारा यह साफ़ साफ़ मालूम हो जाता है कि, कौन वर्ण पहिले और कौन वर्ण पीछे है ।

= इसका नाम समान चिह्न है । + इसका नाम युक्त चिह्न है अर्थात् इसके द्वारा दो वर्णों का योग या जोड़ समझा जाता है ।

श, ष, ङ, झ, इन चारों का नाम उपवर्ण है, (,) और (°) का नाम अनुनासिक वर्ण है और (:) विसर्गका नाम अयोगवाह वर्ण है ।*

१८। उच्चारण स्थानके भेदोंसे वर्णोंके नामोंमें भी भेद होता है। जैसे—

अ आ इ क थ ग घ ङ इनका उच्चारण-स्थान कण्ठ है, इसलिये इन्हें कण्ठ्य वर्ण कहते हैं ।

इ ई उ ऋ ऌ ऋ ऌ ऋ ऌ ऋ ऌ इनका उच्चारण स्थान तालू है, इसलिये इन्हें तालव्य वर्ण कहते हैं । †

श ष ट ठ ड ढ ण र य ङ इनका उच्चारण स्थान मूर्धा है, इसलिये इन्हें मूर्धन्य वर्ण कहते हैं । ‡

ल त थ द ध न ण न इनका उच्चारण स्थान दन्त है, इसलिये इन्हें दन्त्यवर्ण कहते हैं ।

उ ऊ ए ऋ व ङ म इनका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है, इसीसे इन्हें ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं ।

* कोई-कोई अनुस्वार और विसर्ग इन दोनोंको ही अयोगवाह कहते हैं ।

† श, यह वर्ण पदके बीचमें या अन्तमें लगाया जाता है । जैसे, अशन, शयन, जय ।

‡ उ और ङ इन दोनों वर्णोंका प्रयोग भी पदके बीचमें या अन्तमें होता है । जैसे—अड़, अड़ठा, मूठ, मूठठा ।

अ, ऐ, इन दो वर्णों का उच्चारण स्थान कण्ठ और तालू है, इसलिये ये कण्ठ-तालुव्य वर्ण हैं ।

उ, ऊ इन दो वर्णों का उच्चारण-स्थान कण्ठ और ओष्ठ है, इसवास्ते ये कण्ठोष्ठ वर्ण हैं ।

अन्तःस्थ 'व' का उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है, इसलिये यह दन्तोष्ठ वर्ण है ।

अनुस्वार और चन्द्रविन्दु नाकसे उच्चारित होते हैं, इसलिये ये अनुनासिक वर्ण हैं ।

विसर्ग 'आय्य स्थान' भागी है, अर्थात् जब जिस स्वर वर्ण के बाद रहता है, तब उसी स्वर वर्ण का उच्चारण-स्थान विसर्ग का उच्चारण-स्थान होता है। विसर्ग का उच्चारण स्वर वर्ण के बिना, 'श्' के उच्चारण की तरह होता है। जैसे—
पूनः = पूनश् ।

विसर्ग जिस स्वर वर्ण के बाद होता है वह दीर्घ की तरह उच्चारित होता है। जैसे—प्रातःकाल ।

संयुक्त वर्ण ।



१० । यदि एक व्यञ्जन वर्ण के बाद एक या उससे ज़ियादा व्यञ्जन वर्ण हों और बीचमें स्वर वर्ण न हो, तो वे सब व्यञ्जन वर्ण एक साथ मिल जाते हैं। इस तरह मिलकर, व्यञ्जन वर्ण जो रूप धारण करते हैं उसको यत्नाक्षर कहते हैं ।

संयुक्त या मिले हुए वर्णों के पहिलेका वर्ण (पूर्व वर्ण) ऊपर और पोछेका वर्ण (परवर्ण) प्रायः नीचे लिखा जाता है। जैसे— $v + n = वन$, $m + n = मन$, $n + d + r = नदर$ ।

घोड़ेमे संयुक्त वर्णों का रूप बदल जाता है। ये भीचे दिखाये गये हैं। जैसे— $g + g = गग$, $kh + kh = खख$, $k + y = क्य$, $ch + ch = चच$, $m + m = मम$, $t + t = तत$, $k + t = क्त$, $v + v = वव$, $h + n = हन$, $n + th = नथ$, $h + m = हम$, $t + t = त्त$, $m + r = मर$, $g + r = गर$ इत्यादि ।

र किसी व्यञ्जन वर्ण के पहिले रहनेसे, वादके वर्ण के साथे पर जाकर () ऐसा आकार धारण करता है। इसका नाम रेफ है। रेफ युक्त कोई-कोई वर्ण का हित्व हो जाता है अर्थात् वे वर्ण दो जाते हैं। जैसे— $r + m = रम$ । और आर्ध, षष्ठी, निर्द्धर इत्यादि ।

'ह' हित्व होनेसे 'छ', 'थ' हित्व होनेसे 'थ', 'ध' हित्व होनेसे 'ध', और उ हित्व होनेसे 'उ', ऐसा रूप धारण करता है। ख, र और न युक्त होनेसे 'ण' आर और 'ग' कार का उच्चारण 'ह' कार के समान होता है, जैसे—आक, शक, ज्ञान इत्यादि। 'म' कारके साथ उ या थ युक्त होनेसे 'स' कार च कार की तरह उच्चारित होता है। जैसे—अथाव, अवस्थिति। जब 'ह' के नीचे कोई वर्ण लगता है तब वह 'ह' नीचेवाले वर्ण के बाद उच्चारित होता है, जैसे आत्माद = आन् + दा, मधाह = मधान् + ह, मश = मश् + ह इत्यादि

जब 'य' किसी वर्ण में संयुक्त होता है, तो उसका उच्चारण 'इय' और अन्त, स्य 'व' किसी वर्ण में युक्त होनेसे उच्चारण 'उय' ऐसा होता है, जैसे—दिया = दिव् + इय, विव = विव् + उय इत्यादि ।

सन्धि प्रकरणा ।

११। दो वर्ण पास होनेसे आपसमें एक दूसरेसे मिल जाते हैं, उस मिलनको सन्धि कहते हैं ।

१२। सन्धि दो प्रकार की है,—स्वर-सन्धि और व्यञ्जन-सन्धि ।

१३। एक स्वर वर्णके साथ दूसरे स्वर वर्णके मिलनको स्वर-सन्धि कहते हैं ।

१४। व्यञ्जन वर्णके साथ व्यञ्जन वर्ण या व्यञ्जन वर्णके साथ स्वर वर्णके मिलनको व्यञ्जन सन्धि कहते हैं ।

स्वर-सन्धि ।



१५। अ के बाद अ आ रहनेसे, और दोनोंके मिलनेसे आ होता है और वह आ पूर्व वर्णमें मिल जाता है । जैसे शीठ + अ. अ = शीठा. अ । यहाँपर शीठ शब्द के अन्तमें अ है और पीछे अ. अ शब्दका अ है, इसलिये उन दोनोंके मिलनसे आकार हुआ और वह आकार तकार में मिलकर "शीतांश"

पद हुआ । इसी तरह पाठ + अथव = पौठाथर, कूश + आग
= कूशागन ।

१६ । आ के बाद य अथवा या रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे या होता है, और वह आ पूर्व वर्ण में मिल जाता है । जैसे—विद्या + अभाग = विद्याभाग । यहाँपर विद्या शब्द के अन्तमें आ है और उस आ के बाद अभ्यास शब्दका अ है, इसलिये आ में अ मिलकर आ हुआ और वह आ पूर्व वर्ण 'द्य' में मिलकर "विद्याभ्यास" पद हुआ । इसी तरह तारा + आतार = ताराकार, मश + आशय = मशाय इत्यादि ।

१७ । ऐ के बाद ऐ या ऐ रहने से, और दोनोंके मिलनेसे ऐ होती है, वह ऐ पूर्व वर्ण में मिल जाती है । जैसे—अति + ऐत = अतीत । यहाँ पर अति के इकार के बाद इत शब्द का इकार है, इसलिये दोनों इकारों के मिलनेसे इकार हुआ और वही इकार पूर्व वर्ण तकार में मिलकर 'अतीत' पद हुआ । इसी तरह गिरि + ऐश = गिरीश, गिरि + ऐश = गिरीश इत्यादि ।

१८ । ऐ के बाद ऐ या ऐ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐ होती है, वह ऐ पूर्व वर्ण में मिल जाती है । जैसे—अती + ऐव = अतीव । यहाँपर इकार के बाद इ है, इसलिये दोनों के मिलनेसे इकार हुआ और वही इकार पूर्व वर्ण तकार में मिल गया, जिससे अती + इव = अतीव के हुआ, इसी तरह पृथी + ऐश = पृथीश, काली + ऐश = कालीश इत्यादि ।

१८। उ के बाद उ या ऐ रहनेसे और दोनों के मिलनेसे उ होता है, यह उ पूर्व वर्ण में मिल जाता है। जैसे = विधु + उमय = विधुमय। इसी तरह गावू + उलि = गावूलि। तनु + उर्क = तनुर्क। विधु + उमय = विधुमय। यहाँपर विधु शब्दके झखके बाद उदयका उ है, इसलिये झख उके बाद झख उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ। अब इसी दीर्घऊके पूर्ववर्ण ध में मिलनेसे विधुदयपद बन गया। गावूलि—गावू + उलि = गावूलि। यहाँ पर साधु इस शब्दके झख उकारके बाद उक्ति शब्दका झख उ है, इसीसे झख उकारके बाद झख उ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घ ऊ हुआ और वह ऊ पूर्व वर्ण ध कारमें मिलकर, “साधूक्ति” पद बना। तूर्क—तनु + उर्क = तनुर्क। यहाँ पर तनु शब्दके झख उकारके बाद ऊर्क शब्दका दीर्घ ऊ है, इसलिये झख उकारके बाद दीर्घ ऊ रहनेके कारण और दोनोंके मिलनेसे दीर्घऊ हुआ और वह दीर्घ ऊ पूर्ववर्ण न में मिलकर “तनुर्क” पद बना।

२०। उ के बाद उ या ऐ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे उ होता है, और उ पूर्ववर्ण में मिल जाता है। जैसे—तनु + उषेग = तनुषेग। यहाँ पर तनुके ऊके बाद उषेग का उ रहनेसे और दोनोंके मिल जानेसे ऊ होगया और पूर्ववर्ण न में युक्त हुआ। इसी तरह लू + उर्क = लूर्क इत्यादि।

२१। अ या, के बाद ऐ या औ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए होजाता है; और ए पूर्ववर्ण में मिल जाता है। जैसे,—नग + ऐश्र

नभश्च, मठ + डेड = मटड्ड रगा + शैश = रगेश, धन + श्रेयत
 धनेश्वर, उमा + श्रेय = उमेश । नग + इन्द्र = नगेन्द्र, —यहाँ
 नग शब्दके अ के बाद इन्द्रकी इ है, इसलिये अ के बाद
 रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ और वङ् ए पूर्ववर्णमें
 मिलकर नगेन्द्र पद बना है । धन + ईश्वर = धनेश्वर, —यहाँ
 अ के बाद ई रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है ।
 मा + ईश = रमेश, यहाँ पर आ के बाद दीर्घ ई रहनेसे
 और दोनोंके मिलनेसे ए हुआ है ।

२२ । अ या या के बाद उ या उ रहनेसे और दोनोंके
 मिलनेसे ओ होता है, और वङ् ओ पूर्ववर्णमें मिल जाता
 है । जैसे—नृया + उदय = नृयाय, नल + उदय = नलोदय,
 उरप्र + उन्धि = उरप्रन्धि, मश + उदधि = मशोदधि । प्रा + उन्धि
 प्रोन्धि । सूर्य + उदय + सूर्योदय, —यहाँ पर अकारके बाद
 उ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ और
 ओकार पूर्ववर्णमें मिलकर सूर्योदय पद बना । महा + उदधि =
 महोदधि ; —यहाँपर आकारके बाद उकार रहनेसे और दोनोंके
 मिलनेसे ओकार हुआ है । इसी तरह नलोदय, तरङ्गोन्धि,
 गङ्गोन्धि है ।

२३ । अ या या के बाद श रहनेसे और दोनोंके मिल
 नेसे अर् होता है । अर् का अ पूर्ववर्णमें मिल जाता है और
 र् पर वर्णके साथपर चला जाता है । अर्थात् रेफ् हो जाता है ।
 जैसे—देव + शशि = देवशि, उठम + शनि = उठमनि, अक्षम +

अग्नि = अ (अग्नि), मश + अग्नि = मशयि । देव + ऋषि = देवयि, —
 यहाँ पर अकारके बाद ऋ रहनेसे और दोनोके मिलनेसे अर्
 हुआ, अकार पूर्ववर्णमें मिल गया और र् के पर वर्ण ष के
 साथेपर चले जानेसे “देवयि” पद बना । मघा + ऋषि = मघयि,
 यहाँ पर आकारके बाद ऋ रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे अर्
 हुआ है । आकार पूर्ववर्णमें मिल गया और र पर वर्णके साथेपर
 चला गया है । इसी तरह उत्तमयि, अधमयि भी बने हैं ।

२४ । तृतीया तत्पुण्य समासमें अ या आ के बाद
 अठ शब्द रहनेसे पूर्ववर्णों अ या आ के साथ मिलकर अठ
 शब्द का आर् होजाता है आर् का आ पूर्ववर्णमें मिल जाता है
 और र् पर वर्णके मस्तक पर चला जाता है अर्थात् रेफ
 हो जाता है । जैसे,—शोक + आठ = शोकाठ, ज्यो +
 अति = ज्योठ । *शोक + ऋति = शोकार्ति—यहाँ पर शोक
 शब्दके अ के बाद ऋति शब्दका ऋकार रहनेसे और दोनोंके
 मिलनेसे अर् हुआ, आ पूर्ववर्णक में मिल गया और र पर
 वर्ण तकारमें जाकर “शोकार्ति” पद बना ।

२५ । अ या आ के बाद ए या ऐ रहनेसे और दोनोंके
 मिलनेसे ऐ होता है । ऐकार पूर्ववर्णमें मिल जाता है जैसे—
 अठ + एक = अठैक, रात + एक = रातैक, दिन + एक = दिनैक,
 जन + एक = जनैक, एक + एक = एकैक, मत + ऐक्य =

* रेफ युक्त व्यञ्जन वर्णका विकल्पमें द्वित्व होता है, जैसे
 पूर्वक, पूर्वक, निर्दय, निर्दय इत्यादि ।

मठेव्य, विपुल + ऐश्वर्य = विपुलेश्वर्य मश + ऐरावत = महेरा
 वट, गश + ऐश्वर्य = महेश्वर्य अतुल + ऐश्वर्य = अतुलेश्वर्य ।
 वार + एक = वारैक, — यहाँ पर वार शब्दके अकारके बाद
 एक शब्दका एकार रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ
 और ऐकार पूर्व वर्ण रकारमें मिलकर “वारैक” पद बना ।
 अतुल + ऐश्वर्य = अतुलेश्वर्य, — यहाँ पर अकारके बाद ऐकार
 रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ है । महा + ऐरावत
 = महैरावत, — यहाँ पर अकारके बाद ऐकार रहनेसे और
 दोनोंके मिलनेसे ऐकार हुआ है । इसी तरह दिनैक, जनैक,
 एकैक, महैष्य, विपुलेश्वर्य, महैश्वर्य है ।

२६ । अ या या के बाद उ या ऐ रहनेसे और दोनोंके
 मिलनेसे ऐ हो जाता है । वही ऐ पूर्व वर्णमें मिल
 जाता है । जैसे—जल + ओका = जलोका, गज + ओव =
 गजोव, नव + ऐषधि = नवोषधि, मश + ऐषधि = मशोषधि, गत +
 ऐशुक्य = गतोशुक्य इत्यादि । जल + ओका = जलोका, —
 यहाँ पर जल शब्दके अकारके बाद ओका शब्दका ओकार
 रहनेसे और दोनोंके मिलनेसे ओकार हुआ और वही
 ओकार पूर्व वर्ण लकारमें मिलकर “जलोका” पद बना गया ।
 इसी तरह, पदोष नवोषधि इत्यादि भी बने हैं ।

२७ । ऐ और ऐ के अनाश और कीड़े स्वरवर्ण ऐ या ऐ के
 बादमें रहनेसे ऐ वा ऐ के स्थानमें य् हो जाता है वही य् पूर्व वर्णमें
 मिल जाता है और बादका स्वर उसी यकारमें मिल

जैसे—यदि + अपि = यद्यपि, यत्ति + आशत्र = अत्राशत्र, प्रति + आशा = अत्राशा, प्रति + आदेश = अत्रादेश, नमी + उथित = नमूथित, काली + आगात्र = कालागात्र इत्यादि । यदि + अपि = यद्यपि, —यहाँ पर यदि शब्दके इकारके बाद अपि शब्दका अकार है, इसीमे इ और ई के सिवाय और कोई स्वर वर्ण वादमें रहनेसे इकारके स्थानमें य हुआ और वही य परवर्ती स्वरवर्ण अपि के अकार और पूर्ववर्ण इकारमें स युक्त होकर “यद्यपि” पद बना । इसी तरह अत्याहार प्रत्याशा इत्यादि भी बने हैं ।

२८ । उ और ऊ के सिवाय और कोई स्वरवर्ण वादमें रहने में उ वा ऊ के स्थानमें व होता है, वह व पूर्ववर्णमें मिल जाता है और परवर्ती स्वर भी पूर्व वर्णमें मिल जाता है । जैसे—इ + आगत = वागत, माधु + श्रेष्ठा = माध्वीष्ठा, उग्रु + आच्छादन = उग्रच्छादन, षक् + आदि = षकादि इत्यादि । सु + आगत = स्वागत —यहाँ पर सु शब्दके उकारके बाद आगत शब्दका अकार है, इसीसे उ ज के सिवाय अन्य स्वरवर्ण वादमें रहनेसे उकारके स्थानमें व हुआ । व और परवर्ती स्वर वर्ण आगतके अकारके पूर्व वर्ण सकारमें मिल जानेसे “स्वागत” पद बना । इसी तरह साध्वीच्छा और तस्वाच्छादन बने हैं ।

२९ । अ के सिवाय और कोई स्वर वर्ण वादमें रहनेसे अके न अ होता है, वह अ पूर्व वर्णमें मिल जाता है और

३३ । ङ या छ परे रहनेसे पूर्ववर्ती ९ या न् के स्थानमें ङ होता है । जैसे—शव९ + च्छ = शवच्छ, उ९ + ङारण = उङ्गारण, उ९ + छेन = उङ्गेन, उङ् + चवण = उङ्गवण, उङ् + छात्र = उङ्गात्र ।

३४ । ञ अथवा ञ परे रहने से पूर्ववर्ती ९ या न् के स्थानमें ञ होता है । जैसे—उ९ + ञग = उङ्गग, उ९ + ञटिका = उङ्गटिका ।

३५ । ट या ठ परे रहनेसे पूर्ववर्ती ९ और न् के स्थानमें ट होता है । जैसे—उ९ + टला = उङ्गला, उङ् + ठवाव = उङ्ग-ठवाव ।

३६ । ड या ढ परे रहनेसे पूर्ववर्ती ९ या न् के स्थानमें ड होता है । जैसे—उ९ + डीन = उङ्गीन, उङ् + ढका = उङ्गढका, उङ् + ढका = उङ्गढका ।

३७ । यदि ङ या छ के बाद न रहे तो न के स्थानमें ङा होता है । जैसे—याच् + ना = याच्णा, राज + नी = राज्नी ।

३८ । यदि ङ पर ही तो पूर्ववर्ती ९, न् और ङ के स्थानमें ङ होता है, और न के पूर्ववर्षमें चन्द्रविन्दु लग

३९ । जैसे—उ९ + नाग = उङ्गाग, उव९ + नेथा = उव-
 + नेथ = उवेथ, उ९ + लहान = उङ्गलहान, उङ् +
 + नी = उङ्गनी, विधान + नेथ =

कारणें मिलकर 'पवन' बना, इसी तरह 'भवन' 'गवन' भी बने हैं । नौ + इक = नाविक, — यहाँ पर श्रीकारके बाद स्वर वर्ण रहनेके कारण श्रीकारके स्थानमें आव हुआ और आव का आकार पूर्व वर्ण नकारमें मिलकर "नाविक" बना ।

व्यञ्जन-सन्धि ।

३१ । स्वर वर्ण या वर्गका तीसरा चौथा वर्ण अथवा य, व, ल, न, ह, पर रहनेसे वर्गके पहले वर्ण के स्थान में छस षग का तीसरा वर्ण हो जाता है । जैसे—वाक् + आडश्वर = वागाडश्वर, वाक् + इन्द्रिय = वागिन्द्रिय, दिक् + अरु = दिगरु, इक् + इन्द्रिय = इगिन्द्रिय, दिक् + गज = दिग्गज, वाक् + जाल = वाग्जाल, वाक् + दान = वाग्दान वाक् + देवी = वाग्देवी, दिक् + विदिक = दिग्विदिक, षट् + दल = षडदल, उ९ + घाटन उदयाटन, न९ + विद्या = नविद्या, जग९ + बह्नु = जगबह्नु, अप + ज = अज इत्यादि ।

३२ । पञ्चम वर्ण पर रहनेसे वर्गके पहिले वर्ण के स्थानमें पञ्चम वर्ण होता है, और अगरे द के बाद न या न रहै ती छस म के स्थानमें न हो जाता है । जैसे—दिक् + नाग = दिडनाग, दिक् + मुख = दिड्मुख, अप् + मय = अमय, खद + मुख = खमूख, उ९ + नयन = उमया, तद् + नीर = तमीर ।

३३। ट या छ परे रहनेसे पूर्ववर्ती ९ या न् के स्थानमें ट होता है। जैसे—शरत् + ट्प्र = शरत्प्र, उ९ + टान्ग = उ९त्तान्ग, उ९ + छ्प्र = उ९च्छ्प्र, उ९ + ट्रग्न = उ९त्त्रग्न, उ९ + छ्प्र = उ९च्छ्प्र ।

३४। झ अथवा ञ परे रहने से पूर्ववर्ती ९ या न् के स्थानमें झ होता है। जैसे—उ९ + झल = उ९झल, उ९ + झटिका = उ९झटिका ।

३५। ट या ठ परे रहनेमें पूर्ववर्ती ९ और न् के स्थानमें ट होता है। जैसे—उ९ + टला = उ९टला, उ९ + ठकार = उ९ठकार ।

३६। ड या ढ परे रहनेसे पूर्ववर्ती ९ या न् के स्थानमें ड होता है। जैसे—उ९ + डीन = उ९डीन, उ९ + ढका = उ९ढका, उ९ + ढका = उ९ढका ।

३७। यदि ट या छ के बाद न रहने तो न के स्थानमें ट होता है। जैसे—यात् + न = यात्प्र, राख + नो = राखी ।

३८। यदि ल पर ही ती पूर्ववर्ती ९, न् और न् के स्थानमें ल होता है और न के पूर्ववर्णमें चन्द्रविन्दु लग जाता है। जैसे—उ९ + लस = उ९लस, उ९ + लेशा = उ९लेशा, उ९ + लेश = उ९लेश, उ९ + लक्ष्मण = उ९लक्ष्मण, उ९ + लोड = उ९लोड, ए९ + लीन = ए९लीन, लिधान् + लेशक = लिधान्लेशक ।

३९। यदि ९ या न् के बाद न रहने तो ९ और न के

स्थानमें ट् और श् के स्थानमें छ होता है। जैसे—उव९ + श् + थ = उवच्छ् + थ, उ९ + श् + थ = उच्छ् + थ, उ९ + श् + रण = उच्छ्रण, उ९ + श् + रुक = उच्छ्रुक ।

४०। ९ या द के बाद श् रहनेमें और दोनोके मिलनेमें क होता है। जैसे—उ९ + श् + र = उकार, उ९ + श् + त = उकत, उ९ + श् + रिण = उकरिण ।

४१। व के बाद ९ या थ रहनेसे ९ के स्थानमें ट् और थ के स्थानमें ठ होता है। जैसे—आ९ + थ = आठ्, ग९ + थ = गठ् ।

४२। स्पर्श वर्ण परे रहनेसे पदके अन्तस्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता है अथवा जिध वर्णका वर्ण परे रहता है म् के स्थानमें उमी वर्णका पञ्चम वर्ण होता है। और अन्त स्थ और जप्पवर्ण परे रहनेसे म के स्थानमें केवल अनुस्वार होता है। जैसे—म + र्ण = मर्ण या मर्ण, कि + क्त = किक्त या किक्त, म + गति = मगति या म गति, कि + चित = किकि९ या किकि९, म + पूजा = मपूजा या मपूजा, म + भूति = मभूति या मभूति, म + यम् = मयम्, म + योग = मयोग, म + रक्षण = मरक्षण, म + लग्न = मलग्न, म + वाद = मवाद, म + शय = मशय, म + रुद = मरुद ।

४३। व्यञ्जन वर्ण परे रहनेसे दिव् शब्द के स्थानमें द्वा होता है। जैसे—दिव् + वाव = द्वावाव, दिव् + भवन = द्वाभवन ।

४४ । स्वर वर्णके बाद ह रचनेसे ह के स्थानमें छ होता है । जैसे—पवि + छेद = परिच्छेद, अर + छेद = अरच्छेद, म + छिद्र = मच्छिद्र, वृत् + छाया = वृत्छाया, गृह + छाया = गृहछाया ।

४५ । उ९ शब्दके बाद श और लु लु धातुके "ज" का लोप होता है । जैसे—उ९ + शान = उथा, उ९ + लुलु = उटलु ।

४६ । म् और पवि के बाद कृ धातुका पद रचनेसे वृ धातु निष्पन्न पदके पूर्व क्रमग म् और य् होता है अर्थात् सम्के बाद स और परि के बाद घ होता है । जैसे—मम् + करण = म्करण, मम् + कृत = म्कृत, मम् + काव = म्काव, परि + काव = परिवाव ।

४७ । ङ या ह पादमें रचनेसे विभर्ग के स्थान में श होता है । जैसे—गम + ङकार = गमश्कार, नि + ङ = निश्चय, शिव. + छेद = शिवश्छेद, उर + हृ = उरश्छृ ।

४८ । ट या ठ पर रचनेसे विभर्ग के स्थानमें य् होता है । जैसे—वसू + टकार = वसूयकार ।

४९ । उ या थ पर रचनेसे विभर्ग के स्थानमें ग होता है । जैसे—नि + ङञ = निङञ, दू + उर = दूउर, इत् + उत् = इत्तुत् ।

५० । अकार वर्णके तीसरे, चौथे, पाँचवें अर्थ अथवा य, र, ल, व, श, के पर रचनेसे अकार और अकारके बाद क विभर्ग इन दोनोंके मिलनेसे "०" होता है । वृ पूर्व अकार वर्ण

मिल जाता है और परे अकार रहनेसे उममा लोपे होता है । जैसे—उ३ + अधिक = उ३अधिक, मनः + गत = मनोगत, अधः + गान = अधोगान, मद्यः + जात = मद्योजातः, पयः + निधि = पयोनिधि, वशः + वन = वशोवन, मनः + योग = मनोयोग, मनः + वेग = मनोवेग, इत्यादि ।

५१ । स्वरवर्ण, वर्गके तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य व ल व ह के परे रहनेसे अकार के वादके व जात विसर्ग के स्थानमें व् होता है । यदि स्वर वर्ण या ग, घ, ङ, झ, ञ, ए३, उ, ङ, न, द, ध, न, व, ड, ण और य व ल व ह के परे रहता है तो अकारके वादके र जात विसर्गके स्थानमें र होता है । पूर्व लक्षण के अनुसार ओकार नहीं होता । जैसे—अरः + अह = अहवह, प्राटः + आश = प्रा३वाश, पुनः + द्रव्य = पुन३द्रव्य अयु. + आद्या = अयु वाद्या, अयुः + देश = अयु-देश, पुन. + उक्ति = पू३वाक्ति ।

५२ । स्वरवर्ण, वर्गका तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण या य व ल व ह परे रहने से अ या भिन्न स्वरवर्णके वाद के विसर्ग को जगह व् होता है । जैसे—नि. + डय = निर्डय, वहिः + गत = वहिगत, दू. + आद्या = दू३वाद्या, द्वि + उक्ति = द्वि३वक्ति, दू. + लड = दू३लड ।

५३ । न परे रहने से विसर्ग के स्थान में जो र् होता है, उच्च र् ना लोप होता है और पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है ।

जैसे—नि. + वोग = नीवोग, नि. + वन. = नीवन, नि. + रव = नीरव, च्चू. + राग = च्चूराग ।

५४। इ परे रहने से, पूर्ववर्ती विसर्गका विकल्प में लोप होता है। जैसे—मनः + इ = मन्इ या मन.इ, छ् + इ = छइ, इत्यादि ।

५५। समास में क थ प फ परे रहनेसे विसर्ग के स्थान में विकल्प से ग होता है, और वही ग अगरे अ या भिन्न स्वरवर्ण के बाद का होता है तो व् हो जाता है। जैसे—नि + कर्मा = निकर्मा या नि.कर्मा, भाः + कर = भाकर, भा.कर, छः + कर = छकर, छ.कर, तेज् + वर = तेजवर, तेज वर, भा. + पति = भापति, भा पति, नि. + फन = निफन, नि फन ।

५६। अकार भिन्न स्वरवर्ण परे रहनेसे अकार के बाद के विसर्गका लोप होता है। लोप के बाद फिर सन्धि नहीं होती। जैसे—अत + एव = अतएव, पय + ङघ = पयङघ ।

५७। बँगला भाषामें पदके अन्तस्थित विसर्गका विकल्पमें लोप होता है। यथा—बलउ, फनउ, विशेषउ., विशेष उउ, वस्तुउ., वस्तुउ, मन, मन ।

शास्त्रविधान ।

“ण” के लगानेकी स्थान ।

५८। ण, र्, य के बादका दन्त्य न मूर्धन्य होता है। जैसे—नण, दर्ण, कृण, निर्दोर्ण निरु, उक्क मरिक्कू ।

५८ । ञ, त्र, य के बाद स्वरवर्ण, कवर्ग, पवर्ग, श य व या अनुस्वार व्यवधान रहने पर भी दन्त्य न मूर्द्धन्य होता है । जैसे—कारण, मर्षा, भाषाण, निर्दोष, वसिणी, वृ-हण, विभ्रण ।

६० । उल्लिखित वर्णोंके सिवा और कोई वर्ण व्यवधान में नहीं होता । जैसे—जर्जना, कीर्तन, वगा ।

६१ । पदके अन्तमें या दूसरे पदमें न रहनेसे वह मूर्द्धन्य नहीं होता जैसे—दूतगणेश, दूतग, दूतय ।

६२ । क्रियाके अखोरका दन्त्य न मूर्द्धन्य नहीं होता । जैसे—कवेन धरन, गात्रन ।

६३ । उ, थ, द, ध, सयुक्त न “ण” नहीं होता । जैसे—प्राण, लाण, वक्र ।

छोटेसे स्वाभाविक मूर्द्धन्य १ विशिष्ट पद है । जैसे—वाणि, गणि, वेणी, उण, कङ्का, गा, विपणि, पण, आपण, वीणा, श्या, विपुण, लवण, कणिका वा मत्तुणा, शोण, कोण, कलाण, कणा, अू काठ, धू, वणिक इत्यादि ।

६४ । अ आ भिन्न स्वरवर्ण अथवा व और व इन वर्णोंके किसी भी परिस्थित पदके बीचका दन्त्य न मूर्द्धन्य होता है । विभर्ग व्यवधान रहने पर भी वह होता है । लेकिन गां प्रत्ययका न मूर्द्धन्य नहीं होता । जैसे—गुर्गु, वश्यामान, जिगीर्षी, टिकीर्षी, पनिकाव, निषेध, अधिष्ठान, आविष्टान इत्यादि ।

कुछ शब्दोंका न स्वाभाविक ही मूर्द्ध-

भाषा, शीषण, कर्मण्य, आवाठ, फलनाय, तयाय, कर्ते, कृन्गाव
इत्यादि ।

पद ।

सारे पद पाँच भागोंमें बाँटे गये हैं । यथा, (१) विशेष्य
(२) विशेषण, (३) सर्वनाम, (४) अव्यय (५) क्रिया ।

विशेष्य ।

कोई चीज, व्यक्ति, जाति, गुण और क्रिया वाचक शब्दको
विशेष्य कहते हैं । जैसे,—बद्ध, रूखिवा, राग, यद्, गाय,
मसूवा, भद्रज शब्द, गान, भोग्य इत्यादि ।

विशेष्य पदमें लिङ्ग, वचन, पुरुष और तावक होते हैं । इनके
जाननेसे वाक्यार्थ जाननेमें सुभीता होता है ।

लिङ्ग ।

लिङ्गके द्वारा पुरुष, स्त्री आदि जातिके ज्ञान होता है,
उसे लिङ्ग कहते हैं ।

लिङ्ग तीन प्रकारके होते हैं । पु लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और
ल्लोवलिङ्ग ।

बंगला भाषामें ल्लोवलिङ्ग का कोई विशेष रूप नहीं

होता । फल, जल, भरख्य प्रभृति स्त्रीलिङ्ग शब्दोंका रूप पुलिङ्ग जैसा होता है ।

जिन शब्दोंसे पुरुष जातिका ज्ञान होता है, वे पुलिङ्ग कहे जाते हैं । जैसे,—मधुषा, बानर, शिंश अथ इत्यादि ।

जिन शब्दोंसे स्त्री जातिका बोध होता है उहे स्त्रीलिङ्ग कहते हैं । जैसे,—श्री, कथा, श्विनी, नात्रो, महिषो, शक्तिनी, घोटेको, वृद्धी इत्यादि ।

विद्युत, रात्रि, लता, बुद्धि, पृथिवी, नदी, लज्जा, शोभा, एव ज्योत्स्ना, रनके अर्थमें जिन शब्दोंका प्रयोग होता है वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे—सौदामिनो, बसुमती, यामिनो, इत्यादि ।

याद रखना चाहिये कि विश्वा, तुम्हा, मजा, वीणा कठि, नाडो वनिठा, तारा, श्रेणी, शोभा, धुनि, नदी, नीति, मन्त्रि, वेणी, सौदामिनो, लता, लच्छा, कथा, नौका, नामिका, श्रीवा विभा, भाषा हरिप्रा, जिह्वा, पुनरिणी इत्यादि थोड़ेसे शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग होते हैं ।

सामान्य स्त्रीलिंग प्रत्यय ।

(क) जिन शब्दोंके अन्तमें “अ” (अकार) होता है, स्त्रीलिङ्ग में “आ” के स्थानमें “या” (आकार) हो जाता है । जैसे,—श्रीण, श्रीणा, मर्दा, मर्दा; मरल, मरला, छर्वल,

हर्ष ॥, श्राग, शमा, मनोहर मनोहरा, शोभित, कोकिला, रुका, रुका गोर्ष, गोर्षा इत्यादि ।

(ख) जिन शब्दोंके अन्तमें “य” होता है, स्त्रीलिङ्गमें “श्र” के स्थानमें “श्रे” हो जाती है । जैसे,—
प्राण प्राणी, वृष, वृषी, राजन्, राजनी, अश्व, अश्वी, घोष घोषी, मारस मारणी, पिशाच पिशाचा, मानव, मानवी, हस, हसी, मासुव, मासुवी, दूरव, दूरवी, सर्प, सर्पी, काष्ठ, काष्ठी, ब्रह्म, ब्रह्मणी, सिंघ, सिंही इत्यादि ।

(ग) जिन शब्दोंके अन्तमें मय, नृष, चर और कव शब्द होते हैं, उाका स्त्रीलिङ्ग माय ईकारान्त होता है याने अन्तमें “ये” लगा दी जाती है । जैसे—प्रथमाय, प्रथमायी, दुग्ध, दुग्धी, यादृश, यादृशी, अत्रादृश, अत्रादृशी, श्वेत्त, श्वेत्तरी, सुषकर, सुषकरी, जलचर, जलचरी, शुभकर, शुभकरी, अर्णय, अर्णयी, कितकर, कितकरी, किकट, किकटरी, महचर महचरी इत्यादि ।

(घ) जिन शब्दोंके अन्तमें “इन” होता है, उन्के स्त्रीलिङ्गके रूपमें उन्के अन्तमें “श्रे” हो जाती है । जैसे—
दाशिन, दाशिनी, विशाचिन, विशाचिनी, मानिन, मानिनी, जानि, जानिनी इत्यादि ।

(ङ) जिन शब्दोंके अन्तमें ‘वा’ होता है, उन्के स्त्रीलिङ्गमें “वान” के स्थानमें “वती” हो जाती है । जैसे,—
उपवान, उपवती, कपवान, कपवती इत्यादि ।

(च) जिन शब्दोंके अन्तमें “अक” होता है उनके स्त्री-
लिङ्गमें “अक” के स्थानमें “इका” हो जाता है। जैसे,—
पाठक, पाठिका, नायक, नायिका, दायाका, दायािका, बालक,
बालिका, गायक, गायिका इत्यादि।

(छ) अङ्गवाचक शब्द, स्त्रीलिङ्गके विशेषणमें, प्राय “अं”-
कारान्त हो जाते हैं। जैसे,—शूकेश, शूकेशी, शूक, शूकी
इत्यादि।

(ज) प्रथम, द्वितीय और तृतीय शब्दोंके सिवा और सब
पूरणवाचक शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें “अं” होती है, किन्तु
प्रथम, द्वितीय, और तृतीय के बाद “आ” होता है। जैसे,—
चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी इत्यादि और
प्रथमा, द्वितीया, तृतीया।

(झ) गुणवाचक “उ” कारान्त शब्दोंके बाद स्त्रीलिङ्गमें
विकल्पसे “अं” होती है और पहले “उ” के स्थानमें “व” होता
है। जैसे,—उब, उबी, लघु, लघी, शूद्र, शूद्री इत्यादि।

(ञ) जिन शब्दोंके अन्तमें “अयम्” प्रत्यय होता है उनके
स्त्रीलिङ्गके रूपमें, अन्तमें “अं” हो जाती है। जैसे,—लक्ष्मीयम्,
लक्ष्मीयमी, गरीयम्, गरीयमी, डूयम्, डूयमी, प्रेयम्, प्रेयमी
इत्यादि।

(ट) जिन शब्दोंके अन्तमें “अत्” होता है उनके स्त्री-
लिङ्गमें प्राय षोडशे “अं” हो जाती है। जैसे—गहत्, गहती,
गत्, गती, उगवत्, उगवती इत्यादि।

(ठ) जिन शब्दोंके अन्तमें “म” और “व” होते हैं उनके स्त्रीलिङ्गके रूपोंमें अन्तमें “त्रे” हो जातो है। जैसे,—

शब्द	पु लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
त्रीम	त्रीमा	त्रीमती
दयाव	दयावान्	दयावती
खानव	खानवान्	खानवती

(ड) 'जिन शब्दोंके अन्तमें “त” और “ति” प्रत्यय होते हैं, वे शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे,—गति, मति, भक्ति, लघुता, भद्रता इत्यादि।

(ढ) मातृ, दृष्टि, अरु मनदी, यादृ आदि कुछ शब्दोंको छोड़कर जिन शब्दोंके अन्तमें “ध” होती है उनके स्त्रीलिङ्गके रूपोंमें, शब्दके अन्तमें “त्रे” हो जातो है और “ध” के स्थानमें “व” होजाता है। जैसे,—

शब्द	पु लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
मातृ	माता	माती
विधातृ	विधाता	विधाती
कर्तृ	कर्ता	कर्ती

लेकिन मातृ का माता और दृष्टि का दृष्टिता इत्यादि होता है।

(ण) काल, गौर, तरुण, पुत्र प्रभृति शब्दोंके स्त्रीलिङ्गमें दीर्घ “त्रे” होजातो है। जैसे,—

काल, काली, गौर, गौरी, तरुण, तरुणी, कुमार, कुमारी, पुत्र, पुत्री, नगर, नगरी, नगर, नगरी, सुन्दर, सुन्दरी

छु, छुओ, पिठांगह, पिठामठी, नरुव, नरुवी, नटे, नटी, नर, नरो, मटे मटी, किनोर, दि शारो, नाग नगा ।

(ग) कुछ शब्दोंके रूप स्त्रीलिङ्ग और पु लिङ्गमें एकसे जाते हैं । जैसे—नत्राटे, वित्राटे, कवि इत्यादि ।

(घ) कुछ शब्द स्त्री जातिज्ञा बोध न कराने पर भी सदा स्त्रीजातिके रूपमें गिने जाते हैं । जैसे—आगलकी, श्रोतकी, वररो, वाशी, काको, कावेरो, कदना, मथुवा इत्यादि ।

(ङ) कुछ उच्च "उ" कारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द विकल्पमें "ऐ" कारान्त हो जाते हैं । जैसे,—रञ्जनि रञ्जनी, वात्रि वात्री, श्रेणि, श्रेणी, भूमि, भूमी, मूठि, मूठी, इत्यादि ।

(च) अनक प्रभृति कुछ शब्दोंके स्त्री लिङ्गके रूपमें भेद होता है । जैसे—

अनक अनकी पिठा पाठा, वव, कच्छा, झाडा, भगिनी, नर, नारी, पुकथ, झा, हिम हिमानी, मागा, मानी । बुडा बुडी, ठावुर, ठावुरी ॥ चडान, चडालिनी, शुरु, गारो इत्यादि ।

(न) कुछ पु लिङ्ग शब्दोंके स्त्रीलिङ्गके रूप नीचे और दिखाये जाते हैं । जैसे,—

पु लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पु लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
राजा	राजनी	विधान	विधायी
बट	कटनी	मातुल	मातुलानी

* मातुल, शब्दके स्त्रीलिङ्ग में तीन रूप होते हैं —
मातुलानी, मातुली, मातुला ।

पु क्लिङ्	स्त्रीलिङ्ग	पु लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
इत्	इत्ताणी	त्तका	त्तकाणी
युवा	युवती	भव	भवानी
ववण	ववणानी	पापीयान्	पापीयानी
वैश्व	वैश्वी	दास	दासी
शुभ्र	शुभ्री	पोत्र	पोत्री
मोहित	मोहिती	गुडा	गुडी

वचन ।



जिसके द्वारा वस्तुकी सम्या जानी जानी है, उसे "वचन" कहते हैं ।

वचन दो प्रकारके होते हैं —

(१) एकवचन ।

(२) बहुवचन ।

एक वचन के विभक्ति-युक्त पदके द्वारा केवल एक पदार्थ जाना जाता है । जैसे, बालक ।

बहुवचन के विभक्ति पदके द्वारा, एक भिन्न, अनेक वस्तुओं का ज्ञान होता है । जैसे, बालकेंद्रा ।

"बालक" कहनेसे केवल एक बालक और 'बालकेंद्रा' कहनेसे अधिक बालक समझे जाते हैं ।

बहुवचन में शब्दके पीछे ता, एता, विग, गण, गुण, गुणि

इत्यादि शब्द लगाये जाते हैं। जैसे—नशूशेरा, लोखुला, पूछकुनी ।*

पुरुष ।

कारकके आशय को ही पुरुष कहते हैं। जैसे,—

यद् पडिउठे = यद् पढता है।

रामके पडाओ = रामको पढाओ।

यहाँ “यद्” कर्त्ताकारक है और “राम” कर्मकारक है।

अतएव “यद्” और “राम” में से प्रत्येक कारक के आशय है। इसीसे इन में से प्रत्येक “पुरुष” कहा जाता है।

पुरुष तीन प्रकारके होते हैं —

(१) उत्तम पुरुष। जैसे, আমি (मैं)

(२) मध्यम पुरुष। जैसे, तूमि (तुम)

(३) प्रथम पुरुष। जैसे, তিনি (वह)

* अप्राणिवाचक शब्दोंके बहुवचनमें रा, एरा, चिह्न नहीं लगाये जाते। ऐसे शब्दोंके साथ गुलि, गुला, गकल, गगुह इत्यादि शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं। नीचे ‘दर्जे’के प्राणिवाचक शब्दोंके अन्तमें भी रा, एरा का प्रयोग नहीं होता। उमके अन्तमें भी गुला, गुलि, इत्यादि प्रयोग किये जाते हैं। जैसे, पत्रगुलि, जलविन्दू गकल, पत्रगुलि, कीटगुला इत्यादि। ऐसा कभी नहीं होता—पत्ररा, जलविन्दूरा, पत्ररा, कीटरा इत्यादि।

इन सब पुरुषोंके वाट के, ए, ये, ते, द्वारा दिया, कहते येके, ग, ए, पर, वगैर शब्द जो इस्तेमाल होते हैं इन्हे विभक्ति अथवा घिळ कहते हैं । विभक्ति द्वारा ही वचन और कारक जानि जाते हैं ।

कारक ।



क्रियाके साथ जिस पदका किसी तरहका सम्बन्ध रहता है उसे वारक कहते हैं । जैसे—बालक खेलेछाह, আমি বুল দেখিতেছি, ভূমি অল্প ভাষা শাখা তখন কন ।

यहाँ खेलितेछे देखितेछि और कर्त्तन ये तीनों क्रिया हैं । खेलनेका काम बालक करता है, इससे खेलितेछे क्रिया का सम्बन्ध बालकसे है, अतएव बालक एक कारक है । আমি वृत्त देखितेछि, इस जगह मेरे देखनेका काम वृत्त पर सम्पन्न होता है, सुतरा देखितेछि इस क्रियाका আমি और वृत्तसे सम्पर्क है । अतएव अमि और वृत्त दोनोंही कारक हैं ।

कारक छै प्रकारके होते हैं । जैसे,—(१) कर्त्ता, (२) कर्म, (३) करण (४) सम्पदान, (५) अपादान, (६) अधिकरण ।

कर्त्ता ।



जो करता है, जो होता है अर्थात् जिससे कर्त्तृक क्रिया सम्पन्न होती है, उसे कर्त्ता कहते हैं । कर्त्तामें प्रथमा

होती है। जैसे, राम पूछक पडिउछे, शिशु चांद्र देखिउछे, राजा आसिउछेन इत्यादि ।

यहाँ पर पडिउछे, क्रियाका “कर्त्ता” राम है, क्योंकि जो करता है उसीको कर्त्ता कहते हैं। राम पुस्तक पडिउछे यहाँ पर कौन पुस्तक पटना है ? राम । इसलिये ‘राम’ कर्त्ता है। शिशु चांद्र देखिउछे, यहाँ पर चांद्रको कौन देखता है ? शिशु । इसलिये “शिशु” कर्त्ता है। राजा आसिउछेन यहाँ पर आता है कौन ? राजा । इसलिये ‘राजा’ कर्त्ता है ।

कर्म ।



जो किया जाता है, जो रना जाता है, जो देखा जाता है, जो लाया जाता है जो दिया जाता है, जो लिया जाता है, जो रक्ता जाता है, जो पकड़ा जाता है, जो मारा जाता है, उसे कर्म कहते हैं। कर्ममें द्वितीया विभक्ति होती है। कर्मको विभक्तियों के चिह्न ये हैं,—र, रे, एरे अथवा य । जैसे, राम इन्दि के धरिउछे, शिशु मांस खाव, राम पूछक पडिउछे इत्यादि ।

क्रियामें क्या या किसको यह प्रश्न करनेसे जो पट मिलता है, उसीको उस क्रियाका कर्म जानना । क्रिया में “कौन” प्रश्न करनेसे कर्त्ता मिलता है ।

श्याम हरिके धरितेछे 'वरितेछे' क्रिया है। कौन धरितेछे ? इस प्रश्नके उत्तरमें श्याम मिलता है, इसलिये 'श्याम' कर्ता है। श्याम क्या वा किसको पकड़ता है ? इस प्रश्नसे हरि मिलता है, इसलिये 'हरि' कर्म है। इसी तरह और उदाहरण सभक लो ।

कुछ क्रियाओंके दो दो कर्म रहते हैं, अर्थात् लिखागा, देया इत्यादि कतिपय धातुओं तथा कथार्य और णिजन्त धातुओंके दो-दो कर्म रहते हैं। इन धातुओंका नाम द्विकर्मक है। जैसे—माता शिशुकें छत्र देखाइतेछे, गुरु शिषुकें काव्य पढ़ातेछे, आगि तारकके टाका दियाछि, धीमेज गतीशके इश वनिल, इत्यादि ।

माता शिशुकें चन्द्र देखाइतेछेन यहाँपर 'देखाइतेछेन' क्रिया है। कि देखाइतेछेन ? चन्द्र इसलिये "वन्द" एक कर्म है। और काहाके देखाइतेछेन ? शिशुकें, इसलिये 'शिशुकें' और एक कर्म हुआ, अतएव देखाइतेछेन इस क्रियाके दो कर्म हुए। गुरु शिष्यके काव्य पढ़ाइतेछेन, यहाँपर पढ़ाइतेछेन क्रिया है। कि पढ़ातेछेन ? काव्य, इसलिये "काव्य" एक कर्म हुआ। काहाके पढ़ाइतेछेन ? "शिष्य के", इस लिये "शिष्य" और एक कर्म हुआ, अतएव पढ़ाइतेछेन क्रिया द्विकर्मक हुई। इसी तरह आगि तारकके टाका दियाछि, यहाँपर 'दियाछि' क्रिया हुई, कि

रक्षित, गृह्यत, उत्पन्न, अन्तर्हित, निवारित विरत, पराजित, आवृत्त या भेदित होता है, उसका नाम अपादान कारक है । अपादानमें पञ्चमी विभक्ति होती है । इस विभक्ति का विह है—हैते । जैसे—वायु हैते भौत हैतेछे, वृक्ष हैते पत्र पडितेछे, दृश्या हैते वन वक्रा कवितेछे, मेव हैते वृषी हैतेछे, पाप हैते विरत हैवे, दुष्ट लोक हैते अत्यर्हित हैतेछे, पुष्प हैते फल उत्पन्न ह्य इत्यादि ।

व्याघ्र हडते भीत हडतेछे, यहाँपर व्याघ्रसे भीत होने के कारण “व्याघ्र अपादान कारक हुआ । वृक्ष हडते पत्र पडितेछे, वृक्षसे पत्रका गिराव होता है इसलिये ‘वृक्ष’ अपादान कारक हुआ । दस्य हडते धन रक्षा करितेछे यहाँपर दस्युसे धन रक्षा करनिके कारण ‘दस्यु’ अपादान कारक हुआ । मेघ हडते वृष्टि हडनेके, यहाँपर मेघसे वृष्टि पैदा होती है, इसलिये ‘मेघ’ अपादान कारक हुआ । पाप हडते विरत हडवे, यहाँ पर पापसे विरत होनेके कारण “पाप” अपादान कारक हुआ । दुष्ट लोक हडते अन्तर्हित हडतेछे, यहाँपर दुष्टलोक से अन्तर्हित होनेके कारण “दुष्ट लोक” अपादान कारक हुआ । पुष्प हडते फल उत्पन्न ह्य यहाँपर पुष्प से फल पैदा होता है, इसलिये “पुष्प” अपादान कारक हुआ ।

हैते या थके इत्यादि अपादान कारक की विभक्तियाँ हैं । जैसे ५ धेके तीन वियोग कर । भङ्क

हइते भय पाइतेछे । बाही घेके जान, इत्यादि । यहाँपर “पाँच”, “भाङ्गूक” और “बाही” अपादान कारक है । हइते और घेके इन दो विभक्तियों द्वारा अपादान कारक जाना जाता है ।

अधिकरण ।



वस्तु या क्रिया के आधारको अधिकरण कहते हैं । जैसे— वायु गर्नी होने आछे, बूझे फल आछे, देखे बल आछे, दुक्के माखन आछे इत्यादि ।

वायु सर्व्व स्थाने आछे, यहाँ पर “सर्व्व स्थाने” यह पद ‘आछे’ क्रिया का आधार है, इसलिये “सर्व्व स्थाने” अधिकरण कारक हुआ । हउचे फल आछे यहाँपर ‘आछे’ क्रिया है, कोषाय आछे ? हउचे, इस लिये “हउचे” अधिकरण कारक हुआ । देहे बल आछे, यहाँ पर ‘आछे’ क्रिया है, कोषाय आछे ? देहे, इसलिये “देहे” अधिकरण कारक हुआ । दुग्धे माखन आछे, यहाँ पर दुग्ध माखनका आधार है, इसलिये “दुग्धे” अधिकरण कारक हुआ ।

ते एउठ, ए, या, य,—ये सब अधिकरणको विभक्तियाँ हैं । जैसे —जले मग्ग वाग कउठे, भाथाय किंवा भाथाउठे वमिग्रा कक डाकिउठे इत्यादि ।

यहाँपर “जले, शाखाय या शाखाने” अधिकरण कारक है ।

अधिकरण तीन प्रकारके होते हैं—आधाराधिकरण, कानाधिकरण और भावाधिकरण ।

वस्तु या क्रिया का आधार होने ही से उसको आधाराधिकरण कहते हैं । आधाराधिकरण चार प्रकार के हैं,—विषयाधार, व्याप्ताधार, सामीप्याधार, और एक देशाधार ।

कोई वस्तु अधिकरण होने से अगर “तद्विषये” (उसमें) ऐसा अर्थ समझ पड़े, तो उसका नाम “विषयाधार अधिकरण” होता है । जैसे—शिक्षकादेव शिक्ष कश्चे नैपुण्य देथाय अर्थात् शिल्पकार्य में निपुणता है, आठ्ठे भाव-दर्शिता आछे, यहाँपर “शिल्पकर्म” और “शास्त्रे” ये दो पद विषयाधार अधिकरण हैं ।

जो सब आधार में व्याप्त होकर रहता है, उसका नाम “व्याप्ताधार” है । जैसे—इकूत रज आछे अर्थात् ऊख में रस है । इकूतें माथर आछे, अर्थात् दूध में मक्खन है, इसलिये यहाँ पर “इच्छुते” और “दुग्धे” ये दोनों पद व्याप्ताधार अधिकरण हुए ।

समीपे (नज़दीक, पास) यह अर्थ प्रकट होने से उसे “सामीप्याधार” कहते हैं । जैसे—गझाय राग कर, यहाँ पर गङ्गा के निकट रहता है ऐसा अर्थ प्रकट होता है, इसलिये “गङ्गाय” पद सामीप्याधार अधिकरण है ।

यदि एकाधार ही, तो उसे “एक देशाधिकरण” कहते हैं । जैसे—बने गाय आछे । यहाँपर यह नहीं समझना होगा

कि सारे वन में वाघ है, वस्ति यह सम्भना होगा कि वन के किसी एक स्थान में वाघ है, इसलिये 'वनि' यह एक देगावार अधिकरण हुआ ।

कालवाचक शब्द अधिकरण होने से 'उसको "कालाधिकरण" कहते हैं अर्थात् दिन रात्रि, मास पक्ष, यखन, तखन, इत्यादि समय-वाचक शब्द अगर अधिकरण हो, तो उसको कालाधिकरण कहते हैं । जैसे—अतुल्ये गात्रोत्थाने कत्रा उटिउ, गभाक्रे गूर्गात्रे किरणे खत्रउव इय, त्रिनि उथर छिलेन ना, यथन याशेव व्यामिउ याशेव, वर्याय वृष्टी इय इत्यादि ।

प्रत्यूपे गात्रोत्थाने कत्रा उचिन्त, यहाँपर प्रत्यूपे अर्थात् प्रभात काले (सवेरे) सम्भना जाता है इस लिये 'प्रत्यूपे' यह पद कालाधिकरण है । मध्यान्हे सयोर किरणे खरतर इय, यहाँपर मध्यान्हे कहनेसे मध्याहकाल सम्भना जाता है, त्रिनि तखन छिलेन ना, यहाँपर तखन कहने से वही समय सम्भना जाता है । यहाँपर "तखन" पद कालाधिकरण है । जखन क्वाइने यामिषो जाइअ यहाँपर जखन शब्द द्वारा समय सम्भना जाता है, इसलिये 'जखन' पद कालाधिकरण हुआ । वर्षाय हृष्टि इय यहाँ वर्षा शब्द द्वारा वर्षा-काल सम्भना जाता है इसलिये "वर्षा" पद कालाधिकरण है ।

गमन, दर्शन, भोजन, श्रवण इत्यादि जितने भाव

विहित क्रिया-पद किसी समापिका क्रिया की अपेक्षा करते हैं, उनका नाम भावाधिकरण हैं । जैसे—हरिद्रगमने तनि दुःखित हडेवेन, छजेर दर्शने आमि बड सूथी हरे, जाकनेर जोकने नकलेई मसुके हय, आशीय वियोगे नकलेई शेवाबुल हय इत्यादि ।

हरिर गमने तनि दुःखित हडेवेन, यहाँ पर हरिर गमने इसका अर्थ 'हरिर गमन हइले', ऐसा कहनेसे किसी समापिका क्रिया को जरूरत होती है, नहीं तो वाक्य सम्पूर्ण नहीं होता, इसलिये "गमने" यह पद भावाधिकरण हुआ । ब्राह्मणेर भोजने मकलेई मन्तुष्ट रग, यहाँपर ब्राह्मणेर भोजने इसका अर्थ 'ब्राह्मणेर भोजन हइले', ऐसा कहनेसे कोई समापिका क्रिया चाहिये, नहीं तो वाक्य पुरा नहीं होता, इसलिये "भोजने" यह पद भावाधिकरण हुआ । चन्द्रेर दर्शने आमि बड सूथी हइ, यहाँपर दर्शने इसका अर्थ 'दर्शन करिले' ऐसा कहने से एक समापिका क्रिया का प्रयोजन होता है, नहीं तो वाक्य समाप्त नहीं होता, इसलिये दर्शने यह भावाधिकरण हुआ । आत्मीय वियोगे मकलेई शेका-कुन हय, यहाँपर "वियोगे" इसका अर्थ 'वियोग हइले' ऐसा कहनेसे एक समापिका क्रिया आवश्यक है, नहीं तो वाक्य अधूरा रहता है, इसलिये "वियोगे" यह पद भावाधिकरण है ।

सम्बन्ध पद ।



क्रियाके साथ भन्वित नहीं होता, इसीसे सम्बन्धको ञारक नहीं कहते । विशेष्य पद के साथ विशेष्य पदके सम्पर्कको ही “सम्बन्ध पद” कहते हैं । सम्बन्ध में पट्टी विभक्ति होती है । उसका रूप र या एव है । जैसे—रामेर बाड़ी, रामेर कापड़, यामेव गाछ, छम्मेर किरण, माधुर उदरता, मागरेर जण इत्यादि ।

रामेर बाड़ी, यहाँ पर राम और बाड़ी दोनों विशेष्य पद है । बाड़ीके साथ रामका सम्बन्ध है, क्योंकि रामकी छोट कर बाड़ी में दूसरे का अधिकार नहीं है, इसलिये “रामेर” यह पद सम्बन्ध पद हुआ और राम पद के प्रागे ‘एर विभक्ति जोडनेसे रामेर पद बना । इसी तरह श्यामेर, यामेर, चम्मेर, माधुर, मागरेर ये सब भी “सम्बन्ध पद” है ।

सम्बोधन ।



आज्ञान करनेको सम्बोधन कहते हैं । सम्बोधन के समय जो पद प्रयोग किया जाता है उसे “सम्बोधन पद” कहते है । जैसे,—

लाठ छन = भाई बनो ।

राम तुमि याँ = राम तुम जाओ ।

माधव भाग आछ ? = माधव अच्छे हो ?

उहे हरि = ओ हरि ।

उते चन्द्र = अरे चन्द्र ।

ऊपरके उदाहरणोंमें “भ्रात”, “राम”, “माधव”, “हरि” और “चन्द्र” सम्बोधन पद हैं ।

नोट—सम्बोधन पदोंके आगे हे, ओ, अयि, हा, अरे, शत्र प्रभृति कितनी हो अव्यय शब्द प्रायः लगाये जाते हैं । लेकिन किसी किसी जगह सम्बोधन पद के पहले सम्बोधन-सूचक अव्यय शब्द नहीं लगाये जाते ।

संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार अकारान्त को छोड़ कर और तरह के शब्दों के सम्बोधन पद के एक वचन में रूपान्तर होता है, बहुवचन में नहीं होता ।

जैसे,—

शब्द	सम्बोधन पद
शकुन्तला	अयि शकुन्तले
दुर्गाति	रे दुर्गाते
सखि	हे सखे
प्रेयसी	हा प्रेयसि
शिशु	हे शिशो
बधू	हा बधु
मात	हा मात
राजा	हे राजन्

शब्द	सम्बोधन पद
भगवान्	हे भगवन्
ज्ञानी	हे ज्ञानिन्
मतिमान्	हे मतिमन्

ऊपर जो सम्बोधन के रूप दिखाये गये हैं, वह सब संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार हैं और प्रायः बँगला भाषामें संस्कृत के कायदे से ही रूपान्तर होकर सम्बोधन व्यवहार किये जाते हैं, लेकिन बहुत से बँगला व्याकरणाचार्यों का मत है कि बँगला में सम्बोधन पद के रूप ठीक कर्त्ताकारक की तरह होते हैं। जैसे, हे पिता, हे दुर्म्भति, हे शिष्य, ओ सखा, हा भगवान् इत्यादि, लेकिन अधिकांश लोगोंने संस्कृत का कायदा ही ठीक माना है।

“शकुन्तला” शब्द आकारान्त है यानी शकुन्तला का अन्तिम अक्षर “आ” है। आकारान्त सभी शब्दों का रूप सम्बोधन में शकुन्तला को समान होगा। जैसे,—अयि शकुन्तले, दुर्गे इत्यादि।

“दुर्म्भति” शब्द इकारान्त है यानी दुर्म्भति शब्दका अन्तिम अक्षर “इ” है। इकारान्त शब्दों के रूप सम्बोधन में “दुर्म्भतिके” समान होगी। जैसे,—हे दुर्म्भति, हे कवि।

इसी तरह सम्बोधनमें ईकारान्त शब्दोंके रूप “प्रेयसि”, उकारान्त शब्दोंके रूप “शिगो”, लकारान्त शब्दोंके रूप

“धधु”, मृकारान्त शब्दोंके रूप “भात”, नकारान्त शब्दोंके रूप ‘राजन्’ की तरह होंगी ।

अर्थ विशेषमें विभक्ति निर्णय ।

जहाँ विना, नाजिवेके, बातीऊ, ऐ, भिन्न इत्यादि शब्द प्रयुक्त माने जाते हैं, वहाँ इनके पहिले का पद कर्त्तव्यकारक के अनुद्धत होता है । जैसे,—

धन विना सुख नश्य ना ।

धन विना सुख नहीं होता ।

टांशक भिन्न काँज इशेवे ना ।

उसके सिवाय और से काम न होगा ।

धिक् और नमस्कारार्थ शब्दोंका योग होने से, पहिलेके शब्द में कर्म को विभक्ति लगती है—यानी शब्द के बाद “के” लगाना होता है । जैसे,—

तूर्थके धिक्

तोभावे नमस्कार ।

मूर्खको धिक्कार ।

तुमको नमस्कार ।

जिन शब्दों के साथ गठित, प्रति, गमान, तुला, उपरि, गमान, इत्यादि, शब्दोंका योग होता है अथवा जिन शब्दों के साथ ये शब्द लगाये जाते हैं, उन शब्दों में सम्बन्ध पदकी विभक्तियाँ लगती हैं । जैसे,—

तोभावे गठित ।

वाक्ये उपरि ।

ताहार मत्त ।

बामेर तुला ।

आमार प्रति ।

तोमार ममान ।

प्राधान्य-वाचक शब्दों का योग होने से भी “सम्बन्ध” की विभक्ति लगती है । जैसे,—

पर्वतेर प्रधान हिमालय ।

कविर श्रेष्ठ कालिदास ।

धर्मिकेर शिरोमणि नल ।

अपेक्षार्थ शब्द को परे होने से, पहले के पदको “निर्धार” कहते हैं । जैसे,—

राम अपेक्षा आग सूशील ।

तैल अपेक्षा घृत ভাল ।

इन दोनों वाक्योंमें “राम” और “तैल” निर्धार पद है ।

शब्दरूप ।

विशेष्य पद के निङ्ग, पुरुष, वचन प्रभृति निरूपित हो चुके हैं । अब शिक्षार्थियोंके जानने के लिये शब्दरूप दिखा देते हैं ।

पुंलिंग ‘मानव’ शब्द ।

कारक

एकवचन

बहुवचन

कर्ता

मानव

मानवेंद्रा

मनुष्य, मनुष्यने

मनुष्य, मनुष्योंनि

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्म	मानवके	मानवदिगके
	मनुष्यकी	मनुष्योकी
करण	मानव द्वारा	मानवदिगद्वारा
	मनुष्यसे	मनुष्योंसे
सम्प्रदान	मानवके	मानवदिगके
	मनुष्यकी, के, लिये, मनुष्योंकी, के, लिये	
अपादान	मानव हईके	मानव मकल हईके
	मनुष्य से	मनुष्यो से
अधिकरण	मानव	मानव मकल
	मनुष्यमें, पर	मनुष्योंमें, पर
सम्बन्ध	मानव	मानवदिग
	मनुष्यका, के, की, मनुष्यो का, के, की	
सम्बोधन	हे मानव	हे मानवद्वारा
	हे मनुष्य	हे मनुष्यो

फल शब्द ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	फल	फल मकल
कर्म	फल	फल मकल
करण	फल द्वारा	फल मकल द्वारा

इत्यादि ।

पु लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दोंके रूप प्रायः ऊपर की तरह ही होते हैं । जिन शब्दों के कारक विशेष में विभक्तियों के भिन्न भिन्न रूप निरूपित किये गये हैं, केवल उही शब्दोंमें कुछ भेद होता है । अर्थात् अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त प्रभृति शब्दोंके किसी-किसी कारक में भिन्न रूप होते हैं ।

जो शब्द सस्त्रुत शब्दों से कुछ रूपान्तर होकर बँगला में बरते जाते हैं, उनमें से कुछ शब्द उदाहरण के तीर पर नीचे दिये जाते हैं,—

सस्त्रुत	बँगला	सस्त्रुत	बँगला
मथि	मथा	धनि	धनी
पितृ	पिता	तेजस्	तेज
वृत्	वृत्	फलम्	फलत
वणिज्	वणिक	विद्यम्	विद्यान्
महत्	महान्	राजम्	राजा
पापीयस्	पापीयान्	दिशु	दिक्
मनस्	मा	यशस्	यश
शुभवत्	शुभवान्	बुद्धिमत्	बुद्धिमान्
उपानह	उपानत्	द्योतिस्	द्योति
प्रेमान्	प्रेम	पथि	पथ
वेधस्	वेधा		

विशेषण ।

जिस शब्द के प्रयोग करने में किसी का गुण व भवस्था प्रकाशित हो, उसे "विशेषण" या गुणवाचक शब्द कहते हैं जैसे—

शीतल जल = ठण्डा पानी ।

मिठे फल = मीठा फल ।

उत्तम बालक = अच्छा बालक ।

बृह अश्व = बड़ा घोड़ा ।

मनोहर पुष्प = मनोहर फूल ।

पुरातन वृक्ष = पुराना पेड़ ।

लोहित वसन = लाल कपड़ा ।

ज९ लोक = भना आदमी ।

बड गाइ = बड़ा घेड़ ।

छोट छेले = छोटा लडका ।

अलस बालक = सुस्त बालक ।

पांका आम = पका आम ।

सुक डूमि = सूखी धरती ।

गरम दूध = गरम दूध ।

काल पाथर = काला पत्थर ।

विशुद्ध वायु = शुद्ध हवा ।

इस जगह "शीतल" शब्द विशेषण है। क्योंकि इस शब्द से ही जल की शीतलता प्रकाशित होती है। इसी भाँति मिष्ट, वृद्ध प्रभृति शब्द भी विशेषण हैं। जिन शब्दों के नीचे कानी-कानी रेखाएँ खोबी हैं, वे सब विशेषण हैं।

कारक, वचन और पुरुष के भेद से विशेषण के रूपमें भेद नहीं होता। क्योंकि उसमें कारक आदि नहीं होते। केवल स्त्रीनिङ्ग में रूप भेद होता है। जैसे, नवीना ब्रम्ही, छनवठी छाग्याकर, विद्यावती बालिकाव ।

कुछ विशेषण पद कभी कभी, विशेषण के विशेषण होते हैं। जैसे — यजुः कठिन, रड मन, अति दुःखी इत्यादि ।

कितने ही विशेषण पद क्रिया के विशेषण हो जाते हैं। जैसे, शीत शिविग्राह, गद गद बहिरुच्छे ।

सर्वनाम ।

प्रसङ्ग-क्रमसे एक व्यक्ति या एक वस्तुका क्रिा बारम्बार करना होता है, लेकिन बार बार एक ही व्यक्ति और एक ही वस्तुका विज्ञान करके उनके स्थानोंमें और बहुतसे पद इस्तेमाल करनेका कायदा है। इस तरह किसी पदकी जगह में जो पद आता है उसको "सर्वनाम" कहते हैं।

बाग बने गेलेन, ताँहार शोकक राजा गनिलेन ।

रामके वन जाने पर, उनके शोकके राजा मर गये ।

इस जगह “राम” इस पदकी जगह ‘ताँहार’ पद आया है, अतएव “ताँहार” पद सर्वनाम है ।

जिस पदकी जगह सर्वनाम इस्तेमाल किया जाता है उस पदका जो लिङ्ग और वचन होता है, सर्वनामका भी वही लिङ्ग और वचन होता है, किन्तु स्त्रीलिङ्ग और पु लिङ्ग के भेदसे सर्वनाम में भेद नहीं होता । जैसे, —

गीता अष्टाष्ट पतिव्रता, तिनि पतिके परम देवता बनिय गनितेन-।

सीता अत्यन्त पतिव्रता (थी), वह पतिकी परम देवता कह कर मानती थी ।

(२) अश्रुगण बलिष्ठ ऊष्ट, ताँहार भावी भारी बस्तु लईया ऊठवेगे चलिया याय ।

घोड़े बलवान् जानघर होते हैं, वे भारी-भारी चीज लेकर तेजीसे चले जाते हैं ।

यहाँ “सीता” स्त्रीलिङ्ग एक वचनान्त पद है । सुतरा “तिनि” यह सर्वनाम भी स्त्रीलिङ्ग और एक-वचनान्त पद है । “अश्रुगण” पु लिङ्ग और बहुवचनान्त पद है, इसी लिये “ताँहारा” यह सर्वनाम भी पु लिङ्ग और बहुवचनान्त पद है ।

विशेष्य पद की भाँति सर्वनाम पद के भी वचन पुरुष

और कारक होते हैं । विशेष्य पदका अर्थ देखकर ही सचन, पुरुष और कारक निर्णय किया जाता है ।

सर्वनाम ये हैं—आमि, गृहे, तूमि, तूडे, आपनि, तिमि, मे, तांश, ता, यिनि, ये, वांश, हेनि, ए, हेश, एहे, उनि, उ उश, के, गर्क, मव, उडय, अण, हेउत्र, पव, अपव इत्यादि ।

युस्मद्, अस्मद्, यद्, तद्, एतद् इदम् किम् इत्यादि, ये सब सस्कृत सर्वनाम हैं । इन सब के असल रूप भाषा में काम नहीं आते । इन सब के स्थानमें आमि, तुमि, से, प्रभृति शब्द और उनकी रूप भाषामें व्यवहार किये जाते हैं । सस्कृत सर्वनाम शब्द कत, तद्धित और समास में व्यवहार होते हैं ।

कितने ही सर्वनाम शब्द विभक्तियोंके लगाने से और ही तरह के हो जाते हैं । जैसे,—

<u>मूलशब्द</u>	<u>चनित शब्द सम्भ्रान्तको</u>	<u>असम्भ्रान्तको</u>
अश्वम्	आमि	
उद२	आपनि	
गुश्वन्	तूमि	तूडे
यन्	वांश, या, तिमि	ये
उम्	तांश, ता, तिमि	मे
इमम्	एह, हेश, हेनि	ए
एउम्		

आप्तम्	ऐ, उहा, उनि	७
दिम्	वे कि, दोन	
मर्त्त	मव	

विभक्ति योग के समय अन्य, पर उभय इतर, प्रमृति कितने ही शब्दों में कुछ रह-बदल नहीं होता अर्थात् ये ऐसे के ऐसे ही रहते हैं ।

सर्वनाम शब्दके रूप ।



आम्नाद् शब्द ।

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	आमि	आमरा
	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म	आमाटेव	आमादिगटक
	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	आगा धावा	आमादिगेन धारा
	मुझ से	हम से
सम्प्रदान	आमाटेव	आमादिगटक
	मुझे, मुझको	हमें, हमको
अधादान	आगा इहेउ	आमादिगेन इहेउ
	मुझसे	हम से

अधिकरण	आमाऊ	आमादिगेव गधे
	मुभने, मुभपर	हमने, हम पर
सम्बन्ध	आमाव	आमादिगेर
	मेरा	हमारा

“ये” शब्द पुं व स्त्री० ।

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	ये	याशरा
	जिसने	जिन्होंने
कर्म	याशके	याशदिगवे
	जिसे, जिसको	जिहें, जिनको
		इत्यादि ।

“से” शब्द पुं० व स्त्री०

कर्ता	से	ताशरा
	यह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	ताशके	ताशदिगवे
	उसको	उनको

आदर प्रकाशनार्थ “ये” के स्थानमें “यिनि”, “याशरा” के स्थानमें “याशरा”, से के स्थानमें “तिनि”, “ताशरा” के स्थानमें “ताशरा” इत्यादि इस्तेमाल किये जाते हैं ।

और सब सर्वनामों के रूप भी ऐसे ही होते हैं । सर्वनाममें ‘सम्बोधन’ नहीं होता । केवल सात कारक होते हैं

अव्यय ।

जिस शब्दके बाद कोई विभक्ति न हो, वारक भेद से जिसके रूपमें भेद न हो, एवं जिसका लिङ्ग और वचन न हो, उसको “अव्यय” कहते हैं ।

संयोजक, वियोजक आदि भेदोंसे अव्यय अनेक प्रकारके होते हैं । संयोजक अव्यय ये हैं—एवं, ३, आर, आर०, अपि, कि, अथ, यदि, यद्यपि, येहेहू, येन, वव, सूत्रां, केनना, काजे, वाजेर इत्यादि ।

वियोजक अव्यय ये हैं—ना, कि,वा, अथवा, नतूना, कि, तथापि, तथा, ना हय त, नहिले, नहे, अथवा इत्यादि ।

शोक और विन्मय आदि सूचक अव्यय ये हैं—आ, उः, हाय, हा, हा उह, हिछि राम राम, हवि हवि इत्यादि ।

प्र, परा, अय, सम् अव, अनु, निर, दुर् वि, अधि, सु, उत्, परि, प्रति अभि, अति, अपि, उत्र, आ, एह, इ, इहे “उप-सर्ग” कहते हैं ।

उपरोक्त उपसर्ग जब क्रिया-वाचक पदके पहले लग जाते हैं, तब वह क्रिया वाचक पद भिन्न भिन्न अर्थ प्रकाश करता है । जैसे,

दान = देना

आदान = लेना

गमन = जाना

आगमन = आना

अपकार = बुराई

उपकार = भलाई

क्रिया प्रकरणा ।



होना, करना प्रभृतिको 'क्रिया कहते हैं । जिन शब्दोंसे यह क्रिया ममकी जाती है, उनको 'क्रिया पद' कहते हैं । जैसे, हँसेहँसे, करिहँसे इत्यादि ।

भूँ छ, दृश्य, गम प्रभृतिको धातु कहते हैं । ये ही क्रिया की मूल होती हैं ।

क्रिया दो तरह की होती है,—

- (१) सकर्मक ।
- (२) अकर्मक ।

जिन क्रियाओंके कर्म नहीं होते वह सब क्रियाएँ, अर्थात् हँसा, पाँसा, बसा, थाका, पड़ा, खाँसा, मरा, बँटा, शमा, नाँसा, खेला, बँदा, बीँसा, प्रभृति धातुओंकी क्रियाएँ अकर्मक होती हैं, क्योंकि इन सब क्रियाओंके कर्म नहीं होते । जैसे, शृष्टि हँसेहँसे, शृष्टि मरियाहँसे इत्यादि । यहाँ हँसेहँसे, मरियाहँसे, ये दो क्रिया है, लेकिन इनके कर्म नहीं हैं, इसवास्ते ये अकर्मक हैं ।

जिन क्रियाओंके कर्म होते हैं, वह सब क्रियाएँ अर्थात् पाँसा, देना, पाँठ करण प्रभृति धातुओंकी क्रिया सकर्मक होती हैं, क्योंकि इन सब क्रियाओंके कर्म होते हैं । जैसे,

श्रेयस गवत करिछेछेन ।

ईश्वर सब करता है ।

से पुस्तक पडिछेछे ।

वह पुस्तक पढता है ।

राम अत्र उन्नत कविन ।

रामने अन्न खाया ।

द्विकर्मक क्रिया ।

बना, लेखा जिज्ञासा, देखा, न, बूकान प्रभृति क्रियाओंके दो कर्मा होती है । इसी कारणसे इनको द्विकर्मक क्रिया कहते हैं । जैसे,

राम ब्रजके तोषाव कथा बलियाछे ।

रामने ब्रजको तुम्हारी बात बोल दी है ।

आमि आज तौंशके से विषय जिज्ञासा बबिब ।

मैं आज उनसे इस विषयमें पूछूँगा ।

ललित शबडके पाखी देखाइतेछेन ।

ललित् शरतकी पक्षी दिखता है ।

पहिले उदाहरणमें “ब्रजके” और “कथा” ये दो कर्म “बलियाछे” क्रियाके हैं । दूसरे में “ताँहाके” और “विषय” ये दो कर्म “जिज्ञासा” क्रियाके हैं । तीसरे में “शरतके” और “पाखी” ये दो कर्म “देखाइतेछेन” क्रिया के हैं ।

क्रियाके जिस पक्ष से काम के होनेका समय पाया जाय उसे "काल" कहते हैं ।

काल तीन प्रकारके होते हैं, —

(१) वर्त्तमान ।

(२) अतीत ।

(३) भविष्यत् ।

वर्त्तमान काल से यह पाया जाता है कि, क्रिया का कार्य अभी हो रहा है । जैसे शिशु खेल रहा है । यहाँ खेलनेका काम चारम्भ हुआ है, लेकिन समाप्त नहीं हुआ है । ऐसी दशामें 'खेलितेहै' इसी तरह के रूप प्रयोग किये जाते हैं । यही प्रकारत वर्त्तमान काल है ।

अतीत काल से यह पाया जाता है कि, क्रियाका काम हो चुका है । अतीतकाल को भूतकाल भी कहते हैं । अपेक्षाकृत पूर्व कालकी अतीत क्रियाको क्रमशः "अद्यतन" "अनद्यतन" और "परोक्ष" कहते हैं । जैसे, शिशु खेलित, शिशु खेलित, शिशु खेलियाहिल ।

भविष्यत काल से यह पाया जाता है कि, क्रियाका कार्य आगे चलकर चारम्भ होनेवाला है । जैसे, शिशु खेलिये ।

विधि, अनुज्ञा सम्भावना प्रभृति क्रियाएँ और भी होती हैं ।

किसी विषय के नियम बाँधनेको जो क्रिया इस्तेमाल

अतीत काल ।

उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	प्रथम पुरुष
कविनाम	करिने	कविन
कवियाछि	करियाछ	कविवाछे
कवियाछिनाम	कवियाछिने	करियाछिन

क्रियाश्रोके रूप समझने में कुछ कठिनता पडती है, लिये हम नीचे कुछ उदाहरण शोर भी दे देते हैं ।

सामान्य भूतकाल ।

(Past Indefinite Tense)

	<u>एक बचन</u>	<u>बहुबचन</u>
६० पु०	आमि गियाछिनाम मैं गया	आमवा गियाछिनाम हम गये
म० पु०	तूमि गियाछिने तुम गये	होमरा गियाछिने तुम लोग गये
प्र० पु०	से गियाछिन वह गया	तांशवा गियाछिन वे गये

आसन्न भूतकाल ।



(Present Perfect Tense)

	<u>एक वचन</u>	<u>बहुवचन</u>
उ० पु०	आमि गियाह्नि मैं गया हूँ	आमरा गियाह्नि हम गये है
म० पु०	तुमि गियाह्नि तुम गये हो	तौमरा गियाह्नि तुम लोग गये हो
प्र० पु०	से गियाह्ने वह गया है	ताशरा गियाह्ने वे गये हैं

भविष्यत् काल ।



(Future Indefinite)

	<u>एक वचन</u>	<u>बहुवचन</u>
उ० पु०	आमि याइव मैं जाऊँगा	आमरा याइव हम जायँगे
म० पु०	तुमि याइवे तुम जाओगे	तौमरा याइवे तुम लोग जाओगे
प्र० पु०	से याइवे वह जायगा	ताशरा याइवे वे जायँगे

कभी कभी सकर्मक क्रिया के कर्मपद नहीं होता । उस समय सकर्मक क्रिया अकर्मक की तरह काम करती है। जैसे,

आमि देखिनाग = मैंने देखा ।

तिनि लयेन नाइ = उन्होंने नहीं लिया ।

यहाँ “देखा” और “लिया” क्रियाओं के सकर्मक होने पर भी, कर्म-पद के न होनेसे, वे अकर्मक के समान हो गयी हैं ।

वचन-भेद से क्रियाके रूपमें फर्क नहीं होता । जैसे,—

आमि करितेछि = मैं करता हूँ ।

आमरा करितेछि = हम लोग करते हैं ।

इस जगह दोनों वचनों में ही एक ही प्रकार की क्रिया का प्रयोग हुआ है । लेकिन हिन्दीमें ऐसा नहीं है । हिन्दीमें वचनके अनुसार क्रियामें भेद हो जाता है । जैसे, मैं करता हूँ और हम करते हैं । बँगला में “आमि” एक वचनके लिये “करितेछि” और “आमरा” बहुवचनके लिये भी “करितेछि” एक ही प्रकार की क्रिया इस्तेमाल की गयी है । लेकिन हिन्दीमें “मैं” के लिये ‘करता हूँ’ और “हम” के लिये ‘करते हैं’ भिन्न-भिन्न रूप की क्रियाओंका प्रयोग किया गया है ।

पुरुष और काल भेद से क्रिया का रूपान्तर हो जाता है ।

“आमि” इस पद की क्रिया को उत्तम पुरुष की क्रिया कहते

है। “तुम” इस पद की क्रियाको मध्यम पुरुष की क्रिया कहते हैं। इन के सिवाय और पद की क्रिया को प्रथम पुरुष की क्रिया कहते हैं। जैसे,—

आमि कविऽह्मि = मैं करता हूँ ।

तुमि कविऽह्मि = तुम करते हो ।

जे कविऽह्मि = वह करता है ।

“आमि” उत्तम पुरुष है, उसकी क्रिया भी उत्तम पुरुष है। “तुमि” मध्यम पुरुष है, इसकी क्रिया भी मध्यम पुरुष है। “जे” प्रथम पुरुष है उसकी क्रिया भी प्रथम पुरुष है।

प्रथम पुरुष (3rd Person) के मन्त्रान्त या माननीय होने से क्रियाके अन्तमें “न” और लगा दिया जाता है। जैसे,—

(१) तिमि कविऽह्मि = उन्होंने किया ।

(२) जे कविऽह्मि = उसने किया ।

पहले उदाहरण में “तिमि” प्रथमपुरुष और आदरणीय है, इसी से उसकी क्रिया “कविऽह्मि” में ‘न’ जोड़ दिया गया है, किन्तु “जे” प्रथम पुरुष और साधारण मनुष्य है, इससे उसकी क्रियामें ‘न’ नहीं जोड़ा गया है।

कृदन्त ।



जिस क्रियाके द्वारा वाक्य को समाप्ति न हो, वाक्य की

समाप्ति करनेके लिये एक और क्रिया की दरकार पड़े, उसको “असमाप्तिका क्रिया” कहते हैं। जैसे, बलिया, कविउे याइउे इत्यादि ।

जिम जगह एक क्रिया करने पर और एक क्रिया करने की बात कहनी पड़े, उस जगह पहली क्रिया के अन्तमें “ले” जोड़ना पड़ता है। जैसे—

तिनि बलिले आभि याइव ।

उनके बोलनेसे जाऊँगा ।

इसी तरह कदिले, दिले इत्यादि समझो ।

निमित्त अर्थमें क्रियाके पीछे “ते” जोड़ा जाता है। जैसे,

दिले = दियाव निमित्त = देनेके लिये ।

याइउे = याईवार निमित्त = जानेके वास्ते ।

अनन्तरके अर्थमें धातुके बाद “या” जोड़ा जाता है। जैसे,

याइया = गमनानन्तर = जाकर ।

दिथा = दानानन्तर = देकर ।

सुईया = श्रमनानन्तर = सीकर इत्यादि ।

जब क्रिया को विशेष्य पद करना होता है, तब उसके बाद “अ”, “उग्रा” इनमें से एकको जोड़ना होता है। जैसे,

बला वा बलिवा = बोलना ।

करा वा करिवा = करना ।

याउग्रा वा याईया = जाना ।

ऐसे प्रत्ययोंका नाम “कृत” और निष्पन्न पदोंका नाम “कदन्त” है ।

धातुके उत्तर “अन” और “ति” प्रत्यय होते हैं । “अन” और “ति” प्रत्ययान्त पद प्राय ही क्रिया वाचक विशेष्य होते हैं । जिन पदोंके अन्तमें “ति” होती है वे स्त्रीलिंग होते हैं । जैसे—

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
ख	अन, टि	खवन, खति	खवन करना
स्त	अन, ति	स्तवन, स्तुति	स्तवन करनेका काम
व	अन, टि	वन्न, वति	वना
क	अन, ति	कारण कति	करना, काम
ग	अन, टि	गना, गति	गायना
गम	अन, ति	गमन, गति	जानेका काम
मन	अन, टि	मनन, मति	गाना
मन	अन, ति	मनन, मति	मनन, मति
दृ	अन, टि	दर्शन, दृष्टि	देखा
दृ	अन, ति	दर्शन, दृष्टि	देखनेका काम
श्र	अन, टि	श्रद्धा, श्रुति	श्रद्धा करना
सृ	अन, ति	सृजन, सृष्टि	प्रस्तुत करनेका काम
व	अन, टि	वचन, वक्ति	वना
व	अन, ति	वचन, वक्ति	बोलनेका काम

धातुके उत्तर कर्मवाच्य और अतीत कालमें “त” प्रत्यय

होता है। जिनके अन्तमें “त” प्रत्यय होता है वे पद प्र
ही कर्मके विशेषण होते हैं। जैसे,

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
कृ	त (लृ)	कृत	जो किया गया है।
श्रु	त	श्रुत	जो सुना गया है।
वि + रु	त	विहीर्ण	जो व्याप्त है।
उक्	त	उक्ति	जो खाया गया है।
वृ	त	उक्त	जो कहा गया है।
युज्	त	युक्त	जो जोड़ा गया है।
द	त	दत्त	जो दिया गया है।
गै	त	गीत	जो गाया गया है।
ज्वा	त	ज्वात	जो जाना गया है।
बध्	त	बद्ध	जो बाँधा गया है।
भज्	त	भक्त	जो भजा गया है।
प्रा	त	प्रात	जो प्रिया गया है।
वि + व	त	विहित	जो किया गया है।
भूज्	त	भूक्त	जो खाया गया है।
हि	त	तूक्त	जो काटा गया है।

धातुके उत्तर “ता” (लृन्), “ई” (णिन्) “अत्”
(शक), “अन” प्रभृति प्रत्यय लगाये जाते हैं। जिन
अन्तमें ये प्रत्यय होते हैं, वे कर्त्ताके विशेषण होते हैं।

अकर्मक धातुकी कर्तृवाच्य भूत कालमें "उ" (उ) लगाया जाता है। जैसे,

धातु	प्रत्यय	पठ	अर्थ
ग	उ (ङ्ग)	गाउ	जो दे ।
अ	उ	थाउ	जा सुने ।
जि	उ	जेउ	जो जय करे ।
कृ	उ	करु	जो करे ।
वच	उ	वचु	जो बोले ।
भुञ्ज	उ	भुञ्जु	जो खाए ।
ग्रह	उ	ग्रहउ	जो ग्रहण करे ।
रञ्ज	उ	रञ्जु	जो रचे ।
श	ऐ (गिन)	शाणे	जो स्थिर रहे ।
डू	ऐ	डाणे	जो हो ।
दा	ऐ	दाणे	जो दान करे ।
युञ्ज	ऐ	योञ्जी	जो योग करे ।
जि	ऐ	जयी	जो जय करे ।
कृ	अक	काक	जो करे ।
उड	अक	काक	जो भाग करे ।
युञ्ज	अक	योञ्जक	जो योग करे ।
निन्द	अक	निन्दक	जो निन्दा करे ।
पठ	अक	पाठक	जो पठे ।
पाक	अक	पाक	जो पाक करे ।

होता है। जिनके अन्तमें “त” प्रत्यय होता है वे पद प्रायः ही कर्मके विशेषण होते हैं। जैसे,

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
कृ	त (कृत)	कृत	जो किया गया है।
श्रु	त	श्रुत	जो सुना गया है।
वि + ख	त	विखीर्ण	जो व्याप्त है।
भ्रू	त	भ्रूषित	जो खाया गया है।
वच	त	उक्त	जो कहा गया है।
बुद्ध	त	युद्ध	जो जोड़ा गया है।
द	त	दत्त	जो दिया गया है।
गै	त	गीत	जो गाया गया है।
ज्वा	त	ज्वात	जो जाना गया है।
बध्	त	बद्ध	जो बाँधा गया है।
भज	त	भक्त	जो भजा गया है।
पा	त	पात	जो पिया गया है।
वि + ध	त	विहित	जो किया गया है।
भू	त	भूत	जो खाया गया है।
क्षि	त	कूत	जो काटा गया है।

धातुके उत्तर “ता” (कृत), “इ” (गित्) “अक” (पाक), “अन” प्रभृति प्रत्यय लगाये जाते हैं। जिनके अन्तमें ये प्रत्यय होते हैं, वे कर्त्ताके विशेषण होते हैं।

अकर्मक धातुके कर्तृवाच्य प्रतीत कानमें "उ" (उ) लगाया जाता है । जैसे :

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
ग	उ (इण)	गाउ	जां दे ।
ज	उ	जाउ	जा सुने ।
जि	उ	जेउ	जां जय करे ।
क	उ	काउ	जां करे ।
क	उ	काउ	जां बोलि ।
डू	उ	डूउ	जां धाय ।
ए	उ	एउ	जां ग्रहण करे ।
र	उ	रउ	जां रचे ।
श	उ (गिण)	शाउ	जां स्थिर रहे ।
डू	उ	डूउ	जां हो ।
दा	उ	दाउ	जां दान करे ।
यू	उ	यूउ	जां योग करे ।
जि	उ	जेउ	जां जय करे ।
क	अक	काक	जां करे ।
उ	अक	उाक	जां भाग करे ।
यू	अक	यूाक	जां योग करे ।
नि	अक	निाक	जां निन्दा करे ।
पठ	अक	पाठक	जां पठे ।
पा	अक	पाक	जां पाक करे ।

धातु	प्रत्यय	शब्द	अर्थ
ग्रह	अक	ग्राहक	जो ग्रहण करे ।
गै	अक	गायक	जो गान करे ।
मर	अक	घातक	जो मारे ।
दृश	अक	दर्शक	जो देखे ।
नृत	अक	नर्तक	जो नाचे
दा	अक	दायक	जो दान करे ।
शी	अक	शायक	जो सोवे ।
कध्	अक	रोधक	जो रोध करे ।
स्तु	अक	स्तुवक	जो स्तव करे ।
हू	अक	भावक	जो हो ।
हर	अक	हारक	जो हरण करे ।
छिद्	अक	छेदक	जो काटे ।
गम	त (लु)	गत	जो बीत गया ।
श्रम	त	श्रास्र	थका हुआ ।
जन	त	जात	पैदा हुआ ।
हू	त	हूत	जो हुआ है ।
भिद	त	भिन	छोडा हुआ ।
मद	त	मठ	मतवाला ।
मृ	त	मृत	जो मर गया ।

धातुके उत्तर “तय”, “अनीय” और “य” प्रत्यय होता है। जिन धातुओंके बाद ये प्रत्यय लगते हैं वे सब धातु कर्मकारकके विशेषण होते हैं और भविष्यत् कालका अर्थ करते हैं। जैसे,

धातु	प्रत्यय	पद	अर्थ
अ	उवा, अनीय, य	श्रोतवा, अवनीय, अवा	यांश सुनां याय ।
शु	तव्य, शनीय, य	श्रोतव्य, अवशनीय अव्य	जो सुना जाय ।
अह	उवा, अनीय, य	अहोतवा, अहनीय, अाह	यांश नपेयां याय ।
ग्रह	तव्य, अनीय, य	ग्रहीतव्य, ग्रहणीय, ग्राह्य	जो लिखा जाय ।
गग	उवा, अनीय य	गगुवा, गगनीय गग्य	येथाने यांयेयां याय ।
गम	तव्य, अनीय, य	गन्तव्य, गमनीय, गम्य	जाने योग्य, जहाँ जाया जाय ।
डूज	उवा, अनीय, य	जेउतवा, जेजनीय, जेज्य	यांश थांयेयां याय ।
भुज	तव्य, अनीय, य	भोज्य, भोजनीय, भोज्य	जो खाया जाय, खाने योग्य ।
कृ	उवा, अनीय, य	कदवा, कवनीय, कर्श	यांश करू याय ।
कृ	तव्य, अनीय, य	कर्त्तव्य, करणीय, कार्य	जो करा जाय, कराने योग्य ।
पा	उवा, अनीय, य	पातवा, पानीय, पोग	यांश पान करा याय ।
पा	तव्य, अनीय, य	पातव्य, पानीय, पेय	जो पिया जाय, पीने योग्य ।

तद्धित ।

शब्दोंके पीछे अर्थ विशेषमें जिस प्रत्ययके जोड़नेसे शब्द बनता है, उसको "तद्धित प्रत्यय" कहते हैं ।

हिन्दीमें भी पाँच प्रकारके तद्धित होते हैं ।

(१) अपत्यवाचक । जिससे सन्तानत्व पाया जाय । इसकी बनाते समय कहीं "थ" के स्थानमें "था" कर देते हैं । जैसे, "संसार" से सांसारिक ।

कहीं "इ" के स्थानमें "ई" कर देते हैं जैसे, शिव से "शैव" "इतिहास" से "ऐतिहासिक" ।

कहीं "उ" के स्थानमें "औ" कर देते हैं । जैसे, "उर्मिला" से "और्मिलिय" "कुम्भी" से "कौम्भिय" इत्यादि ।

(२) कर्तृवाचक । ये "वाला" या "हारा" लगानेसे बनते हैं । जैसे, रोटी वाला, पानीवाला, दूधवाला और लकड़हारा ।

(३) भाववाचक । ये "ता" या "त्व" "वार" आदि लगानेसे बनते हैं । जैसे, मूर्खता, नीचता, चतुरता, गुरुता, नीलत्व, दौधत्व, महत्व, गुरुत्व, सुघडाई ।

(४) गुणवाचक । ये "वान", "मान", "दायक" इत्यादि लगानेसे बनते हैं । जैसे, बलवान, स्वरूपवान, गुणदायक, सुखदायक, बुद्धिमान इत्यादि ।

(५) जगवाचक । इनसे लघुता पाई जाती है । खाटसे खटिया ।

ऊपर हम हिन्दी व्याकरणकी रीतिसे तद्धित विषयकी समझा आये हैं । हिन्दी में समझानेकी यही जरूरत थी कि हिन्दी जाननेवाले अल्प परिश्रमसे बँगला व्याकरण के अनुसार तद्धितकी भासानीसे समझ सकें ।

शब्दोंके उत्तर अपत्यादि अर्थमें "इ", "एय", "य", "आयन", "इय", "इक", "अ", "इन" और "क" प्रत्यय वि जाते हैं ।

ार्थमें विकीरार्थमें सम्बन्धीयर्थमें भावार्थमें कर्त्तृ वा कर्मार्थमें

।	हैम	देशीय	योवन	तार्किक
।	राजत	शारीरिक	शैशव	वैदाखिक
।	शतव	सौर	लाघव	कायिक
		पार्थिव	कारुण्य	पैतृक
		शर्गीय		

शिष्य शब्द के उत्तर भावार्थ में “त्व”, “ता”, और
”, “प्रत्यय लगाते हैं । जैसे,

त्व	ता	इमन्
गुरुइ	गुरुता	गन्निमा
महइ	महता	महिमा
नीलइ	नीलता	नीलिमा

शब्दके उत्तर “है” (याहै) इस अर्थके प्रकट करनेके लिये
”, “वत्”, “विन्” और “इन्” प्रत्यय लगाते हैं । जैसे,

वत्	विन्	इन्
धनवान्	मेधावी	धनी
निष्ठावान्	मायावी	ज्ञानी
जायान्	पश्यवी	शिनी
वेगवान्	मनवी	मृगी
मुग्धावान्	तेजवी	शानी

हिन्दी बंगला शिचा ।

पूर्णार्थ प्रत्यय युक्त पद —

दूसरा	द्विविंशतितम	उन्नीसवाँ
तीसरा	विंश	बीसवाँ
चौथा	एकविंश	इक्कीसवाँ
पाँचवाँ	एकविंशतितम	इकत्तीसवाँ
छठा	षष्टितम	साठवाँ
सातवाँ	सप्ततितम	सत्तरवाँ
आठवाँ	अशीतितम	अस्सीवाँ
नवाँ	नवतितम	नव्वेवाँ
दशवाँ	शततम	सौवाँ
ग्यारहवाँ	पञ्चषष्टितम	पैंसठवाँ
बारहवाँ		
तेरहवाँ		

एवाचक शब्दके उत्तर आधिक्य के अर्थके लिये “तर”

“इष्ट” और “इयस्” प्रत्यय लगाते हैं । जैसे ,

तर	तम	इष्ट	इयस्
पुत्रतव	पुत्रतम	गविष्ठ	गवीयान्
अन्नतव	अन्नतम	अग्निष्ठ	अग्नीयान्
प्रशस्ततव	प्रशस्ततम	श्रेष्ठ	श्रेयान्
वृद्धतव	वृद्धतम	वर्षिष्ठ	वर्षियान्

इके बाद तुल्यार्थ प्रगट करनेके लिये “वत्” और लगाते हैं । जैसे ,

- जनवत् । जनके समान
 गुरुवत् । गुरुके समान ।
 अध्यापककृत् । अध्यापकके समान
- सख्यावाचक शब्दके बाद प्रकार अर्थ में “धा” प्रत्यय
 गते हैं । जैसे, विधा, उवा, शतधा, इत्यादि ।
- स्वरूपके अर्थमें शब्दके पीछे “मय” प्रत्यय लगाते हैं ।
 जैसे, अर्धमय, शृंगमय, वार्धमय, इत्यादि ।
- सर्वनाम शब्दके बाद कालके अर्थ में “टा” प्रत्यय लगाते
 हैं । जैसे, गर्वता, एरुता, इत्यादि ।
- सर्वनाम शब्दके बाद आधार अर्थ में “त्त” प्रत्यय लगाते
 हैं । जैसे, गर्वत्त, अरुत्त, एरुत्त इत्यादि ।
- कालवाचक शब्दके बाद उत्पन्न अर्थमें “तन” प्रत्यय लगाते
 हैं । जैसे, पूर्वतन, अनुनातन इत्यादि ।
- किम् शब्द निष्पन्नपदके पीछे अनिश्चय अर्थ में, “त्ति”
 प्रत्यय लगाते हैं । जैसे, किन्त्ति, कदात्ति इत्यादि ।

समास ।

जब दो तीन अथवा अधिका पद अपने कारकी के बिना
 ही त्याग कर आपस में मिल जाते हैं तब उनके योग को
 “समास” कहते हैं और उन के योग से जो शब्द बनता है
 उसे “सामासिक” शब्द कहते हैं । जैसे, धन ७ मूल—इन

दो पृथक पदोंको “खलूल” इस तरह एक पद बना कर भी काममें ला सकते हैं। अग्नि, जल ७ वायु—इन तीनोंको एक पद बना कर “अग्निजलवायु” इस तरह प्रयोग कर सकते हैं। ‘राजाव वाणि’ इन दोनों पदोंको “राजवाणि” इस भाँति एक पद करके प्रयोग कर सकते हैं। “कई शब्दोंको मिलाकर इस भाँति एक पद करने को ही समास कहते हैं।

समास पाँच प्रकार की होती है—द्वन्द्व, तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, और अव्ययीभाव ।

हिन्दीमें समास छ प्रकार कौ मानी है। उसमें इनके सिवाय “द्विगु” समास और मानो है।

द्वन्द्व ।

द्वन्द्व वह है जिसमें कई पदोंके बीच “और” (७) का लोप करके एक पद बना लिया जाय। जैसे,

खल ७ खूल = खलखूल

राजा ७ रानी = राजारानी

माता ७ पिता = मातापिता

वाम ७ दक्षिण = वामदक्षिण

तत्पुरुष ।

तत्पुरुष समास उसे कहते हैं, जिसमें पहला पद कर्ता, कारक को छोड़ दूसरे किसी भी कारकके चिह्न सहित ही औरै इसी पदका अर्थ प्रधान हो।

कर्मपदके साथ जो समास होती है, उसे द्वितीया तत्पुरुष कहते हैं। जैसे,

विश्वरूपके आपा = विश्ववापम ।

परलोकके प्राण = परलोक प्राण ।

करण पदके साथ जो समास होती है, उसे तृतीया तत्पुरुष कहते हैं। जैसे,

शोक द्वारा आदुल = शोकादुल ।

मोह द्वारा अक्र = मोहाक्र ।

आज्ञा द्वारा कृत = आज्ञाकृत ।

अपादान पदके साथ जो समास होती है, उसे पञ्चमी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे,

पाप शैते मूढ = पापमूढ ।

ब्रह्म शैते उ०पन्न = ब्रह्मा०पन्न ।

सम्बन्ध पदके साथ जो समास होता है, उसे षष्ठी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे,

विश्वत्र पिता = विश्वपिता ।

चन्द्रत्र दर्शन = चन्द्रदर्शन ।

राजात्र पूज = राजापूज ।

अधिकरण पदके साथ जो समास होता है, उसको सप्तमी तत्पुरुष कहते हैं। जैसे,

गृहे वास = गृहवास ।

शब्दे दृष्ट = शब्ददृष्ट ।

शर्गं गत = शर्गगत ।

हीन, जन प्रभृति कितने ही शब्दोंके योगसे तृतीया तत्पुरुष समास होती है। जैसे,

ज्ञान द्वारा हीन = ज्ञानहीन ।

विद्या द्वारा शूण्य = विद्याशूण्य ।

कर्मधारय ।

जिसमें विशेषणका विशेष्यके साथ सम्बन्ध हो, उसे कर्म-धारय समास कहते हैं ।

इस समासमें विशेषण (Adjective) पद पहले और विशेष्यपद (Noun) पीछे रहता है और विशेष्यपद (Noun) का अर्थ ही प्रधान रूपसे प्रकाशित होता है। जैसे,

पन्नग + आँगा = पन्नगाँगा ।

महा + राज = महाराज ।

पन्नग + श्रेष्ठ = पन्नगश्रेष्ठ ।

महा + कर्म = महाकर्म ।

यहाँ परम और आत्मा इन दो पदोंमें समास हुई है। परम पद विशेषण और आत्मा पद विशेष्य है विशेषण पद पहले और विशेष्य पद पीछे है और उसके ही अर्थने प्रधान रूपसे प्रकाश पाया है, वस इसी कारणसे इसे "कर्मधारय" समास कहते हैं ।

बहुव्रीहि ।

बहुव्रीहि समास उसे कहते हैं, जिसमें दो तीन या अधिक पदोंका योग होकर जो शब्द बने उसका सम्बन्ध और किसी पदसे हो। इस की परिभाषा इस भाँति भी हो सकती है—विशेष्य विशेषण अथवा दो या उससे अधिक विशेष्य पदोंमें समास करने पर यदि उन शब्दोंका अर्थ प्रकाशित न होकर किसी और ही वस्तु या व्यक्तिका अर्थ प्रकाशित हो, तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

बहुव्रीहि समास करने पर सारे पद प्रायः विशेषण होते हैं, कभी कभी विशेष्य भी होते हैं। जैसे, 'शीतलाय', यहाँ शीत और लाय इन दो पदोंमें समास हुई है। शीत विशेषण और लाय विशेष्य है, किन्तु इन दोनों पदोंका अर्थ पृथक्-पृथक् भावसे बोध नहीं होता, शीतलाय विशिष्ट कोई व्यक्ति बोध होता है, अतएव यहाँ बहुव्रीहि समास हुई।

शीतलाय इस पदसे यदि क्लृप्त शरीर यही अर्थ समझा जाय और उससे कुछ व्याघात न हो, तो कर्मधारय समास हुई समझनी होगी, क्योंकि इस जगह विशेष्य पदका अर्थ ही प्रधान रूपसे प्रकाश पाता है।

छकशांति, यहाँ भी छक पद विशेष्य है। उसका अर्थ

चाका या पहिया है, पाणि पद भी विशेष्य है उसका अर्थ हाथ है। इन दोनों का समास होने से चक्रपाणि यह एक पद हुआ। इस से चक्र और हाथ, इन दोनों का कुछ अर्थ न निकलने के कारण नारायण रूप अर्थ का बोध होता है। अतएव यह बहुव्रीहि समास है और चक्रपाणि पद विशेष्य पद है।

इस समास में यार, याति, या, द्वारा इत्यादि पद व्यवहार किये जाते हैं। ये या यांश प्रायः व्यवहृत नहीं होते। जैसे,

पीत अश्वर यार, से पीताश्वर अर्थात् बृष।

बृहत्काय याव, से बृहत्काय ।

जित इन्द्रिय याहा बर्तुव, से जितेन्द्रिय ।

स्वच्छ तोय आछे जाते, से स्वच्छतोय ।

पाणिते चक्र यार, से चक्रपाणि ।

नरु मति याव, से नरुमति ।

महत् आशय यार, से महाशय ।

न अरु यार, से अनरु ।

न आदि यार, से अनादि ।

नोट (१) बहुव्रीहि और कर्मधारय समासमें महत् शब्द पहिले होनेसे “महत्” की जगह “महा” हो जाता है। जैसे,

महत् बल यार, से महाबल ।

(२) बहुव्रीहि और कर्मधारय समास का पहला पद स्त्रीलिंग का विशेषण हो तो वह पुलिङ्ग की भाँति हो जाता है । जैसे ,

दीर्घा यष्टि = दीर्घ यष्टि ।

द्वित्रा भति = द्वित्र भति ।

यहाँ “यष्टि” शब्द स्त्रीलिङ्ग है और “दीर्घा” उसका विशेषण भी स्त्रीलिङ्ग है , किन्तु समास होने से विशेषण दीर्घा स्त्रीलिंग होनेपर भी पुलिङ्ग की भाँति “दीर्घ” हो गया । इसी भाँति “स्थिरा” का “स्थिर” हो गया ।

(३) समास में “न” इस अव्यय के बाद स्वरवर्ण होने से “न” के स्थान में “अन” हो जाता है लेकिन “न” के बाद व्यञ्जन वर्ण होनेसे “न” के स्थानमें “अ” हो जाता है । जैसे ,

न + अछु = अनछु ।

न + आदि = अनादि ।

न + छान = अछान ।

न + अज्ञान = अज्ञान ।

यहाँ “न” के बाद “अ” स्वर आ गया , इससे “न” के स्थान में “अन” लगाया गया , इसी भाँति तीसरे उदाहरण में ‘न’ के बाद “आ” व्यञ्जन आ गया , इस लिये “न” के स्थानमें “अ” लगाया गया ।

(४) बहुव्रीहि समास में परस्थित आकारान्त शब्द अकारान्त हो जाता है । जैसे ,

निः नाई दया याव, जे निर्दय ।

निः नाई लब्ध याव, जे निलब्ध ।

पहिले उदाहरणमें “दया” शब्दके अन्तमें “आ” है, लेकिन समास होने से “आ” का “अ” हो गया यानी “दया” का “दय” हो गया । इसी भाँति और समझ लो ।

(५) समास के पूर्वपद के “नकारान्त” होनेपर “नकार” का लोप हो जाता है । जैसे ,

वाजन पूत्र = वाजपूत्र ।

आग्न् वृत् = आग्निवृत् ।

समास में युष्मद् और अस्मद् शब्द यदि पहले आवें, तो एक वचनमें उनके स्थानमें क्रमशः “त्वत्” और “मत्” हो जाते हैं । जैसे ,

तोमाव कृत = इत्कृत ।

आमाव पूत्र = मत्पूत्र ।

अव्ययीभाव ।

अव्यय पद पहिले बैठने पर जिसकी समास हो, उसको अव्ययीभाव कहते हैं । जैसे ,

नासे नासे = प्रतिमास ।

गृहे गृहे = प्रतिगृह ।

दने दने = प्रतिदण ।

বুলের সীপে = উপবুল ।

দিন দিন = প্রতিদিন ।

ভিক্ষার অভাব = চুর্ভিক্ষ ।

স্বখেব অভাব = অস্বখ ।

বিধিকে অতিক্রম না করিয়া = যথাবিধি ।

গ্রহের সদৃশ = উপগ্রহ ।

বনের সদৃশ = উপবন ।



वाक्य-रचना ।

जिस पद-समूह के द्वारा सम्पूर्ण अभिप्राय प्रकाश होता है, उसे “वाक्य” कहते हैं। जैसे,

- (१) अश्वर भक्त बरिभेछेन ।
- (२) बायु बरिभेछे ।
- (३) उवि पूखुक पडिभेछे ।
- (४) बृष्टि इहेभेछे ।

वाक्य के अन्तर्गत जो शब्द होते हैं, उनको रीतिमत् यथास्थान स्थापित करनेको “वाक्यरचना” कहते हैं।

वाक्य-रचना के समय पहले कर्त्ता और उसके बाद क्रिया पद रखा जाता है। जैसे,

- बृष्टि पडिभेछे ।
 प्रभात इहेन ।
 मूर्घा उदय इहेयाछे ।

नोट (१) कर्त्ता जिस पुरुष का होता है, क्रिया-पद भी उसी पुरुष का होता है, वचन-भेद से क्रिया के रूप में भेद नहीं होता। जैसे,

- (१) { आगि यईभेछि
 आगता यईभेछि

(२) { तूमि याइतेछ
तोमवा याइतेछ

(३) { से याइतेछे
ताहावा याइतेछे

पहले उदाहरणमें “आमि” एकवचन और “आमरा” बहुवचन है किन्तु दोनोंकी क्रिया एक ही है। दूसरेमें “तूमि” एकवचन और “तोमरा” बहुवचन है, लेकिन दोनोंकी क्रिया एक ही है। “आमि” और “आमरा” उत्तम पुरुष हैं। इनकी क्रिया “जाइतेछि” है और “तूमि” और “तोमरा” मध्यम पुरुष हैं। इनकी क्रिया “जाइतेछ” है। पुरुषके और होनेसे क्रिया भी बदल गयी।

नोट (२) जिस वाक्यमें उत्तम और मध्यम पुरुष क्रिया प्रथम और उत्तम पुरुष अथवा प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष एक क्रिया के कर्ता हों, उस वाक्यमें उत्तम पुरुष को क्रिया ही व्यवहृत होगी। जैसे,

आमि ओ तूमि देखितेछिनाम ।

तोमराते ओ आमराते बसिब ।

हरि ओ आमि सेखाने याइब ।

आमि, तूमि ओ हरि ईहा पडियाछिनाम ।

नोट (२) जहाँ प्रथम और मध्यम पुरुष एक क्रिया के कर्ता हों, वहाँ मध्यम पुरुष को ही क्रिया प्रयोग करनी होगी। जैसे,

तूमि ओ हरि सेखाने छिगे ।

ताहारा ओ तोमरा ईहा देखियाछिले ।

ताहाते ओ तोमराते एइए खाइयाछ ।

नोट (४) ऐसे वाक्योंमें सब का कर्त्तृपद एक ही प्रकार के वचन का व्यवहार करना चाहिये । आगि ओ तौमर शहिर, आगि ओ तशवा देखितेछि, इस भाँति के वाक्य नहीं हो सकते । अगर ऐसा हागा तो अलग-अलग क्रिया व्यवहार की जायगी ।

क्रिया के सकर्मक या द्विकर्मक होनेसे क्रिया के ठोके पहले कर्मपद बैठेगा । जैसे ,

आगि हनिके देखिलाम ।

तशारा पुस्तक पडितेछे ।

बहु तांशके पुस्तक दान करियाछे ।

पहले उदाहरणमें “हरिके” यह कर्म पद है और वह अपनी क्रिया “देखिलाम” के पहिले बैठा है । दूसरेमें पुस्तक कर्मपद है और वह क्रिया पडितेछि के पहिले बैठा है । इसी तरह तीसरेमें “तांशके” और “पुस्तक” ये दो कर्मपद हैं और दोनों ही अपनी क्रिया “दान करियाछे” के पहिले बैठे हैं ।

असमापिका क्रिया समापिका क्रिया के पहिले बैठेगी असमापिका और समापिका क्रियाका कर्त्ता एक हीगा और इन दोनों क्रियाओंके कर्म करण विशेषण प्रभृति पद इन दोनों क्रियाओं के पहिले बैठेगे । जैसे ,

हरि पुस्तक लहेया पडिते लागिल ।

शशी एथाने बेद पडिते आगितेछे ।

तिनि गृह शहेते बहिर्गत उहेया हकेमने विद्यालये

प्रवेश करिलेन

विशेषण पद विशेष्यके पहले बैठता है । जैसे ,

सुशीला बालिका ।

बुद्धिमान बालक ।

बहदर्शी बृद्ध ।

पहले उदाहरणमें “सुशीला” विशेषण पद है और वह अपने विशेष्य “बालिका” के पहले बैठा है । इसी भाँति और उदाहरण समझ लो ।

नोट—अगर दो या दो से ज़ियादा विशेषण पद व्यवहार करने हों तो उन सब विशेषण पदोंके बीचमें सयोजक (जोड़ने-वाला) अव्यय नहीं व्यवहार करना चाहिये । जैसे ,

महाभाग अष्टौषष्ठ व्याग ।

महादादी धर्माज्ञा राजा युधिष्ठिर ।

यहाँ “आस” शब्दके “महानाथ और “अष्टौषष्ठ” दा विशेषण हैं । लेकिन दोनों विशेषणोंके बीचमें “और” या “ध” इत्यादि सयोजक अव्यय नहीं रने गये । उसी तरह दूसरे उदाहरणमें भी समझ लो ।

क्रिया का विशेषण क्रियाके पहले ही बैठता है , किन्तु क्रिया सकर्मक होनेसे प्रायः कर्म पदके पहले बैठता है । जैसे ,

तिनि अत्रान्तु वेणे गमन करिलेन ।

ब्राम उठैछ, खरे हविके डाकिल ।

पहले उदाहरणमें “गमन करिलेन” क्रिया है और “अत्रान्तु वेणे” उसका विशेषण है और वह क्रियाके माफिक अपनी क्रियाके पहले बैठा है । दूसरेमें

“टाकिल” सकर्मक क्रिया है और “उभे खरे” उभका विशेषण है। “हरिके” कर्मपद है। क्रिया विशेषण यहा “हरिके” कर्मपदके पहले बैठा है।

दो या दो से अधिक पद, वाक्यांश अथवा वाक्योंके एक सग प्रयोग करने पर इनके बीचमें संयोजक अव्यय, अर्थात् एवं, ओ, किंवा, आर बैठाने चाहिये। जैसे,

रवि एवं राम पडितेछे।

हत्ती, अश्व, गेा ओ हाग चरितेछे।

राम सर्वदा लेखे एवं पडे।

ऊपरके नियमानुसार ही अथवा, किंवा, वा, प्रभृति वियोजक अव्यय भी व्यवहार किये जाते है। जैसे,

राम अथवा हरि आसिबे।

से पडिबे किंवा लिखिबे।

तुमि वा आमि कविब।

वाक्यके पहले ही सम्बोधन पद बैठता है, उस सम्बोधन पदके ठीक पहले सम्बोधन चिन्ह हे, अहे, अरे प्रभृति अव्यय बैठाये जाते है। कभी-कभी इनके न बैठानेसे भी काम चल जाता है। जैसे,

हे जगदीश, तूगिहे सकलेब कर्ता।

ओहे गहश, एथाने एस।

अरे। तूहे एथन या।

राम, तूमि आज खेला कविगना।

सम्बन्ध पदके बाद ही सम्बन्धी पद (जिसके साथ सम्बन्ध है) बैठाया जाता है । जैसे ,

श्रेयश्चरैत नशिया ।

दू.बीर भग्न दू.गीर ।

यदा "श्रेयश्चरै" यह सम्बन्धीपद है , क्योंकि श्रेयश्चरैके साथ नशियाका सम्बन्ध है ।

कारण पद कर्तृपदके बाद और कर्म प्रभृति पदोंके पहले बैठता है । जैसे ,

तिनि अन्न खावा एई बूकटि छेदन ब रिलेन ।

हनि यष्टि धारा बूक हहेते फल पाडिल ।

यदा "अन्न खावा" यह कारण पद है यह "तिनि" कर्मपदके बाद और "बूकटि" कर्मपदके पहले बैठा है इसीतरह दूसरे उदाहरण को समझ लो ।

जिन सब अर्थों में अपादान कारक होता है उन सब अर्थ-बोधक पदोंके पहले अपादान पद बैठता है । जैसे ,

तिनि बूकर्म हहेते विरत हहेयाछेन ।

जो जिसका अधिकरण पद छाता है, वह उसके पहले बैठता है , कभी-कभी बाद भी बैठता है । जैसे ,

ताहार हास्त पुस्तक आछे ।

गात्रे कोन शीतवस्त्र नाई ।

वक्तव्य ।

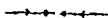


हमने यहाँ तक बँगला व्याकरणमें प्रवेश मात्र करने की राह दिखाई है । इससे हिन्दी जाननेवालों की बँगला भाषा सीखनेमें सुगमता होगी । जिन्हे बँगला व्याकरणकी अन्यान्य विषय जानने हों, वे वृहत् बँगला व्याकरण देखें ।



हिन्दी बँगला शिक्षा ।

द्वितीय खण्ड ।



अनुवाद-विषय ।



पहिला पाठ ।

ছিল = था	সেই = उसी
সেখানকার = वहाँका	যত = जितने
রাজার = राजाका	ছিলেন = थे
ভাঁর = उनका	সবলের চেয়ে = सबकी अपेक्षा
তত = ততনা	পণ্ডিতদের = पण्डितोंके
গৌরব = प्रतिष्ठा, महिमा	বন্দ্য = बीचमें
অথচ = और	হইলে = होनेपर
নিয়েন = करते थे	भीमारंग = कैसिला
এত = इतना	কেন = कीई
হওয়া = होनेका	

सौता ।

(१)

मिथिला नामे एक राज्य छिल । सेखानकार राजार नाम छिल जनक । तार राजा तत बड छिल ना, बड राजा बलियाओ तार तत गोरव छिल ना । सकल बड बड बाजाई ताँके खुब मान कबितेन—खुब खातिर करितेन । तार एत मान हओयार अनेक कावण छिल ।

सेई समय यत बड बड बाजा छिलेन, बाजा जनक सबलेर चेये विधान् छिलेन,—सबलेर चेये ज्ञानी छिलेन । सकल शास्त्र ताँव कर्ष छिल । पण्डितदेव मध्ये तर्क हईले, तिन तार मीमांसा कबितेन । तार मीमांसाई शेष मीमांसा—ताँव बाकाई वेद नाक्य—ताँव उपर कथा बलिबार आव केउ छिल ना ।

सौता ।

(१)

मिथिला नामक एक राज्य था । वहाँके राजाका नाम जनक था । उनका राज्य उतना बड़ा नहीं था, बड़े राजा होनेके कारणही उनको उतनी प्रतिष्ठा नहीं थी । सब बड़े बड़े राजा उनका खूब मान करते थे—खूब खातिर करते थे । उनका उतना मान होनेके अनेक कारण थे ।

उस समय जितने बड़े बड़े राजा थे, राजा जनक सबकी

अपेक्षा विद्वान् थे,—सबकी अपेक्षा ज्ञानो थे । सारे शास्त्र उनके कण्ठस्थ थे । पण्डित लोगोंके बोचमें वाद-विवाद होनेपर, वे उसकी मीमांसा करते थे । उनजी मीमांसा ही अन्तिम मीमांसा थी,—उनका वाक्य ही वेदवाक्य था—उनके ऊपर बात कहनेवाला और कोई नहीं था ।

दूसरा पाठ ।

तइ = वही	बोन = कोई
सुधू = केवल	तौके = उसकी
कि = क्या	शुणैते = चटाते
येगन = जैसा	पावेन = सकता
तेगन = वैसा	नाइ = नहीं
कोन = किसी	नव = नहीं
अडिले = पहनेसे	जेकाले = उस समय
बड बड = बड़े बड़े	गत = अनुसार, समान
अनामर्श = सलाह	यथा = जब
निठेन = लेते थे	बगिठेन = बैठते थे
वीरदण्ड = चौरत्व भी	अग्निठेन = पहिनते थे
तौशत्र = उनकी	यात्र = और
ना = नहीं	भाकिणेन = रहते थे
करिया = करके	

सौता ।

(१)

मिथिला नामे एक राज्य छिल । सेथानवार राजार नाम छिल जनक । तार राज्य उत बड़ छिल ना, बड राजा बलियाओ तार तत गौरव छिल ना । सकल बड बड बाजाई ताके खुब माग्य करितेन—खुब खातिर करितेन । ताँव एत मान हওয়ার अनेक कारण छिल ।

सेई समय यत बड बड़ बाजा छिलेन, बाजा जनक सबलैर चेये विधान् छिलेन,—सबलैर चेये ज्ञानी छिलेन । सकल शाज्र ताँव बर्ष छिल । पशुतदेव मध्ये तर्ब हईले, तनि ताँव मीमांसा करितेन । तार मीमांसाई शेष मीमांसा—ताँव बाक्यई वेद बाक्य—ताँव उपर कथा बलिबार आव केउ छिल ना ।

सौता ।

(१)

मिथिला नामक एक राज्य था । वहाँके राजाका नाम जनक था । उनका राज्य उतना बड़ा नहीं था, बड़े राजा होनेके कारणही उनको उतनी प्रतिष्ठा नहीं थी । सब बड़े बड़े राजा उनका खूब मान करते थे—खूब खातिर करते थे । उनका इतना मान होनेके अनेक कारण थे ।

उस समय जितने बड़े बड़े राजा थे, राजा जनक सबकी

अपेक्षा विद्वान् थे,—सबकी अपेक्षा ज्ञानी थे । सारे शास्त्र उनके कण्ठस्थ थे । पण्डित लोगोके भोचमें वाद-विवाद होनेपर, वे उसकी मीमांसा करते थे । उनकी मीमांसा ही अन्तिम मीमांसा थी,—उनका वाक्य ही वेदवाक्य था—उनके ऊपर बात कहनेवाला और कोई नहीं था ।

दूसरा पाठ ।

ताई = वही	बोन = कोई
उधु = केवल	ताँदे = उसको
कि = क्या	शठाईते = हटाते
येगन = जैसा	पावेन = सकता
तेगन = वैसा	नाई = नहीं
कोा = किसी	नय = नहीं
पडिले = पढ़नेसे	सेकाले = उस समय
बड बड = बड़े बड़े	गत = अनुसार, समान
परागर्श = सलाह	यथा = जब
निठेन = लेते थे	बगितेन = बैठते थे
वीरदड = वीरत्व भो	प्रवितेन = पढ़िनते थे
तांशर = उनकी	आत्र = और
ना = नहीं	शाकिटेा = रहते थे
करिया = धरके	

(२)

शुभू कि तहै—तिनि वेमन विद्वान्, तेमनि बुद्धिमान् छिलेन ।
कोन विपदे आपदे पडिले अनेक बड बड राजाँ ओ तौर पवा-
मर्ष नितेन । वीरहओ तौर कम छिल ना । युद्ध कबिया बोन
बाजाँहै तौके हटाँहैते पाबेन नहै ।

केवल तहै नय—सेकाले तौर मत धार्मिक मुनिधर्मिओ खुब
बन छिल । बाजाँ हईयाँओ तनि भोगविलासी छिलेन ना ।
यखन बाजाँसने बसितेन, केवल तखन राजपोषक परितेन ।
आब सब समय मुनि धर्मिओ ग्राय थाकितेन । सर्वदा जप, तप,
व्रत, नियम पालन करितेन ।

(२)

केवल इतना ही क्या—वे जैसे विद्वान्, वैसेही बुद्धि-
मान भी थे । किसी विपत्ति-आफतमें पडने पर बहुतमें
बड़े-बड़े राजा भी उनको सलाह लेते थे । वीरता भी
उनकी कम न थी । लडकर कोई राजा भी उनको हटा नहीं
सकता था ।

केवल इतना ही नहीं—उस समयमें उनके समान
धार्मिक ऋषिमुनि भी बहुत कम थे । राजा होकर भी वे
भोग-विलासी नहीं थे । वे जब राज-आसन पर बठते थे
सिर्फ, उस समय राजाकी पोशाक पहिनते थे, और सब समय
ऋषिमुनिकी भाँति रहते थे । सदा जप, तप, व्रत, नियम
करते थे ।

তীসরা পাঠ ।

উদ্দেশে = চেষ্টা

কাজ = কাম

কতই = কিতনা ছী

আমোদ = প্রসন্নতা

হইত = হীতো থী

তিনি = বে, বহু

হইয়াও = হীকার ভী

বলিয়া = হুসসে, হুস কারণসে

লোকে = মনুষ্য, সর্বসাধারণ

বলিত = কহতি থে

গৃহী = গৃহস্থ

আবার = আঁর, ফির হুসরী

গাফিয়া = রহকার

তাহা = বহু

করিয়াছিলেন = কিয়া থা

অথচ = আঁর ভী

পাকা = পঙ্ক

খেলোয়াড় = খিলাডী

ভরোয়াড় = তলবার

ঘুরাইয়া = ঘুমাকার

(৩)

ঈশ্বর উদ্দেশে কাজ করিয়া তাঁর কতই আমোদ হইত । তিনি কাজ হইয়াও মুনিঋষিব মত কাজ করিতেন বলিয়া, লোকে তাঁকে রাজর্ষি বলিত । রাজর্ষি জনক গৃহকর্মে গৃহী, আবার ধর্মকর্মে সন্ধ্যাসী ছিলেন । গৃহে থাকিয়া সন্ধ্যাস অসম্ভব হইলেও, তিনি তাহা সম্ভব করিয়াছিলেন । তিনি সকল কাজই করিতেন, অথচ কোন কাজে লিপ্ত ছিলেন না । তিনি খুব পাকা খেলোয়াড় ছিলেন, তাই এক হাতে ধর্মের ও আর এক হাতে কর্মের ভরোয়াড় ঘুরাইয়া সকলকে বিস্মিত করিয়াছিলেন ।

(३)

ईश्वरके उद्देश्य से काम करके उन्हे बड़ो प्रसन्नता होती थी । वे राजा होकर भी ऋषि-मुनिको भाँति काम करते थे, इससे लोग उनको राजर्षि कहते थे । राजर्षि जनक घरके काममें गृहस्थ और धर्म काममें सन्यासी थे । घरमें रह कर सन्यास असम्भव होनेपर भी उन्होने उसको सम्भव किया था । वे सभी काम करते थे, परन्तु किसी काममें निप्त न थे । वे खूब पक्के खिलाडो थे, इसीसे इन्होने एक हाथसे धर्मकी और दूसरे हाथसे कर्मको तलवार घुमाकर सबको विचित्र किया था ।

चौथा पाठ ।

दयाव = दयाकी

वाडीते = घरमें

तेव = तेरह

वाव = बारह

माने = महीनेमें

पार्वण = पर्व

थोता = खुला

अन्नखण्ड = अन्नक्षेत्र

ये = जो

आने = आवे

शक्तिसे पाद = रह सकता

एगन = ऐसे

गखान = लडका बाला

जापरिजन = अपनी पराये

ठग = वास्ते

आकूल = घ्याकुल

पान = पाये

डोदेर = उनका

किछूतेई = किसीसे भी

सेठ = बही

किछू = कुछ

बे = कौन

हईल = हुआ

(8)

जनकेर दर्यार सीमा छिन ना । बाडीते वार मासे तेरु पार्वरिण, उ०सव, आमोद, आझाद । आर दान दातव्य रातदिन खोला अमगत्र—ये आसे, सेई थाय । तौर राज्ये आर दीन दुःखी के धाकिते पावे ?

एगन राजर्षि जनक तौर गस्था नाई । प्रजा, जनपरिजन ओ राजकर्मचारी सकलेरई मुख मलिन । बाणी गस्थानेर जन्म आवुल । सकलेर एई भाव देखिया, राजा कोथाओ शांति पान ना । दि करे—तौंदेर अनुरोधे याग यज्ञ करिलेन, किन्तु किछूतेई किछू हईल ना ।

जनकके दयाकी सीमा न थी । घरमें बारह महोनिमें तेरह पर्य, उष्व, आमोद आझाद (होता था) । और दान दातव्य, रात दिन खुला अन्नक्षेत्र, जो आता वही खाता । उनके राज्यमें और दीन दुःखी कौन रह सकता (था) ?

ऐसे जो राजर्षि जनक (थे) उनके नडका बाना नहीं (था) । प्रजा अपने पराये और राजकर्मचारी सबका सुँह मलिन (रहता था) । रानी सन्तानके लिये व्याकुल (रहती थी) । सबका यह भाव देखकर, राजा कहीं भी शान्ति नहीं पाते थे । क्या करे—उनके अनुरोधसे होम यज्ञ किया, परन्तु किसीसे भी कुछ न हुआ ।

ব'বা চাই—করনা चाहिये	ছাড়িলেন—ছাড় दिया
লাঙ্গল—হল	তাডাতাড়ি—जल्दीसे
আসিল—आया	ছুটিয়া গেলে—দৌড়कर गये
গব—বৈল	কোলে—गोदमें
যেন—জৈসে, মানী	তুলিয়া নিলে—उठा लिया
আলোকিত—রীশন	সাদা পড়িল—कौलाहन मचा
উঠিল—उठा	অনায়াস—बिना परिश्रम,
কালে—कालमें	यकायक

(৬)

ঐ খোলা মাঠেই যজ্ঞ হইবে। মাঠের মাঝে মাঝে গাছ পালা, উহাব কোন জায়গা উচু কোন জায়গা নীচু। সে সব চাব করিয়া সমান করা চাই। লান্ধল আসিল, গক আসিল, রাজা নিজেই চাব করিতে আরম্ভ করিলেন। চাব করিতে বসিতে মাঠ যেন আলোকিত হইয়া উঠিল। দেখেন লান্ধলের ফালে সত্ৰযোটা পদ্মফুলের মত এক মেয়ে! মেয়ে কি মেয়ে, যেন আকাশের চাঁদ। জ্যোৎস্নার মত রঙ, ননীর মত শরীর, মেয়ে দেখিয়াই রাজা লান্ধল ছাড়িলেন, তাডাতাড়ি ছুটিয়া গেলেন, মেয়ে কোলে তুলিয়া নিলেন। চারিদিক হইতে লোক জন আসিল, ভয় জয়বার পড়িয়া গেল। রাজপুরীতে মহা আনন্দের সাদা পড়িল। রাজা অনায়াসে সন্তান পাইয়া ভগবানের নিকট বৃত্তজ্ঞতা প্রকাশ করিলেন।

(६)

इस खुले मैदानमें ही यज्ञ होगा । मैदानके बीच बीचमें पेड़ पत्ते (है), उसकी जमीन कहीं ऊँची कहीं नीची है । यह सब हल चलाकर बराबर करनी चाहिये । हल आया, बैल आया, राजाने स्वयं हल चलाना आरम्भ किया । हल चलाते-चलाते मैदान मानों आलोकित ही उठा । देखा कि हलके फालमें तुरत फूटे हुए कमलके फूलके समान एक लडकी (है) ! लडकी कैसी लडकी (है) मानो आकाशका चन्द्रमा ! चाँदनीसा रंग, मखन सा शरीर, लडकी देखकर राजाने हल छोड़ दिया, जल्दोसे दौड़कर गये, लडकीको गोदमें उठा लिया । चारों ओरसे मनुष्य आये, जयजयकार मच गई । राजपुरीमें महुआ आनन्दका कोलाहल मचा । राजाने अनायास ही सन्तान पाकर ईश्वरके आगे कृतज्ञता प्रकाश की ।

सातवां पाठ ।

गठई—सच ही, सचमुच

बड़—बहुत

निये—ले जाकर

अन्दर—भीतरमें

बत—जितना

उदू—तब भी

बूधि—मालूम होता है

गोशान इहेन—सजाई गई

फुटेकर—फाटकके

हूडाय हूडाय—सरपर

नक्कारखानेमें

ब्राह्मण—राज्यभरका

माडित्त—मतवाले हुए

आपन आपन—अपना-अपना

बाज्ये राज्ये लोकेर अभाव युच्छिया गेल । आशाव अधि-
दान पाहिया सकलैहै बोडहाते भगवानेर निकट बाजकछार
दीर्घजीवन कामना करिते कविते आपन आपन देशे चलि
गेल । राजर्षि जनकेर कथाभाडेव विववण चारिदिके प्रचारित
हैल । मेथेव असामान्य रूपलावणेर कथाओ देश विदेशे
रटना हैल । এই अपूर्व मेये नेथिबाव जठ देश विदेशेर
लोक दले दले आसिते लागिल । शिष्यगणसह मुनि ऋषि
आसिते लागिलेन, दले दले ब्राह्मण पण्डित आसिलेन, मेथे
देथिलेन, प्राण भरिया आनीर्षाद करिया चलिा गेलेन । दले
दले बाजागण आसिलेन—मेथे देथिलेन, यार यार या आदरेव
जिनिब छिल, मेथेके उपहार दिलेन, चलिा गेलेन ।

(८)

राजानि लडकीके मंगलके लिये बहुतसे मणि-माण्डित्य
और बहूही सहित सेकडों गायें दान कीं । नाना राज्यके दीन-
दु खियोंको आशाके बाहर धन दिया । सात रात सात दिन
लगातार दान चलता रहा । राज्य राज्यमें लोगोंका अभाव
दूर हुआ । आशासे अधिक्त दान पाकर सभी हाथ जोड़कर
ईश्वरके निकट राजकन्याके दीर्घजीवनकी कामना करते-करते
अपने-अपने देगमें चले गये । राजर्षि जनके कथानाम
का समाचार चारों ओर फैल गया । लडकीके असामान्य
रूपकावण्य की बातें देग विदेगमें रटी जाने लगीं । इत
अपूर्व लडकीको देखनेके लिये देग विदेगवे मनुय दरते इन

आने लगे । शिथीके साथ ऋषिमुनि भी आने लगे । दलके दल ब्राह्मण पण्डित आये, लडकी देखो, जो भरकर आशीर्वाद करके चले गये । दलके दल राजा आये—लडकी देखो, जिसकी जिसकी जो प्यारी चीज़ थी, लडकीको उपहार दे, चले गये ।

नवाँ पाठ ।

पत्र—बाद	पाँउया यहिबे—पायो जायगी,
चाहिल—चाह्य	पाया जायगा
दिग्रा—देकर	केन—क्यो
फोटा—खिला हुआ	शौने—सुनि
चोथ—आँख	आसे—आवे
ना जानि—नहीं जानता	फुराय—पूरा होना
आर०—और भी	हैते—से
कत—कितना (बहुत)	आसेन—आती थीं
मासुखेव—मसुखका	ना हैले—नहीं ता, न होनेपर
हैनि—ये	

(२)

तांशर पत्र प्रजारा । दले दले प्रजा आगिरा मेये देखिन, यार प्राणे या चाहिल, मेयेके दिग्रा आपन घरे चलिया गेल । बाजसडा हैते बडा अस्त.पूरे रागिर कोले यान, मेथाने मुनिपड्डी, अदिपड्डी, मुनिकडा, अदिकडा आसेन नेये देखेन आशीर्वाद कवेन, उगिरा यान । राजेयत्र

बाज्ये बाज्ये लोकेर अभाव युटिया गेल । आशाव अधिक दान पाईया सकलेई षोड़हाते भंगवानेर निकट राजकछार दीर्घजीवन कामना करिते कबिते आपन आपन देशे चलिया गेल । राजर्षि जनकेर कन्यानाभव विववण चारिदिके प्रचारित हईल । मेयेर असानाठ रूपलावण्येर कथाओ देश विदेशे रटना हईल । এই अपूर्व मेये नेथिवार ज्य देश विदेशेर लोक दले दले आसिते लागिल । शिष्टगणसह मुनि ऋषि आसिते लागिलेन, दले दले ब्राह्मण पशुित आसिलेन, मेये देखिलेन, प्राण भरिया आशीर्वाद करिया चलिया गेलेन । दले दले बाजागण आसिलेन—मेये देखिलेन, यार वार या आनवेव जिनिष छिन, मेयेके उपहार दिलेन, चलिया गेलेन ।

(८)

राजानि लडकीके मंगलके लिये बहुतसे मणि-माणिस्य और बहूडों सहित सेकड़ों गायें दान कीं । नाना राज्यके दीन-दु'खियोंको आशाके बाहर धन दिया । सात रात सात दिन लगातार दान चलता रहा । राज्य राज्यमें लोगोंका अभाव दूर हुआ । आशासे अधिक दान पाकर सभी हाथ जोड़कर ईश्वरके निकट राजकन्याके दीर्घजीवनकी कामना करते-करते अपने-अपने देयमें चले गये । राजर्षि जनकेर कन्यानाम का समाचार चारों ओर फैल गया । लडकीके असामान्य रूपभावण्य को बातें देय विदेयमें रटो जाने लगीं । इतने अपूर्व लडकीको देखनेके लिये देय विदेयने मनुय दनते दन

आने लगे । शिथोकि साथ ऋषिमुनि भी आने लगे । दलके दल नान्दण पण्डित आये, लडकी देखी, जी भरकर आशीर्वाद करके चले गये । दलके दल राजा आये—लडकी देखी, जिसकी जिसकी जो प्यारी चीज़ थी, लडकीको उपहार दे, चले गये ।

नवाँ पाठ ।

पर—बाद	पाँया याईवे—पायो जायगी,
चाईल—चाहा	पाया जायगा
दिया—देकर	वेन—क्यों
कोटा—खिला हुआ	शोने—सुने
चाथ—आँख	आसे—आवे
ना जानि—नहीं जानता	हुराय—पूरा होना
आरओ—और भी	हइते—से
कत—कितना (बहुत)	आसेन—आती थीं
मागुवेव—मनुष्यका	ना हइले—नहीं ता, न होनेपर
इनि—ये	

(९)

ताहार पर प्रजारा । दणे दले प्रजा आसिया मेये देधिण, यार प्राणे या चाईल, मेयेके दिया आपन घरे चलिवा गेल । राजसभा हइते बजा अशुःपुरे रागीर कोले यान, सेथाने मुनिपद्मी, ऋषिपद्मी, मुनिकटा, ऋषिकटा आसेन, योग्य देखेन, आशीर्वाद करेन, चलिवा यान । राजेन्द्र

मेयेरा शते शते आसे—नेये देखे—कपेर कत सुख्या
करे । आहा, कप कि कप—येन फोटापम्पयुल, टादेर मत मु
पम्पेर मत टोथ, ननीव मत शरीर ! आहा ! एखनई ए
कप,—बड हईले ना जानि आवओ कत सुन्दर हईवे । मानुये
कि एत कप कथनओ हर ? निश्चयई इनि कौन देव कथा
ना हईले यज्जक्केत्रेई वा पाओया यईवे केन ? एत कपे
कथा ये शोने सेई एकवार देखिते आसे । एकदल आ
एकदल याथ, राजवाडीर लोक आर फुराय ना ।

(८)

उसके बाद प्रजा । दलकी दल प्रजानि आकर लडकी देखी
जिसके मनने जो चाहा (मनमें जो आया) लडकीकी देका
अपने घर चला गया । राजसभासे लडकी भीतर रानीकी गोदमें
गई, वहाँ मुनिर्याकी स्त्रियाँ, ऋषियीकी स्त्रियाँ, मुनि-
कन्याएँ, ऋषिकन्याएँ आईं (उहोने) लडकी देखी, आशीर्वाद
किया, चली गई । रान्यकी सेकडो स्त्रियाँ आईं—लडकी
देखी—रूपकी कितनी सुख्याति जी । अहा ! रूप कैसा रूप
मानो खिला कमलका फूल । चन्द्रमाके समान मुँह, कमलसी
आँखें, मकखन सा शरीर । आहा ! अभी ही इतना रूप (है) बडी
होने पर न जाने और भी कितनी सुन्दर होगी । मनुष्यका
इतना रूप क्या कभी होता है ? निश्चय ही ये कोई देवकन्या
है । नहीं तो यज्ञ-क्षेत्रमें ही क्यों पाई जाती ? इतने रूपकी बात
जो सुनता था वही एकवार देखनेकी आता था । एक दल आता

या, एक दल जाता था, राजमहलके लोग कम नहीं होते थे ।

दसवाँ पाठ ।

शेष—समाप्त	धरिया—पकड़कर
हइते ना हइते = होते न होते	हाटि हाटि—घोरे घीरे
बलिया—बास्ती, कारणसे	पा पा—पैर पैर
राखिलेन—रखा	हाटिते—चलता
केह केह—कोई कोई	छेले मेयेदेर सहित—सड़के
डाकितेन—पुकारते थे	सड़कियोंके साथ
हामाणुड़ि—घिसकना घुटघन	खेलाय—खिलमें
आझूल—संगली चलना	योग दिलेन—साथ दिया ।

(१०)

এই উৎসব আমোদ শেষ হইতে না হইতেই আবার রাজ-কঠাব নামকরণ উৎসব আরম্ভ হইল । লাদলেব নীতিতে (ফালে) পাইয়াছেন বলিয়া কছার নাম রাখিলেন সীতা । জনকের কথা বলিয়া কেহ কেহ তাঁহাকে জানকী বলিয়া ডাকিতেন । সীতা দিন দিা বড় হইতে লাগিলেন । মা বাপের কোল ছাড়িয়া হামাণুড়ি দিলেন । হামাণুড়ি ছাড়িয়া মা বাপের আঁহুল ধরিয়্যা, হাটি হাটি, পা পা, করিতে কবিত্তে হাটিতে শিখিলেন । ক্রমে ক্রমে পুরীর ছেলেমেয়েদের সহিত খেলায় যোগ দিলেন ।

-(१०)

यह उत्सव-आमोद समाप्त होते न होते ही फिर राज कन्याके नामकरणका उत्सव आरम्भ हुआ। हलके फालमें पाई थी इसलिये लडकीका नाम रखा सीता। जनककी कन्या रहनेके कारण कोई कोई उनको जानकी कह कर पुकारता था। सीता दिनों दिन बड़ी होने लगीं। मा बापको गोद छोडकर, घुटनों घसने लगीं। घुटघन चलना छोडकर, मां बापकी उंगली पकड धीरे-धीरे पाँव-पाँव (करते करते) चलना सीखा। धीरे धीरे नगरके लडके लडकियोंके साथ खेलनेमें भी योग देने लगी।

७ ग्यारहवाँ पाठ ।

बड—बहुत, बडा

तिनि—वे

निगरेई—लेकर

काछे—पास

साथे—साथ

कथन०—कभी

लेखा पडा—लिखना घटना

सांसारिक—संसारके

सकल—सभी

याग यज्ञ—होम-यज्ञ

थेला—खेल

काजकर्ष—काम-धन्धा

कतई—कितनाही, बहुत कुछ

पान—पाती थी

आदेश—आज्ञा

प्रवार—तरह

कविया—करके

(११)

बाजा आजकाल राजकार्य बड़ देखेन ना । तनि मेये नियोई ब्यस्त । राजा सभाय यान, मेयेओ तौर सभ्ने याय । याग यज्ञ करेन—मेये तौर काछे बसे । तनि कखनओ मेये नियोे खेला करेन, कखनओ मेयेके लेखा पडा शिखान । कखनओ वा सांसारिक काजकर्म्म देखान—कखनओ वा धर्म उपदेश देन । ईश्वरभक्ति ओ संयम शिक्कार जज्ञ नाना प्रकारेण त्रुत, नियम पालनेर व्यवस्था कवेन । सीता आग्रहेर सहित पितार सकल आदेश पालन करिया कतई येन सूथ पान ।

(११)

राजा आजकल राजके काम बहुत नहीं देखते थे । वह अपनी लडकी को लेकर ही व्यस्त रहते थे । राजा-सभा में जाती (तो) उनको लडकी भी उनके साथ जाती थी । होम यज्ञ करते (तो)—लडकी उनके पास ही बैठती । वे कभी लडकीके साथ खेलते, कभी लडकीको लिखना पढ़ना सिखाते । कभी संसारके काम धन्धे दिखाते और कभी धर्मका उपदेश देते थे । ईश्वरकी भक्ति और संयम-शिक्षाके लिये कितनी ही तरहके व्रत, नियम पालन की व्यवस्था करते थे । सीता आग्रहसे पिताकी सभी आज्ञा पालन करके बहुत कुछ सुख पाती थी ।

बारहवाँ पाठ ।

कारु—यान्त, यका

शुनेन—सुने

হন—হুগ	মনে প্রাণে—জী প্রাণ লগাकर
যখনই—জমী	এবং—আর
তখনই—তমী	লগ্য—লগ্য
স্নেহাপ্লুত—স্নেহমরী	তঁহাদিগকে ধরিয়া—ভর্নে
ভাষায়—ভাষামে	বৈঠাकर
এই—যহী	মিটে—মিটনা
রমণীদের—রমণিয়ঁকী	বায়না—বহানা
কাহিনী—কহানী	হইয়া পডেন—হী পডতী যী
বলেন—কহন্তে য়ে	

(১২)

শুধু ব্রত, নিয়ম পালনের ব্যবস্থা করিয়াই রাজর্ষি কাম হন না যখনই সময় পান তখনই স্নেহাপ্লুত ভাষায় কণ্ঠকে সতী সাবিত্রী, অবদ্ধতী, এই সব পুণ্যবতী আদর্শ সতী রমণীদের কাহিনী বলেন। সীতা মনে প্রাণে সেই সব শোনে এবং সেই সব দেবী চরিত্রের অনুকরণই তাঁহার জীবনের লগ্য বলিয়া স্থির করেন।

আর শোনে তপোবনের কথা। তপোবনের কথা শুনিতে সীতার বড়ই আগ্রহ। রাজসভায় মুনি ঋষি আসিলে তাঁহাদিগকে ধরিয়া তপোবনের কথা শোনে। সেখানে শুনিয়া তাঁর আশা মিটে না। আবার বায়না কবিয়া বাবার মুখে শুনিতে চান। বাবার মুখে তপোবনের সেই পবিত্র মধুর কথা শুনিতে শুনিতে ।। সীতা তস্য হইয়া পডেন।

(१२)

केवल व्रत, नियम पालनकी व्यवस्था करके ही राजर्षि शान्त नहीं होते थे, जभी समय पाते थे तभी स्नेहभरी भाषामें लडकीको सती, सावित्री, अरुन्धती, इन्हीं सब पुण्यवती-आदर्श सती रमणियोंकी कहानी कहते थे। सीता मन प्राणसे वही सब सुनती थी और उही सब देवी चरित्रोंका अनुकरण ही अपने जीवनका लक्ष्य बनाकर स्थिर करती थी।

और सुनती थी तपोवनकी बातें। तपोवनकी बात सुनने में सीताका बड़ा ही आग्रह था। राजसभामें मुनि-ऋषियोंके आनेपर, उन्हें बैठाकर तपोवनकी बात सुनती थीं। वह सुन कर उसका जी न भरता था। फिर बहाना करके पिताके मुंह से सुना चाहती थी। पिताके मुहसे तपोवनकी पवित्र सीठी बातें सुनते-सुनते बालिका सीता तन्मय हो जाती थी।

तेरहवाँ पाठ ।

छाडिया—छोड़कर

मेथाने—वहाँ

थाकिले—रहने

छानाटिव—बच्चेका

भिङ्गने—पीछे

धरिया—पकड़कर

गाबि—फूलका चंगेर

आदन्न करिना—प्यार किया

चलना—चलती थी

झूठे—दो

बसने—बैठते थे

बटि—कोमल, कच्चे

गडेन—पटते थे।

गोती—पत्ता

भूँशि—पीयी

आनिया—लाकर

খান—স্বাতী ঘী

ততক্ষণ—ভতনী দের

বিশেষ—জরুরী

বাজে—কামমঁ

খাওয়াইলেন—স্বিলায়া

কাছে—পাম

এবট্টে—কুছ, ঘোড়া

(১৩)

সীতা তাঁর বাবাকে ছাডিয়া থাকিতে পারেন না । রাজর্ষি ফুল তুলিতে যান—সীতা তাঁর পিছনে সাজি নিয়ে চলেন । জনক পূজা করিতে বসেন—সীতাও ফুল, দুর্বা, চন্দন নিয়ে খেতার পূজায় বসিয়া যান । রাজর্ষি শাজ পড়েন—সীতাও তাঁর পুঁথি খুলিয়া পড়িতে বসেন । জনক পূজা না করিয়া জল খান না—সীতারও ততক্ষণ উপবাস । রাজা যখন বিশেষ কাজে ব্যস্ত থাকেন, সীতা কাছে থাকিতে পারেন না । তখন সীতা বাগানে যান—সেখানে হরিণ ছানাটির গাল ধরিয়া একটু আদব করিলেন, ছুটি কচি পাতা আনিয়া তাকে খাওয়াইলেন ।

(১৪)

সীতা 'अपने पिताको छोड़कर नहीं रह सकती थी । राजर्षि फूल तोड़ने जाते थे—सीता उनके पीछे फूलका चंगेर लेकर चलती थी । जनक पूजा करनी बैठते थे, सीता भी फूल, दुर्वा, चन्दन लेकर खेलकी पूजापर बैठ जाती थी । राजर्षि शास्त्र पढ़ते थे—सीता भी उनकी पोथी खोलकर पढ़ने बैठती थी । जनक बिना पूजन किये खाते नहीं थे । सीता भी उतनी देर उपवास (होता था) । राजा जब

किसी ज़रूरी काममें व्यस्त रहते थे, सीता पास नहीं रहने सकती थी। उस समय सीता बागमें जाती—वहाँ हरिनके बच्चेका गाल पकड़कर प्यार करती, दो कोमल पत्ते लाकर उसको खिलाती थी।

चौदहवाँ पाठ ।

देखिते—देखनेके लिये,	किछूतेहै—किसीसे भी
देखनेमें	गुलिके—(बहुवचन अर्थमें)
चलिलेन—चली, चलती थी	दिगके—
अमनि—घोंघी, इसी तरह	होना—चना
बायना—झिड़	मिटैना—नष्टी मिटती थी
याव—जाऊँगा	जायगा—जगह
गहनागाँटी—गहने कपड़	बलिया गेले—कह जानेपर
धुनिया—खोलकर	किरिते—फिरनेमें
बेशे—बेशमें	बाधा देन—मना किया,
बत—कितना ही	बाधा दिया
हरिगशिष्ठ गुलिके—हरिनके	धुनी—धुनी
बच्चीको	

(१४)

राजर्षि जनक तपोवन देखिते चलिलेन—सीता अमनि बायना धरिलेन, “बाबा ! आमि याव । याव कि ?” अमनि गहना-गाँटी धुनिया, बाधिबालिकार बेशे बापेर पिछने उपस्थित । बाप बत बाधा देन—किछूतेहै शोनेन ना । सीता तपोवन-

देखिते याबेनई । जनक आव बि.करेन—नियेई चलिलेन ।
 आहा, सीता तपोवन देखिया कतई खुसी । ऋषिबानिकाने
 सन्ने खेपा करिया तौर आगोद धरे ना हरिनशिशुगुलिके
 छु'गाछि कचि कचि घास, पाथीगुलिके छोला, ऋषिबालक-बालिका-
 दिगके फल मूल खा'याईया ये तौर आशा मिटे ना । तपोवनई
 येन तौर सुखेर जायगा । सेथाने गेले तौर आर राजबाड़ी
 आगिते ईच्छा करे ना । जनक एक दिनेर कथा बलिया गेले
 सीतार जग्य तिन दिनेओ फिबिते पारेन ना ।

(१४)

राजर्षि जनक तपोवन देखने चले—सीताने योही जिह
 पकड ली—“पिता । मै चलूंगी, चलू क्या ?” उसो समय
 गहने कपडे खोल कर, ऋषि-बालिकाके वेशमें पिताके पोछे
 खडी हो गई । पिताने कितना ही मना किया—कुछ
 भी न सुना । सीता तपोवन देखने जायगी ही । जनक
 अब क्या करे—ले चले । अहा । सीता तपोवन देखकर कितनी
 खुश (हुई) । ऋषि-बालिकाओके साथ खेल करके उसका जो
 नहीं भरता था । हरिनके बच्चोंको दो दो नर्म-नर्म घास,
 पक्षियोंको चना और बालक बालिकाओको फल खून खिला
 कर भी उसका जी न भरता था । तपोवन ही मानो उसके
 सुखकी जगह (थी) । वहाँ जानिपर उसे फिर राजमहल आने
 की इच्छा न होती थी । जनक एक दिनकी बात कह
 सीताके कारण तीन दिनमें भी नहीं फिर सकते थे ।

पन्द्रहवाँ पाठ ।

पाईवार = पानिके

पर = बाद

हय = हुई

राखेन = रखा, रखा था

बडटौर = बड़ीका

छोटटौर = छोटीका

के० = कोई भी

काके = किसका

फेलिया = छोड़कर फेरकर

छायार = छायामें, सायमें

आवदाव = जिह

भाव = प्रेम

(१८)

सीताके पाईवार पर रागीर एकटि मेघे हय, टीहार नाम राखेन उर्मिना । बुशध्वज नामे जनकेर एक भाई छिपेन, तार० छईटि मेघे—बडटौर नाम माणवी, छोटटौर नाम अणु-बोर्ति । तारा० सीतार मन्ने जनकेर नेहेर भागी । सीतार मन्ने तादेर बडई भाव । के० काके फेलिया थाकिते पावेन ना । सीतार छायार थाकिया तारा० सीतार मत्त हईया उठिपेन ।

सीतार शिशुकान गियाछे बान्यकान० याव याव । तार शरीरेर काखि दिन दिन बाडिते लागिन । এখন आर से छकनता नई, से आवदार नई, से बायना नई । मरुव लज्जा आसिया येन सब दूर करिया दित ।

(१५)

सीताकी पानि बाद रागीकी एक लडकी हुई, उसका नाम रखा उर्मिना । बुशध्वज नामकी जनकके एक भाई थे, उनके भी दो कन्याएँ (थी) — बड़ीका नाम माणवी, छोटीका

নাম স্মৃতকীৰ্ত্তি (যা) । বে ভী সীতাৰে সাথ জনকৰে স্নেহকী
ভাগিনী (থী), সীতাৰে সাথ উনকা বড়াহী প্ৰেম থা । কোই
কিসীকো ছোডকাৰ নহী রহ সৰকতী থীঁ । সীতাৰে ছায়াৰে
রহকাৰ বে ভী সীতাৰে ভাঁতি হো গর্ই ।

সীতাৰে বচপন গয়া হৈ, লডকপন ভী জানিপর হৈ ।
উসকে শরীরকী কান্টি দিনো-দিন বঢ়নে লগী । অব শ্রীৰ বহ
চললতা নহী হৈ, বহ জিহ্ব নহী হৈ, বহ বহানা নহী হৈ ।
মধুর লক্ষ্যানে আকাৰ মানো সব দূৰ কাৰ দিয়া ,

সীতাহবাঁ পাঠ ।

প্ৰাণপণে = প্ৰাণভৰকে	মুহূৰ্ত্তও = মুহূৰ্ত্তমৰ ভী
বোনদিগকে = বহিনীকো	পাড়াপড়মীবা = পড়োসী
ভালবাসেন = প্যার কাৰতী থী	পড়োসী সব
জনপরিজন = অধনে পরায়ে পর	থিৰিয়া থাকে = ঘেৰে রহতী থী
ভাবনা = চিন্তা, বিচাৰ	কাৰও = কিসীকা ভী
ভাবেন = বিচাৰে	চোখে = আঁখৰে
গৰীবা = সৰ্ব্বী সব	লুটিয়া = লোটকাৰ
ছাডিয়া = ছোডকাৰ	

(১৬)

সীতা এখন প্ৰাণপণে মা বাপের সেবা শুশ্ৰূষা করেন, বোন-
দিগকে প্ৰাণেব সহিত ভালবাসেন, দাগদাগীদিগকে স্নেহ, জন-
পরিজনে দয়া করেন । সীতা যেন সকলের স্থখ দুঃখের ভাবনা

भावेन । मयीरा मीताके छाडिया एक मुहूर्तुओ थाकिते पावेन ना । पाउपडसीवा सर्वदा ताके धिरिया थाके । पशुपक्षो-
देर पर्गारु मीताई मव । मीता याके पान, ताकेई प्राण दिया
स्नेह बरेन, यत्न बवेन, आदर बवेन । कारओ कष्ट देखिले
मीताव चोखे जल धवे ना, मीताव आकुलताव मीमा थाके ना ।
मीतार व्यवहार देखिया जनक भावेन—ए कि ? ए कि आमार
मीता ? ए तो देवी । ताव शरीरे देवताव मत्त ज्योतिः,
हृदये देव भाव । ये देखे सेई येन चरणे लुटिया पडिते
छाय । आनन्दे राजर्षिर प्राण मन भरिया उठे ।

(१६)

सीता इस समय जी भरके मा वापकी सेवा श्रुद्धा करती
थी, बहिनकी जीसे प्यार करती थी, नीकर मजदूरिनी पर
रुह, अपने पराये पर दया करती थी । सीता मानों सबके
सुख दुःखकी चिन्ता करती थी । सखियाँ सीताकी छोडकर,
एक क्षण भी नहीं रह सकती थी, पडोसिने सदा उसकी घरे
रहती थी । पशु पक्षियों तक को सीता ही सब कुछ थी ।
सीता लिहकी पाती थी, उसको ही जी भरके प्यार करती थी,
यत्न करती थी, आदर करती थी । किसीका भी कष्ट देखनेसे
सीताकी आँखीका पानी नही रुकता था, सीताकी व्याकुलता
की सीमा नही रहती थी । सीताका व्यवहार देखकर जनक
विचारते थे—यह क्या ? यह क्या मेरी सीता है ? यह तो देवी
(है) । इसके शरीर पर देवताओंकी भाँति ज्योति(है) । हृदयमें देव

भाव (है), जा देखता (है), वही मानों पैरोपर लोट पडना चाहता है । आनन्दसे राजपिंका प्राण मन भर उठता (है) ।

सत्रहवाँ पाठ ।

छडइया पडिन = छा गई	देइ = दे
पथे = राहमें	वर = वर
हाटे मारठे = हाटवाटमें	काके = किसकी
जागिया उठिन = जाग उठी	ये = जो
पाइवाव = पानेके	रूटी = यह रत्न
भाट = भाट	कवि = कवि
भापिन = टूटा	एइकप = इसी तरहकी
दिव = दू गा	धनुते = धनुषमें
कार = किसका	छिना = चाप
काछे = पास	पवाइया = पहिनाकर

(१७)

সীতার অসামান্য রূপ, অসামান্য গুণ, এই রূপ-গুণের কথা জগতে ছডইয়া পডিন। যে রাজ্যেই যাও সীতার রূপ-গুণের কথা। পথে ছু'জনে কথা বলিতেছে—সীতার রূপ-গুণের কথা। রাজদরবাবে রাজায় রাজায়, হাটে মার্ঠে, প্রজায় প্রজায়, ঘবে ঘরে, কি বাণী, কি গৃহস্থ, কি ভিখাবিগ্নী, সকলেই বলে—সেই সীতার রূপ-গুণের কথা।

এই অসাধারণ কর্ণাবল্য লাভের আশা, সকল দেশের রাজ-

पुत्रेण प्राणेनै जागिया उठिल । सबलेई सीताके पाईवार जग जनकेर निकट भाट पाठ्ठाईते लागिलेन । कोन कोन दुष्ट राजा बलपूर्वक सीता लाभेर भयओ देखाईलेन । राजर्षि जनकेर चमक भासिल ।

“अमन सोणार चांद मेये कके दिव ? के एर यथार्थ आदर करिते पारिवे ? के এই रत्नेर मूल्य बुखिवे ? सीताके छाडिया आमिई वा केमन करिया थाकिव ?” এই रूप चिन्ता तार मने आसिल । किन्तु चिन्ता करिया कि हईवे ?—“मेये तो विये दितेई हईवे । এখন कार काछे देई ? के उपयुक्त वर ? कके दिले मेये सुखे थाकिवे ? ये रत्नेर जन्तु पृथिवी लालायित, कार अमन बल आछे ये निजबले रत्नटि रक्षा करिते पारिवे ? सेई बलेव परीक्षाई वा केमन करिया करि ?” अरूप चिन्ता करिते बरिते हरधनुष कथा तार मने पडिल । ए पद्यसु केह से धनुते छिला दिते পারে नाई । तनि प्रतिज्ञा करिसेन—
“यिनि हरधनुते छिला पराईया भाजिते पारिवेन, आमि ताहाकेई এই कछारत्न दान करिव ।”

(१७)

सीताका असामान्य रूप, असाधारण गुण (है), इस रूप-गुणकी बातें जगत्में छा गई । जिस राज्यमें जाभी सीताके रूप गुणकी बातें (है) । राष्ट्रमें दो मनुष्य बातें करतें हैं—सीताके रूप गुणकी बातें (है) । राजदरवारमें, राजा-

राजामें, हाटघाटमें, प्रजा-प्रजामें, घर-वरमें, क्या रानी, क्या गृहस्थ, क्या भिखारिनो, सभी कहते हैं—वही सीताके रूप गुणकी बाते ।

इस असाधारण कन्यारत्नके मिलनेकी आशा, सब देवोंके राजकुमारोंके मनमें जाग उठी । सभी सीताकी पानेके लिये जनकके पास भाट भेजने लगे । किसी-किसी दुष्ट राजाने बलपूर्वक सीतालाभका भय भी दिखाया । राजर्षि जनकको नींद टूटी ।

“ऐसी सोनेकी चाँदसी लडकी किसको दूँगा ? कौन इसका यथार्थ भाँदर कर सकेगा ? कौन इस रत्नका मूल्य समझेगा ? सीताको छोड़कर मैं ही किस तरह रह सकूँगा ? यही चिन्ता उनके मनमें उठी । परन्तु चिन्ता करके क्या होगा ?—“लडकी तो व्याहनी ही होगी । अब किसको दे ? कौन उपयुक्त बर (है) ? किसे देने से लडकी सुखी होगी ? जिस रत्नके लिये पृथिवी लालायित है, किसका ऐश बल है जो अपने बलसे (उस) रत्नकी रक्षा कर सकेगा ? उस बलकी परीचा ही किस तरह करे ?” इसी तरहकी चिन्ता करते-करते हरके धनुषकी बात उनके मनमें आई । अमृतक कोई भी उस धनुषमें चाँप न चढा सका । उन्होंने प्रतिज्ञा की—“जो हरके धनुषमें चाँप चढाकर तोड़ सकेगी, मैं उन्हींको यह कन्यारत्न दान दूँगा ।”

अठारहवाँ पाठ ।

पण = प्रण

याहिया = जाकर

सब ढेये = सबसे

रब पड़िया गेल = धूम मच

हरधनु = हरका धनुष

गई

ताला = तोड़ना

(१४)

येमन अपरुप मेये, पृथिवीर सार रत्न सीता—तेमन
ताँर विवाहेर पणो हईल सब ढेये कठिन काज—हरधनु
ताला ।

जनकराजाके प्रतिज्ञाव कथा राज्ये बाज्ये घोषित हईल ।
साँरा ताँट पाँठाईराछिलेन, ताँरा निवाश हईलेन । बीव बनिया
साँदेर शौरव आछे, ताँवा आनन्दित हईलेन ।

बाव आगे के धनुष धरिबे, के आगे याहिया सीता नात
करिबे—एई जग नकन राज्येई गाज गाज रब पड़िया गेल ।

(१८)

जैसी आश्चर्यमयी लड़की, पृथिवीको सार रत्न सीता (है)—
वैसा ही उसकी विवाहका प्रण भी हुआ सबसे कठिन काम—
हरका धनुष तोड़ना ।

जनकराजाके प्रतिज्ञाकी बात राज्य राज्यमें घोषित
हुई । जिन्होंने भाट भेजे थे वे निराश हुए । वीर रहनेके
कारण जिनका गौरव है, वे आनन्दित हुए ।

किसके पहिले कौन धनुष उठायगा, कौन आगे जाकर

সীতা লাভ করিগা—হুসকে লিয়ে' সমী রাজ্যেঁমিঁ ত্য্যারিয়ীকী
ধুম মচ গইঁ ।

তন্নীসব্বা পাট ।

এ পর্য্যন্ত = অবতক	কেহবা = কোইঁ মী
যত = জিতনে	কাজেই = লাচার হী
হাতী = হাত্যো	একে একে = এক এক করকে
সিপাই = সিপাহী	জাঁকজমক = শানশৌকত
মাত্ৰী = হুথিয়ারবন্দ সিপাহী,	আমাই = আনা হী
পহরেদার	মহাভাবনায় = বড়ী চিন্তামেঁ
লোক লস্কর = মনুষ্য ফৌজ	এত মাধব = হুতনী প্যারো
ধমুক = ধনুয	এনে দাও = লা দৌ
পিট্টোন = ভাগনা	প্রভু = হুস্বর

(১৯)

দলে দলে বত রাজা রাজপুত্র সব আসিল । সঙ্গে হাতী,
ঘোড়া, সিপাই মাত্ৰী, লোক-লস্কর যে কত, তার সংখ্যা নাই ।
করি আগে কে ধমুক ধরিবে তা নিয়ে বিবাদ । বোন রাজ
ধমুক দেখিয়াই, পিট্টোন, কেহবা তুগিতে চেফা করিলেন,
কেহবা তুলিলেন, কিন্তু ছিলা দিতে কেহই পারিলেন না—ভাগ্ন
ত দূরের কথা । কাজেই একে একে সব চলিয়া গেলেন ।
সীতার আর বিবাহ হইল না' বেহ বেহ উশ্মিলা, মাগুবী,
শুভকীর্তিকে বিবাহ করিতে চাহিলেন, কিন্তু সীতার বিবাহ

ना हईले तँहादेर विषे किकपे ह्य ? राजपूत्रदेर केवल
जाँकजमव करिया आगई मार हईल ।

राजर्षि जनक महाभावनार मध्ये पडिलेन—आमार एउ
साधेर मेये, तार विषे हईवे ना ? आमि केन एमन प्रतिज्ञा
करिलाम । आमार दोषेई उ एमन हईल ।—राजा निजके
निजे कउ निन्दा करेन । योउहाते मजलनयने उगवानके
डाकेन, आर बहेन, “प्रभु ! सीतार वर कोथाय ? एने दाउ
प्रभु ।”

(१८)

दलके दल जितने राजा, राजपुत्र (ये) सब आयि । साथमें
हाथी, घोड़ा, सिपाही पहरेदार, मनुष्य फौज कितनी (थी), उसकी
सख्या नहीं (है) । किसके पहिले कौन धनुष उठायगा अब
इसीका भागडा (है) । कोई राजा धनुष देखकर ही भागे, किसीने
उठानेकी चेष्टा की, किसीने उठायी, परन्तु कोई भी चाप न
चढा सका—तोड़ना तो दूरकी बात (है) । लाचार हो एक एक
करके सब चले गये । सीताका ब्याह नहीं हुआ । किसी
किसीने उर्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्त्तिसे ब्याह करना चाहा,
परन्तु सीताका ब्याह बिना हुए, उनका ब्याह कैसे हो ?
राजपुत्रोंका केवल शानशौकतसे आना भर ही हुआ ।

राजर्षि जनक बड़ी चिन्तामें पडे—मेरी इतनी प्यारी
लडकी, उसका ब्याह न होगी ? मैंने क्यों ऐसी प्रतिज्ञा की ।
मेरे दोषसे ही तो ऐसा हुआ ।—राजा अपनी आप कितनी

নিন্দা করতী থে । ছাথ জোডকর আঁখোঁমঁ, আঁসু মরে হুए
 ईश्वरको पुकारते भीर कहते थे—“प्रभु ! सीताका वर कहाँ
 (है) ? ला दो प्रभु ।”

বীসবাঁ পাঠ ।

ঠাট্টা = ঠড়া

বল = কছী

সই = সখী

উহা = বছ

বপালে = ভাগ্যমঁ

অদৃষ্ট = ভাগ্য, কর্ম

জুটিবার = জুটনেকা, মিলনেকা ফিরিয়া গেলেন = লীট গয়

যা হয় = জী হৌ, জী জী চাহে

(২০)

সীতাব মনে কোন চাঞ্চল্য নাই । বত রাজা আসিলেন,
 রাজপুত্র আসিলেন, ধমুকে ছিনা পবাইতে না পারিয়া ফিরিয়া
 গেলেন । বাহাবও কখাই সীতার মনে উঠিল না । তা না
 উঠিলে কি ? তবু তাঁহাব বিপদ উপস্থিত—সখীদের কাছে
 তাব থাকিবার উপায় নাই । তারা তাঁকে বত ঠাট্টা করে । এক
 এক রাজা আসে, আর অমনি “সই, তোব ‘বর এলো’ ‘বর এলো’”
 বলিয়া অস্থির করে । যেই চলিয়া যায় অমনি—“সই, তোব
 বপালে বিয়ে নাই” বলিয়া চুঃখ বরিতে থাকে ।

ইহাতে সীতাব মনে কোন উষ্মগ নাই । সীতা বলেন,
 “ভগবান যাবে নির্দেশ করিয়াছেন, তিনি আসিলে অবশ্য পণ
 বনা হইবে । তাঁর ইচ্ছা না হইলে, তোরা যাকে ইচ্ছা ধরিয়

मिले उ हईवे ना ।” सगौरा बले—“तौमार बाबार येमन
शष्टिहाड़ा पण ताते यमराज भिन्न अग्रवर जूटिवार उपाय नाई ।”

सौता बलेन “बाबा आमार डालर जगई पण करियाछेन ।
तौमरा आमाके या हय वन—बाबार वथा केन ?—मा-बाप या
करेन, सखानेर मखलेर अग्रइ करेन । ताते यदि सखान
दूख पाय, उहा तार अदुखेरेर कन ।

(२०)

सीताके मनमें कोई चाञ्चल्य नहीं है । कितने राजा आये,
राजकुमार आये, धनुष पर चाप न चढ़ा सकनेके कारण लौट
गये । किसीकी धात भी सीताके मनमें न उठी । उसके
नहीं उठनेसे क्या (दुःखा) ? तब भी उनकी विपद उपस्थित
(है)—सखियोंके पास अब उनके रहनेका उपाय नहीं (है) ।
वे सब उनसे कितना ठट्टा करती (हैं) । एक एक राजा
आता है, इस तरह “सखी ! तेरा वर आया” “वर आया”
कहकर तड़क करती है । ज्योंही (बड़) चला जाता है त्योंही
“सखी, तेरे भाग्यमें विवाह नहीं है” कहकर दुःख करती है ।

इससे सीताके मनमें कोई उद्वेग नहीं (है) । सीता कहती
हैं—“भगवान् ने जिसको निर्देश किया है उनके आनेपर
अवश्य प्रणकी रक्षा होगी । उनकी इच्छा न होनेपर, तुम सब
जिसको चाहो (उसको) देनेसे तो न होगी ।” सखी कहती हैं
—“तुम्हारे पिताकी जैसी दुनियासे बाहर प्रतिज्ञा है, उससे
यमराज भिन्न दूसरा वर मिलनेका उपाय नहीं है ।”

सीता कहती थी—“पिताने मेरे भलेके लिये ही प्रण किया

হৈ। তুম সব মুম্ভে জো চাহো কহো—পিতাकी बात क्यों (कहती हो) ? मा बाप जो करते है सन्तानके मङ्गलके लिये ही करते है। उससे यदि सन्तान दुःख पावे (तो) वह उसके भाग्यका फल है।”

डूकीसवाँ पाठ ।

प्रकाश = बहुत बडा	वातास = हवा
बाडी = मकान	छुपि छुपि = चुपचाप
तोरण = फाटक	पानाहितेছে = भागती है
कारुकार्ये = कारीगरीके	डुबितेছে = डूबती है
कामसे	उठितेছে = उठती है
थचित = खचा हुआ	उतराती है
चण्डा = चौडा	ढेउये ढेउये = तरङ्गीपर,
पाशे = ओरमें	ढेहुओपर
विकालवेला = तीसरेपहर	गडा = बनाया हुआ, गढाहुआ
उडिया = उडकर	ताडा थाइया = धक्का खाकर
वेडाहितेছে = घूमती है	बाग्रा = बंगीन

(२१)

राजर्षि जनकेर प्रकाश बाडी । सम्मुखेर तोरणটি বেশ सुन्दर । नाना कारुकार्ये थचित । तोरणेर बाहिरे चण्डा रास्ता । रास्तार छुई पाशे सुन्दर, कुलेर बागान । विकाल वेला बागाने नानाविध फूल फुटितेছে, अलिगण कुलेर मधु पाठिवार अन्तु अन्तु करिया उडिया वेडाहितेছে । वातास

फुलेव मधु चुरि करिया, चुपि चुपि पानाहतेहिल, पश्चिम दिवे रात्रा रविर ताड़ा थाईया येन नदीर जले पडिया गेव । जलेर उपर दिया दौडिते दौडिते—एकवार डुबितेहे आवाव उठितेहे । टेडेये टेडेये एक बबि षो शत बबि हईया तार पिहने पिहने छुटितेहे ।

तोरणटि बेशी उच्च नय । ताव सामने फुलेव बागान । बातारे कातारे फुलेर गाछ । गाछे गाछे धूल आर फुलेर कलि—कोनटि फुटिवाछे, कोनटि फोटा फोटा हईयाछे । এই खानि सीतार आपन हाते गडा फूनवन । साँखेर धूसर आंधार आसिवाव आगेई रोज सीता फूलवने देवीव मत बान्दिगके साथे लईया गाछे गाछे जल दिते आसेन । आजओ आसिया-हने । जल देओया শেষ हईयाछे । सीताव हातेव जल पाईया गाछुणुनि येन आनन्दे हासिया उठियाछे ।

(२१)

राजर्षि जनकका मकान बहुत बडा (है) । सामनेका फाटक बहुत सुन्दर (है) । बहुतसे कारीगरीके कामसे खूबा हुआ (है) । फाटकके बाहर चौडा रास्ता (है) । रास्तेके दोनों तरफ सुन्दर फूलका बाग (है) । तीसरे पहरकी बागमें बहुत तरहके फूल खिलते हैं, भौरे फूलका मधु पीनिका लिये गुन् गुन् करके उड़ते फिरते हैं । हवा फूलका मधु चोरी करके चुपचाप भागती थी, (परन्तु) पश्चिम ओर रंगीन सूर्यका धक्का खाकर मानों नदीके जलमें गिर पडी ।

पानीके ऊपरसे दौडती दौडती—एकबार डूबती है, फिर उतराती है। डेह्र डेह्रपर एक रवि मानी सौ रवि होकर उसके पीछे पीछे दौडते हैं।

फाटक बहुत ऊँचा नहीं (है)। उसके सामने ही फूलका बाग (है)। कतारसे फूलके पेड (हैं), पेड पेडमें फूल और फूल की कली—कोई खिली है और कोई खिलने खिलनेपर है। यह सीताका अपने हाथका बनाया हुआ फूलबन है। सन्याका धूसर अंधेरा आनेके पहिलेही रोज सीता फूलबनमें देवीकी भाँति बहिनोको साथ लेकर पेड-पेडमें जल देने आती है। आज भी आई है। पानी देना समाप्त हो गया है। सीताके हाथका जल पाकर पेड मानों आनन्दसे हँस उठे हैं।

सावित्री ।

वार्ड्सवाँ पाठ ।

घूम घूम = घूम घूमकर

देखाते = दिखाने

लागिबन = लगे

फिर = एक प्रकारकी चिडिया

गयूर = मोर

नाचते = नाचता है

आला = रोशनी

देखते = देखती हो तो ?

आड = आड, अन्तराल

पीछे = पीछे

शराते शय = खोना पडता है

दिक्क = तरफ

एक दृष्टिते = टकटकी बांधकर

चेय आछेन = देख रही है

शंशय = हवामें

पाँउ = पत्ता

आज ओ कि देखेन = आज	नडे = हिलता है
वह क्या देखेंगी	बुद = कलेजा
बैपे उठे = काँप उठता है	छिनिये = छीनकर
शुदनो = सुखा हुआ	निठे = नैजानिके लिये
बरे पडे = झुंझकर गिरता है	आसूटे = आता है

सावित्री ।

(२२)

ए दिक् ओ दिक् घुरे' घुरे' सत्यवान सावित्रीके बनेर शोभा देखा'ते लाग्लेन । ए देख, ए घिपे उड़्छे, अशोक डाले मयूर नाछे,—ओ सावित्री, देख्छे त्ते ?—सावित्री आज ओ कि देखेन । चोखेर आड बबले पाछे शाराते हय, एही भये तिमि स्वामीर मुखेर दिक्के एकदृष्टिते चेये आछे । हाँवाय गाछेर पात्रा नडे,—सावित्रीव बुद बैपे उठे ! शुदनो पात्रा ब'रे पडे—सावित्री भावो, ए बुधि के सत्यवानके छिनिये निठे आसूछे !

(२२)

हधर उधर घूम घूम कर सत्यवान सावित्रीको बनकी शोभा दिखाने लगे । यह देखो, यह फिङ्गे उठता है, अशोककी डालपर मोर नाचता है—ए सावित्री, देखती हो तो ?—सावित्री आज वह क्या देखेंगी ! आँखकी ओट करनेपर खोना पड़ेगा इसी भयसे वह स्वामीकी मुँहकी ओर एकदृष्टिसे देख रही है । हवासे पेड़का पत्ता हिलता,—सावित्रीका

कलेजा काँप उठा। सूखा पत्ता झडकर गिरनेसे—साबित्रो यह समझकर कि कोई सत्यवानको छोन लेनेके लिये आता है चिन्तित हुई ।

तेईसवाँ पाठ ।

शथ = हाथ	नेमे एग = उतर आओ
आपन = अपना	कुरिये गेग = बीत गया
छेपे थावन = दबा धरतो है	आंधार = अँधेरा
डय डय कबूटे = डर मालूम होता है	थगान याय = काटो जाय
काँठ = लकड़ी	बुथाय = दर्दसे
बेठे = काटकर	माथार = माथेकी
चल = चलो	नाकग = भयानक, जोरकी कष्टकर
बाटूते = काटनेके लिये	छूकूटू = छटफट
उठलैन = उठे, चढे	टले पडलैन = टलक पडे
उलाय = नोचे	देश = शरीर
नाडिये = खुडो होकर	कालि = काला
पाने = ओर	हये गेछे = ही गया है
बइलैन = रहो	मुख दिये = मुँहसे
हगेछे = हुआ है	बेना उठछे = फीन निकलता है
डेके डेके = पुकार	आथिर पाता = आँखकी पलक
पुकार कर	

(২৩)

অমনি তিনি দ্বিগুণ জোরে স্বামীর হাত আপন হাত চেপে ধরেন। সান্নিহী বলালন—আমার কেমন ভয় ভয় কর্চে, তুনি শীঘ্র কাঠ কেটে ঘরে চল। সত্যবান আন দেবিনা ক'বে কাঠ কাটতে গাছেব উপব উঠলেন। গাছের তলাব দাঁড়িয়ে সান্নিহী স্বামীব মুখে পানে চেয়ে রইলো। “কাটা ডালের স্তূপ হয়েছে, কাঠের বোকা ভারি হয়েছে—এখন নেমে এস।” সান্নিহী গাছেব তলা থেকে ডেবে ডেবে বলছেন—নেমে এস, এখন নেমে এস। বেশা যে ফুবিয়ে গেল, বনের পথ অস্বাভাবিক হল—এখন নেমে এস।

সত্যবান গাছের উপর থেকে এব পা ছ পা কবে নীচে নেমে আস্চে, এমন সময়—বিবিব লিপি যা খণ্ডায় যায়—দাবণ মাথার ব্যথায় ছুট্কাট্ ক'বে তিনি গাছেব তলায় চ'লে পড়লেন। সান্নিহী ছুটে এসে দেখেন—স্বামীর দেহ কালি হ'য়ে গেছে, মুখ দিয়ে ফেনা উঠছে, অস্বাভাবিক পাতা পড়ে না—হায় হায়, এ কি হল!

(২৪)

যদি বিচার কর সমনী দুই লীরনে স্বামীকী দ্বায় অধনী হাথমে কাপকর পদভ নিয়া। সান্নিহী কহা—“মুখে কীসা ময় মালাম হীতা হি, স্তম জব্দী নকহী কাটকর ঘর বন্দী। সত্যবান আর দীর ন করনী লকহী কাটনীকি নিবে পিটপা চটে। বেহী গীষে খণ্ডী হীকর সান্নিহী স্যামীকি মুঁচকী ঘর

देखती रही । “काटी हुई डालका ढेर होगया है, काठका बोझा भारी होगया है—अब उतर आओ ।” सावित्री पेडके नीचेसे पुकार पुकारकर कहती है—“उतर आओ, अब उतर आओ । समय होगया, बनकी राह अँधेरी हुई, अब उतर आओ !”

सत्यवान पेडके ऊपरसे एक पैर दो पैर करके नीचे उतर आते हैं, ऐसे ही समय—भाग्यका लिखा हुआ नहीं टाला जाता—माघके भयानक दर्दसे छटपटाकर वह पेडके नीचे टनक पड़े । सावित्रीने दौडकर देखा—खामोजा शरीर काला हो गया है, मुहँसे फेन निकल रहा है, आँखकी प्रलक नहीं छिलती—हाय, हाय, यह क्या हुआ !

चौबीसवाँ पाठ ।

एक क्षण = एक ओर

मेह = शरीर

बोणव बधु = दुलहिन

एना = प्रकीर्णी

मेटे = फटकर

कागा = रोना

उप्ले = उयलकर

बुर छेपे = कलेना दवाकर

शेणान = सियार

जाहटे = पुकारता है, बोधता है

बाहुड = चमगादड

हुलटे = डोलता है

खने पडटे = खिमक पडा है

उपुत्र = दोपहर

केटे गेव = कट गई

गाडा = शब्द

शक्त = कडा

ह ये = होकर

आगले = वचाये

(२४)

एक धारे काठेर नोका, एक धार स्वामीर देह—बोणेर
वधु नाबित्री এই आंधार बने एकता এখন कि करणें !
बुक फेटे तीर कागा उग्ले उठ्ल—झोर बाब, तिन बुक
छेपे स्वामीर देह कोले डूले बनेर भित्तव बांसे रईलेन ।

आंधार पन्देर आंधार रात । गुरागुट्टि आंधारेर गाके
शेगाल डाक्छे, बाहुड छल्छे, गाछेर पाता खने पड्छे—
गाबित्री स्वामीर देह बुके छेपे स्वामीर गुर्रि ध्यान कव्छेन ।
देख्छे देख्छे छुपूर रात केटे गेल, तबु त्ते तीर साडा
नेई—काठेर मत शल ह'ये गाबित्री स्वामीर देह आग्ले
बठेलेन ।

(२४)

एक ओर काठका बीभा, एक ओर स्वामीका शरीर—
दुलछिन साबित्री इस अंधेरे बनमें अकेली इस समय क्या
करिगी । कलेजा फटकार लनको रुलाई आई, झोर
करके, कलेजा दबाकर, वच स्वामीके शरीरको गोदमें उठा
कर बनमें बैठी रह्यीं ।

अंधेरेपल्लकी अंधेरी रात (६) घाघीर अन्धकारमें सियार
बोन्तता है, चमगादड़ डोलता है, पेडका पत्ता खिसक पडता
है—साबित्री स्वामीका शरीर कलिजेचे दबाकर स्वामीकी
मूर्त्तिका ध्यान करती है । देणते देणते दोपहर राति बीत
गई, तब भी तो उगका गच्छ नहीं—(सुन पडा है)

କାଠକୀ ଭାଁତି କଠୋର ଛୋକର ଚାବିରୀ ସ୍ଵାମୀକି ଶରୀରକୀ ରକ୍ଷା କିସି ରହି ।

ଓଘା ।

ପଞ୍ଚୀସବାଁ ପାଠ ।

କ୍ରମେ କ୍ରମେ = ଧୀର-ଧୀର

ଦିନ ଦିନଇ = ଦିନୋ-ଦିନ

ଶିଶୁ = ବଞ୍ଚା

ବାଢିତେ ଲାଗିଲ = ବଢ଼ନି ଲଗା

ଏକଟୁ ଏକଟୁ କବିସା = ଘୋଛା

ଲୟ = ଲିତା ଥା

ଘୋଡ଼ା କରକି

ଚାନ୍ଦପାନା = ଚାନ୍ଦ ଶରୀରା

ଏକଟୁଖାନି = ଛୋଟା, ଘୋଛା

ଜୋଛୁ ନା ଯାଆ = ଜ୍ୟୋତି ଭରା

ଜ୍ୟୋତ୍ସ୍ନା ପବିପୂର୍ଣ = ଜ୍ୟୋତି

ବିଲାଇତେଇ = ବାଟନିକି ଲିକି

ଭରା, ଚାନ୍ଦନୀ ଭରା

ସେକପ = ଗୁଣ୍ଡ ଚରଫ

(୨୧)

କ୍ରମେ କ୍ରମେ ଶିଶୁ ବଞ୍ଚାଟି ବଢ଼ ହଇସା ଉଠିଲ । ପ୍ରତିପଦେର ଚନ୍ଦ୍ର ସେମନ ପ୍ରଥମ ଏକଟୁଖାନି ଥାବେ, ଆବ ପ୍ରତିଦିନଇ ଏକଟୁ ଏକଟୁ କବିସା ବଢ଼ ହଇସା ଜ୍ୟୋତ୍ସ୍ନା ପବିପୂର୍ଣ ଓ ମନୋହର ହଇସା ଉଠେ, ହିମାଳୟେବ ଶିଶୁ ସେଫେଟିଠେ ସେକପ କ୍ରମେ କ୍ରମେ ବଢ଼ ହଇସା ଉଠିଲ । ଦିନ ଦିନଇ ଉହାର ମୌଦର୍ଯ୍ୟ ବାଢିତେ ଲାଗିଲ । ସେଫେଟିବେ ସେ ଦେଖେ, ସେହି ଆଦର ବେ, ସେ ଦେଖେ, ସେହି କୋଲେ ଲୟ । ସେମା ଚାନ୍ଦପାନା ମୁଖ, ତେମନି ଜୋଛୁନାଯାଆ ଶରୀର, ତା ଆଦାର ନରୀବ ମତ କୋମଳ, ଏମା ମୋସ ବି ଆର ହୟ । ମନେ ହୟ ସେନ ପୁ ଥି

बीते आनन्द बिनाइतेइ भगवान् मेयेटीके आनन्दधाम थेके पाछिये दियेछेन ॥ हिनाणयेव बाडीते रोज्ज वल्लु बाक्कवगण आसिते लागिल । ताहारा त मेयेर कप देथिया अबाक । पर्ववत्तेव मेये विना, ताई सकले आदर करिया उहावे "पार्वती" बलिवा डबित ।

पार्वतीव मा बापेव कथा आर कि बलिब । पार्वतीके पेये ताँहावा येन हाते टाँद पेगेछेन । मेयेर दिके चाहिले, ताँहादेर आर बुधा, दुःखा थावे ना । एक मिनिट मेयेटी छोखेव ताँडाल हईले ता बाप येन अश्विब हईया पड़े ।

उमा

(२५)

धीरे धीरे वञ्ची कन्या बडी छोगई । प्रतिपदाका चन्द्र जिस तरह पढनी छोटासा रहता है और रोज रोज़ घोडा-थोडा बडा होकर ज्योति भरा और मनोहर हो जाता है, हिमानयकी वञ्ची कन्या भी उसी तरह धीरे धीरे बडी छोगई । दिनों-दिन उसका सौन्दर्य बढनी लगा । लडकीको जो देखता है, वही प्यार करता है, जो देखता है, वह गोदमें लेता है । जिस तरह चाँदमरोखा मुँह, वैसाही ज्योतिभरा शरीर है, यह फिर मरुतनसा कोमल है । ऐसी लडकी क्या दूसरी होती है ? मगसे जाता है, मार्गों पृथिवीमें आनन्द बाँटनेके लिये ही भगवान् लडकीको आनन्दधामसे भेज दिया है ॥ हिमानय

मकानपर रोज बग्घु-वान्धवगण आने लगे । वे तो लडकीका रूप देखकर अवाक् (हो गये) । पर्वतको लडकी है कि नही इसीसे सभी प्यार करके उसे "पार्वती" कहकर पुकारते है ।

पार्वतीके माँ बापकी बात और क्या कहूँगा । पार्वती को पाकर उन्होने मानो हाथमें चाँद पाया है । लडकीकी ओर देखने पर उन्हे फिर भूख-प्यास नही रहती है । एक मिनिट लडकी आँखीकी भोट होने पर माँ बाप मानो अस्थिर हो जाते है ।

छव्वीसवाँ पाठ ।

- | | |
|---------------------------|----------------------------|
| वाँटी = कटोरी | माँपा माँपा = सफेद सफेद |
| विभूक = सीपी, चम्मच | वालिलुलि = बालू |
| एने दितेन = ला दिया | रुपार गत = चाँटीके समान |
| पूहुल थेनार = गुडिया | शिक्मिद् करे = चमकता था, |
| खेननेका | भिलमिलाता था |
| पूहुल = गुडिया, पुतली | वालिराशिते = बालूके ढेरमें |
| जाँटीनेर = साटगका | परिदेशन करे = परोसती थी |
| छाँमा = कपडा, पोशाक | आथ आथ अररे = तीतली |
| बेगुने = बँगनी | भापामें |
| अन्मन् = भिलमिल | बयग = अवस्था, उम्र |
| बहिया छगियाहे = बह चली है | |

(२७)

बाप आदर करे मेररेर कुछ सोणार छनेर वाँटी

ও হীবার খিনুক এনে দিলে। পার্বতী যথা আধ আধ স্বরে
 “না” বলিত, তখন মোকার আনন্দ দেখে বে। ক্রমে পার্বতীর
 বয়স ৩৪ বৎসর হইল। এখন ত পুতুল খেলার সময়। পার্ব-
 তীর পুতুলের অভাব কি? কত সোণাব পুতুল, রূপার পুতুল,
 ফটিকের পুতুল, আব তাদের কত বকমের জামা। মাটিনেব জাণা,
 রেশমের জাণা, লাণা, নীল, বেগুনে, কত বঙ্গের জামা, আব তার
 মাঝে হীনা, মাণিক, গল্‌মন্‌ করে। পার্বতী খেলাব সাথীদের
 সঙ্গে পুতুল খেলা করে। পুতুলের বিয়ে হয়, আর কত আমোদ
 প্রমোদই বা হয়। রাজবাড়ীর পাশ দিয়াই গঙ্গা নদী বহিয়া
 চলিয়াছে। উহাব তীরে সাদা সাদা বালিওচি রূপার মত ক্লিফ-
 মিব্‌ করে। পার্বতী সখিগণ লইয়া সেই বাসিরশিতে খেলা
 করিত্তে যাব। সোণার ঠাডিতে বাসি দিয়া ভাত রাধে, আব
 পুতুলের বিয়ের সময় সবলকে নিমন্ত্রণ করে খাওয়ায়। বরের
 বাডী ঠাইতে কত লোকজন আসে, পার্বতী সোণাব গাশে বালির
 ভাত ও পাতাব তরকারী পরিবেশন করে।

(২৬)

बापने प्यार करके लहक्रीके लिये सोनकी दूधकी कटोरी
 और हरीका चमच ला दिया। पार्वती जब तोतले स्वरमें
 “नाँ” कहती (थी) उस समय मेनकाका आनन्द कौन देखे ?
 धीरे-धीरे पार्वतीकी अदृष्ट्या तीन चार वर्षकी हुई। अब तो
 गुड़िया खिलनीका समय (है)। पार्वतीको गुड़ियोंका क्या अभाव
 (है) ? कितनी ही सोनकी पुतली, चांदीकी पुतली, फटिककी

तलो और उनको कितने रंगकी पोशाक, साटनकी पोशाक, शमकी पोशाक, लाल, नीली, बैंगनी कितने रङ्गको पोशाक और सके बीचमें हीरा, माणिक, भिनमिल करता है । पार्वती खेलती साधिनोके साथ गुडिया खेलती है । गुडियोंका व्याह होता और कितनीही हँसी खुशी होती है । राजमहलके पास ही छानदो बह रही है । उसके किनारे पर सफेद सफेद बालू दोको तरह भिलमिल करती है । पार्वती सखियाका लेकर भी बालूके ढेरमें खेलने जाती है । सोनेकी चाँडीमें बालू मालकर भात सिजाती है और गुडियोंके व्याहके समय बालूको निमन्त्रण करके खिनाती है । वरके मकानसे कितनेहो अनुप्य आते है, पार्वती सोनेकी थालीमें बालूका भात और सकेकी तरकारी परोसती है ।

सत्तार्द्धसवाँ पाठ ।

गोमहि-वाडी = जँवाइके घर

भात = रोना

शशाशुनाय = खेल-कूदमें

शेखिवात्र = सीखनेका

उकमा = शिक्षा

हना = युक्त अक्षर

मानान = वर्ण-विचार

शय = समाप्त

हविव = तखीरको, तखीरदार

बहे = किताब

आगिया दिलना = ला दी

मे गुलि = बह सब

शाने = हँसती थी

शिलिउठ चाय = निगलना

चाहता है

(২৭)

আব সেয়ে পুতুলটাকে ডামাঠি লাড়ী নিয়ে গেলে, পাৰ্শ্বতী
 ভীষা আশঙ্ক করে । সে দিন বাড়িতে আর ভাত খায় না ।
 এমনি ভাবে খোঁপাধুলায় পার্শ্বতীর দিন চলিতে লাগিল । এসব
 পশিষা বাপ মায়ের মনে আর আশঙ্ক ধরে না । ক্রমে পার্শ্বতীর
 লেখাপড়া শিখিবার সময় হইল । সে রাতকথা, তার শু
 আর গুলে গিয়া পড়িতে হইবে না । পরবর্তরাজ বাড়ীতেই
 গুরুগা রাখিয়া দিগে । পার্শ্বতী সোণার পাতায় হীশর কলম
 লিয়া 'ক' খ' লিখিতে লাগিল । ছয় নামের মধ্যেই ফলা বাঁান,
 শেষ হইয়া শেষ । এখন শু ছবির বই পড়িবার সময় । বাপ
 আদর করিয়া শু সুন্দর সুন্দর ছবির বই আনিয়া দিলেন ।
 পার্শ্বতী লেগলি দেখে, আর হাসে । কি সুন্দর ছবি । একটা
 বেড় ফিনা একটা হাতী গিলিতে চায় । বেড়ের কি সাহস !
 পার্শ্বতী ছবি দেখিয়া হাসে, আর গনে মনে ভাবে, বেড় কি
 কখনও হাতী গিলিতে পারিবে !

(২৩)

শ্রী কন্যা গুড়িয়ীকী জঁধাঠীকী ঘর সী জানিপর পার্বতী
 বীনা আরগা করতী হৈ । শুধু দিগ রাগকী ফির ভাত গছী
 খাতী । হমী ভাবনে খেলকুদমি পার্বতীকী দিন জীগনে কগী ।
 যহ সব ঐখকার বাপ মাকী মগমি আনন্দ গছী সমাতা ।
 ক্রমমে পার্বতীকী লিখনা পটনা ঐখনীকী সমগ্র হুখা ।
 যহ রাজকন্যা (হৈ), শুধে যী স্কুল জাকর পটনা ল

होगा । पर्वतराजने घरमें ही गुरुपानो रत्न दी । पार्श्वती सोनेको पट्टीपर हीनेदी कानभसे 'क' 'ख' लिखने लगी । ह महीनेके बीचमें ही समुक्त अक्षर और वर्ण-विचार समाप्त हो गया । अब तो तस्योद्धार किताब पढनेका समय (है) । पिताने प्यार करके कितनीही सुन्दर-सुन्दर तस्वीरयानी किताबें ला लीं । पार्श्वती यह सब देखती और हँसती थी । कौसी सुन्दर तस्वीर है । एक बेग, एक छाथी निगलना चाहता है । बेगका कौसा साहस है । पार्श्वती तस्वीर देखकर हँसती (है) और मन-ही-मन विचारनी (है), बेग क्या कभी छाथीको निगल सकेगा ।

अट्टाईसवाँ पाठ ।

माना = बहुतसे

कूमोत्र = मगर

रकमर = तरछके

वेजम = बेङ्ग

छडा = पद्य

नाककाटा = नकटा

टिये = तोता

मनायोग दिया = जी लगाकर

पाथी = पत्ती

देगाक = अहङ्कार

थुक्राणी = छोटी लडकी

छुष्टोमि = बदमाशो

गल्ल = कहानी

भागवाने = प्यार करे

(२८)

छविर वईउनिउत नानारकमेर छडा ओ गल्ल आछे । टिये पाथीर छडा, थुक्राणीर विवेर छडा, कत रकमेर छडा । आव मल ? शोग्रांग ओ कुरावेर गल्ल, वेजम वेजमीर गल्ल, नाककाटा

राज्यार गल, शीत वायुव गल, कत गलई वा पार्वती शिथिया
 येनिल । पार्वती खुव नायोग दिया शेखा पडा करित ।
 राजकथा हईसे कि हवे, तार एकटुवओ देमाक हिन ना । से
 एकमाके खुव भक्ति करित । एकमा याहा बलितेन, से ताहाई
 करित । पडार समय एकटुवओ दुष्टीमि करित ना । काहारओ
 निकटे मिथ्या कथा बहित ना । एमन सेयेके के ना डाल
 वासे ? तौमराओ यदि मर दिया लेखापडा कर एव, सर्वदा
 गता कथा बल, मरलेई तौमादिगके भक्तवागिने ।

(२८)

तस्वीरवाली किताबीमि कितनी तरहकी कविता और
 कहानी हैं । तोला पत्तीकी कविता, छोटी तडकोक व्याहपर
 कविता, कितनी ही तरह की कविता (हैं) और कथा-
 नियाँ ? सियार और मगरकी कहानी, बँग बँगीकी कहानी,
 नकटे राजाकी कहानी, शीत वसन्तको कहानी, कितनी ही
 कहानियाँ पार्वतीने सीख डालीं । पार्वती खुब जी लगा कर
 लिखना पढना करती थी । राजकथा होनीसे क्या होगा,
 उसको कुछ भी अच्छा न था । वह गुरुभानीकी खुब भक्ति
 करती थी । गुरुभानी जो कहती थी, वही करती थी । पढ-
 नेके समय दुःख भी बदनामी नहीं करती थी । किसीसे झूठ
 नहीं बोलती थी । ऐसी लड़कीको कौन नहीं प्यार करता ?
 तुम लोग भी यदि जी लगाकर लिखना-पढना करो और
 सदा सच बात बोलो, (तो) सभी तुमलोगोंको प्यार करेंगे ।

ভনোসব্বা পাঠ ।

গানও = গান্ধা ভী

রাঁধিতে = রসোই বনানা

তখনকার = তম সমবক্ষী

ছাডা = ছোডকর, অলাবি

শিখিয়াছিল = শীখা থা

বাবুগিবি = বাবু ঘানী

কাটাইতে = কাটন

স্বামীকে = পতিকী

ছুটাছুটি = দীড়-ধূপ

লুকোচুরী = লুক্কাঘোরী

বালাকাল = লেডকপন

যৌবন = জঘানী

চলিয়া গেল = বীত গয়া

(২১)

পার্বতী যে শুধু লেখাপড়া শিখিয়াছিল তা নয়। ওনমা তাকে গানও শিখাইয়া ছিলেন। সন্স্কার সময় পার্বতী যখন গুণ্ণমার নিকট গান করিত, তখন তাহার স্মৃতিস্তর শুনিয়া সকলে মুগ্ধ হইয়া যাউত। দেবতাও এমন সুন্দর গান কবিত্তে পারেন না। গান ছাডা পার্বতী রাঁধিতেও শিখিয়াছিল। তখনকার বাটবতারী কেবল বাবুগিবি করিয়া দিন কাটাইত না। বিয়েব পর তাহার হাতে রাঁধিয়া স্বামীকে খাওয়াইত। পার্বতী যে শুধু পুত্ৰ খেলা করিত, তা নয়। অনেক সময় সখীদের সঙ্গে ছুটাছুটি করিত, লুকোচুরি খেলিত, আরও নানা রবনের খেলা খেলিত। ইহাতে তাহার শরীবে যেমন শক্তি হইয়াছিল, তেমন নৌদর্গোরও বৃদ্ধি হইয়াছিল। এইকপে পার্বতীর বালাকাল চলিয়া গেল এবং যৌবন আসিয়া পড়িল।

(२८)

पार्वतीने केवल लिखना पटना सीखा था, वही नहीं । गुरुग्रानोने उसको गाना भी सिखाया था । सम्याके समय पार्वती जब गुरुग्रानीके पास गाती (थी) उस समय उसका मीठा स्वर सुनकर सभी सुग्ध हो जाते थे । देवता भी ऐसा सुन्दर गाना नहीं गा सकते थे । गानके अलावे पार्वतीने (भोजन) पकाना भी सीखा था । उस समयकी राजकन्याएँ केवल बाबुग्रानो करके दिन नहीं काटती थी । विवाहके बाद वे अपने हाथसे पकाकर स्वामीकी खिलाती (थी) । पार्वती केवल गुडिया खेलती थी, सो नहीं । बहुत बार सखियोंके सङ्ग दौड धूप करती, लुका-चोरी खेलती, और भी नाना प्रकारके खेल खेलती थी । इससे उसके शरीरमें जैसे शक्ति हुई थी, वैसा सौन्दर्य भी बढ़ गया था । इसी तरहसे पार्वतीका सहकपन बीत गया और जवानी आ पहुँची ।

तोसवाँ पाठ ।

बाढ़िया उठिल = बढ़ उठा

अँकिश्रा त्राथियाह = चङ्कित

विदमिउ उठेया उठे = खिल

कर रखी है

उठता है

गायेव = पैरकी

छेजाना = चेहरा

अश्रुतिउ = उँगलीमें

छिउरुअर = चिपकार, तस्वीर

शक्तिश्रा याईउ = इट जाती

बमानेवाना

वोध शईउ = मालम होता था

আল্‌তার রস = অলতীকা রস	হাঁটু -- = চুড়নি
বাহির হইতেছে = নিকাল রহা	সক = পতলা
	হু শিরীষ = নিরীষ
মাটিতে = মিটীমি	কুসুম = ফুল
শ্বলপদ্ম = ভূমিকামল	

(৩০)

পার্বতীর শবীর স্বভাবতঃই সুন্দর । এখন যৌবনকাল—
 তাহার শবীরের লাবণ্য যেন আবণ্ড বাড়িয়া উঠিল । সূর্যের
 কিরণে পদ্ম যেমন বিকসিত হইয়া উঠে, নবর্যৌবনের উদয়ে
 পার্বতীর শবীরও তেমনি অপূৰ্ব শোভা ধারণ করিল । তখন
 তাহার চেহারা দেখিলে মনে হইত যে, কোন চিত্রকর যেন এক
 খানা ছবি আঁকিয়া রাখিয়াছে । পার্বতীর পায়ের অঙ্গুলিতে যে
 নখ আছে তাহা এমন লাল এবং এমনই উজ্জ্বল যে, সে যখন
 হাটিয়া যাইত, তখন বোধ হইত যেন নখ হইতে আল্‌তার রস
 বাহির হইতেছে । আর মাটিতে উহার এমনই জ্যোতিঃ হইত
 যে, লোকে মনে করিত, মাটিতে বুদ্ধি শ্বলপদ্ম বুটিয়াছে ।
 পার্বতীর হাঁটু দুটি যেমন সুশ্রী, উপরে গোল এবং পরে ক্রমাশঃ
 সক হইয়া আসিয়াছে । উহাতে লাবণ্যই বা বত । লোকে
 কথায় বলে যে শিরীষ ফুলের মত কোমল জিনিষ আব কিছুই
 নাই । কিন্তু পার্বতীর বাহু দুটি শিরীষ কুসুম অপেক্ষাও কোমল ।

(৩০)

পার্বতী লোকা শবীর স্বভাবতঃই সুন্দর (৩১) । স্বপ্ন যৌবন

का समय (है) — उसके शरीरका लावण्य मानो औरभी बढ उठा । मूर्यकी किरणसे कमल जैसे खिल उठता है, गये यौवनके सदयसे पार्वतीके शरीरने भी वैसीही अपूर्व शोभा धारण की । उस समय उसका चेहरा देखनेसे जोमें घाटा था कि, किसी चित्रकारने मानों एक तस्वीर चित्रित कर रखी है । पार्वतीके पैरकी उँगलोंने जो गख थे, वह ऐसे गान और ऐसे उज्वल थे कि, वह जिस समय चलते घो, उस समय मानूम होता था, भासों नखसे चलते का रस निकल रहा है । और मिट्टीमें उसकी ऐसी व्योमि होती थी कि, मनुष्य समझते थे कि मिट्टीमें मानूम होता है स्थलपद्म विम्बा है । पार्वतीके घुटने दोनों कैसे सुन्दर हैं । ऊपर गोल और फिर क्षमश पतने होते आये हैं । उसमें रीचय्य भी कितना (है) । लोग बातोंमें कहते हैं कि सिरीस फूलके समान कीमल पदार्थ और कुछ नहीं (है) परन्तु पार्वतीकी दोनों बाँहें सिरीस फूलसे भी अधिक कीमल (है) ।

एकतीसवां पाठ ।

गनास = गलेमें

गूढांशुलि = मोती

दृग्ना = तुलना, उपमा

अ = भौंह

पेङ्कन त्रिक = पीछिकी ओर

धृत्रिश वेङ्गान = घूमते फिरते हैं

शट्टिउ शट्टिउ = घूमते घूमते

गमडा = बल, शक्ति

আত্মতার রস = অলতিকা রস	হাঁটু-- = চুটন
বাহির হইতেছে = নিখাল রহা	সক = পতন্যা
	ঐ শিরীষ = নিরীষ
মাটিতে = মিট্টীমি	বুহুম = ফুল
শ্বলপদ = ভূমিকামল	

(৩০)

পার্বতীর শরীর স্বভাবতই সুন্দর। এখন যৌবনকাল—
তাহার শরীরের লাবণ্য যেন আবণ্ড বাড়িয়া উঠিল। সূর্যোর
কিরণে পদ্ম যেমন বিকসিত হইয়া উঠে, নবযৌবনের উদয়ে
পার্বতীর শরীরও তেমনি অপূর্ব শোভা ধারণ করিল। তখন
তাহার চেহারা দেখিলে মনে হইত যে, কোন চিত্রকর যেন এক
খানা ছবি আঁকিয়া রাখিয়াছে। পার্বতীর পায়ের অঙ্গুলিতে যে
নখ আছে তাহা এমন লাল এবং এমনই উজ্জ্বল যে, সে যখন
হাটিয়া যাইত, তখন বোধ হইত যেন নখ হইতে আলতার রস
বাহির হইতেছে। আব মাটিতে উহাও এমনই জ্যোতিঃ হইত
যে, লোকে মনে করিত, মাটিতে বুকি শ্বলপদ বুটিয়াছে।
পার্বতীর হাঁটু দুটি কেমন সুশ্রী, উপরে গোল এবং পরে ক্রমশঃ
সক হইয়া আসিয়াছে। উহাতে লাবণ্যই বা কত। লোকে
বখায় বলে যে শিরীষ ফুলের মত কোমল ভিনিষ আর কিছুই
নাই। কিন্তু পার্বতীর বাহু দুটি শিরীষ বুমুম অপেক্ষাও কোমল।

(৩০)

পার্বতীকা শরীর স্বভাবতই সুন্দর (৩১) । নব যৌবন

का समय (है) — उसके शरीरका लावण्य मानो औरभी बढ उठा। सूर्यकी किरणये कमल जैसे खिल उठता है, नये यौवनके उदयसे पार्वतीके शरीरने भी वैसीही अपूर्व शोभा धारण की। उस समय उसका चेहरा देखनेसे जोमें आता था कि, किसी चित्रकारने मानों एक तस्वीर अद्विप्त कर रखी है। पार्वतीके पेरकी उँगलोंने जो नख थे, वह ऐसे गाल और ऐसे उज्ज्वल थे कि, वह जिस समय चलती थी, उस समय मालूम होता था, मानों नखसे अक्षत का रस निकल रहा है। और मिट्टीमें उसकी ऐसी ज्योति होती थी कि, मनुष्य समझते थे कि मिट्टीमें मालूम होता है स्थलपद्म खिला है। पार्वतीके घुटने दोनों कैसे सुन्दर हैं। ऊपर गोल और फिर क्रमश पतने होते आये हैं। उसमें तावण्य भी कितना (है) ! लोग बातोंमें कहते हैं कि सिरीस फूलके समान कोमल पदार्थ और कुछ नहीं (है) परन्तु पार्वतीको दोनों बाँहें सिरीस फूलसे भी अधिक कोमल (है) ।

एकतीसवां पाठ ।

गणश = गलेमें

शुद्धांशुलि = मोती

तुलना = तुलना, उपमा

ज = भौंह

पेहन निरु = पीछिकी ओर

गुरिशा वेड़ान = घूमते फिरते हैं

शाटिउ शाटिउ = घूमते घूमते

रमटा = वस्त्र, शक्ति

(৩১)

চালর = কঁচা

ফলিত = ফলনা

ঘন = ঘনা

বোঁটা = বুঁট

পার্বতীর শশায় মুক্তার মালা । শিশিরের বোঁটার মত
মাদা মাদা মুক্তাগুলি তাহার বুকের উপর বন্ড বন্ড করিত ।
সুন্দর মুখের সহিত লোকে পদ্মের অথবা চন্দের তুলনা দিয়া
থাকে । কিন্তু পার্বতীর মুখত্রীভ নিকট চন্দ্র ও পদ্ম উভয়েই
পরাজিত । সেট অবধি দিগে চাঁদ উঠে না, আব ব্যক্তিতে পল
ঘোটে না । পার্বতীর চশু দুটি যেমন বিস্তৃত, নামিকা তেমন
উচ্চ এবং ক্রুটি তেমন লম্বা । আব চশের কথা বি বলিব ।
ঘন বৃক্ষ কেশ, তাহা পিছনদিক দিয়া ঠাঁটু পর্যন্ত পড়িয়াছে ।
যৌবনকালে পার্বতী এতই সুন্দরী হইয়া উঠিল ।

দেবতাদের দেশে নারদ নামে একজন বিখ্যাত মহর্ষি আছেন ।
তিনি সর্বদা ইচ্ছাশক্তি এদিক ওদিক ঘুরিয়া বেড়ান । এক দিন
হাটিতে হাটিতে তিনি পর্বতরাজ হিমালয়ের বাডীতে উপস্থিত
হইলেন । হিমালয় খুব সমাদরে তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন ।
তখনকার মুনিগণদিগের ভারী ক্ষমতা ছিল । তাঁহারা যাহা
বলিতেন, তাহাই ফলিত । হিমালয়ের আদেশে পার্বতী আসিয়া
মহর্ষি নারদকে প্রণাম করিল । মহর্ষি পার্বতীকে আশীর্ব্বাদ
করিয়া বলিলেন, “দেব-দেব মহাদেব তোমাকে বিবাহ করিবেন
আর তুমি স্বামীর খুব সোহাগিনী হইবে ।” মহর্ষির কথা বৃথা-
হইবাব নয় । পর্বতরাজ ভগবান মহাদেবকে জানাতাকপে

বাদ্ দেবার কছা—‘টেব দেব মহাদেব তুমসে বিশ্বাস করি গে,
 और तूम स्वामीकी बडी ही सुहागिनी होओगी।’ मह-
 पिंकी बात भूठी होनकी नहीं। पर्वतराज भगवान् महा-
 देवको जामातारूपमें पानेको विचारसे बडे प्रसन्न हुए। विवा-
 हकी व्यवस्था हो जानेपर भी पर्वतराजने पार्षतीके विवा-
 हकी कोई मैयारी न की। वे जानते थे, (य) महपिंकी बात
 ही सब होगी। इससे वे निश्चेष्ट रहे।

वत्तीमवां पाठ ।

पूर्वे = पहिले

एकदा = एक समय

दूरे थाबूक = दूर रहे

ववः = वरन्

रूपि दिया = झूदकर

वाशिष्ण = रस्त्री

वाशिष्ण = लगाया, मखा

वाशहा = वाशम्यर

परिधान = पहिरनका वस्त्र

पागल माझिया = पागल सजकर

सेई अवधि = तबसे

पाददश = तराईमें

(७२)

ভগবান্ মহাদেব পূর্বে দক্ষরাজেব বখা সতীকে বিবাহ
 করিয়াছিলেন। একদা দক্ষরাজ এক যজ্ঞ আরম্ভ করেন।
 তাহাতে সকলেব নিমন্ত্রণ করা হয়, কিন্তু দক্ষরাজ নিজকথা সতী
 এব, জামাতা মহাদেবকে নিমন্ত্রণ করিনে না। সতী বিনা
 নিমন্ত্রণেই পিতার যজ্ঞে উপস্থিত হইলেন। দক্ষ সতীকে অভ্য-
 র্থনা করা দূরে থাকুক, ববং তাহার নিকটেই মহাদেবের নিদা
 আরম্ভ করেন। পতিনিদা শ্রবণে নিমন্ত্রণ ছুঁখিত হইয়া সতী

अग्निबुधे काँप दिया प्राणत्याग करिलेन । সেই अवधि
 महादेव स्वप्नार वासना परित्र्याण करिया संन्यासीर मत्त देश
 निदेशे ज्ञाण करित्ते থাকे । তিনি माथाय ऊटा राखिलेन,
 शरीरे ज्ञाण মাখিলেन, আর বাঘছাল পরিধান करिलेन ।
 এইरूपे पागल साजिया, তিনি नानास्थाने घुरित्ते लागिलेन ।
 प्रियतमा पत्नी सतीर विवहे তিনি बडई कातर हईया पडिले ।
 अवशेषे नानास्थान पर्याटन करिया, তিনি हियालयेव पानदेशे
 आसिया उपस्थित हईलेन । से स्थानটি अतिशय निच्छन्न एव,
 जपस्त्रार पके वेश उपघुक्त, सेখানে एक दूटाँर बाँधिया
 তিনি উপासना आरम्भ करिलेन । ताँहार मन्त्रे अनेकगुलि
 अनुष्ठान आसियाहिन, ताँहाराँ सेখানে रहिया गेल । महादेव
 वि कर्षाव जपस्त्राई आरम्भ कविलेन ।

(३२)

भगवान् महादेवनि पहिले दक्षराजकी कन्या सतीसे
 विवाह किया था । एक समय दक्षराजने एक यज्ञ आरम्भ
 किया । उसमें सबका निमन्त्रण किया गया, परन्तु दक्ष-
 राजने अपनी कन्या सती और जामाता महादेवकी निम-
 न्त्रण नहीं दिया । सती विना निमन्त्रणके ही पिताके यज्ञमें
 उपस्थित हुई । दक्षने सतीको अभ्यर्थना करना तो दूर रहा,
 वरन् उसके सामने ही महादेवकी निन्दा आरम्भ की । पति
 निन्दा सुननेसे अत्यन्त दुःखित हो, सतीने अग्निकुण्डमें कूद-
 कर प्राणत्याग किया । तबसे महादेव ससारधासना

वाँद देमर कहा — 'देव-देव महादेव तुमसे विवाह करे गे, और तुम स्वामीकी बडी ही सुहागिनी होओगी,' महर्षिकी बात भूठी होनेकी नहीं । पर्वतराज भगवान् महादेवको जामातारूपमें पानेके विचारसे बडे प्रसन्न हुए । विवाहकी अवस्था ही जानेपर भी पर्वतराजने पाव'तीके विवाहकी कोई तैयारी न की । वे जानते थे, (क) महर्षिकी बात ही सच होगी । इससे वे निश्चेष्ट रहे ।

वत्तीमवां पाठ ।

पूर्वे = पहिले

एकदा = एक समय

दूरे थाकुक = दूर रहे

वरं = वरन्

आप दिया = झूठकर

राशिघोरा = रखी

राशिघोरा = लगाया, मखा

वाघहाल = बाघम्बर

पविधान = पहिरनका वस्त्र

पागल माजिया = पागल सजकर

सेई अवधि = तबसे

पाददश = तराईमें

(७२)

भगवान् महादेव पूर्वे दम्भराजेव कथा सतीके विवाह करियाहिलेन । एकदा दम्भराज एक यज्ञ आरम्भ कबेन । ताहाते सकलेव निमग्न कवा हय, बिन्दु दम्भराज निजकथा सती एवं जामाता महादेववे निमग्न कबिसेना । सती बिना निमग्नैहि पितार यज्ञे उपस्थित हईलेन । दम्भ सतीके अत्यर्धना कवा दूरे थाकुक, वरं ताहार निकटेई महादेववे निदा आरम्भ करेन । पतिनिदा श्रावण निमग्न दुःखित हईया सती

अग्निवृष्टे आप दिया प्राणत्याग करिष्येन । সেই অবধি महादेव संसार वासना परित्याग करिया मग्यामीर मत्त देश विदेशे भ्रमण करित्ते থাকेन । তিনি মাংস জটা রাখিলেন, শরীরে ভা মাখিলেন, আর বাঘছাল পরিধান করিলেন । এইরূপে পাগল মাজিয়া, তিনি নানাস্থানে ঘুরিত্তে লাগিলেন । প্রিয়তমা পত্নী মতীর বিরুদ্ধে তিনি বডই কাঁতার হইয়া পড়িলেন । অবশেষে নানাস্থান পর্যটন করিয়া, তিনি হিমালয়ের পাদদেশে আসিয়া উপস্থিত হইলেন । সে স্থানটি অতিশয় নিস্তব্ধ এবং তপস্কার পক্ষে বেশ উপযুক্ত, সেখানে এক বুটীর বাঁধিয়া তিনি উপাঙ্গনা আরম্ভ করিলেন । তাঁহার সঙ্গে অনেকগুলি অমুচর আসিয়াছিল, তাহারাও সেখানে রহিয়া গেল । মহাদেব কি কঠোর তপস্কাই আরম্ভ করিলেন ।

(২২)

भगवान् महादेवने पहली दत्तराजकी कन्या सतीसे विवाह किया था । एक समय दत्तराजने एक यज्ञ चारम्भ किया । उसमें सधका निमन्त्रण किया गया, परन्तु दत्तराजने अपनी कन्या सती और जामाता महादेवको निमन्त्रण नहीं दिया । सती बिना निमन्त्रणके ही पिताके यज्ञमें उपस्थित हुई । दत्तने सतीको अभ्यर्थना करना तो दूर रखा, वरन् उनके सामने ही महादेवकी निन्दा चारम्भ की । पति-निन्दा सुननेसे अत्यन्त दुःखित हो, सतीने अग्निकुण्डमें कर माणत्याग किया । तनसे महादेव संसारवासना

४१

जलाया । जगर प्रचण्ड सूर्य, चारों ओर जलती हुई आग । दूसरा मनुष्य होनेसे अग्नि की गर्मीसे ही जन जाता । ऐसी कठोर अवस्थामें उनहोंने ध्यान आरम्भ किया ।

महादेव स्वयं ही भगवान् (हैं), ध्यान उनका करके कितने ही मनुष्य कृतार्थ हो जाते हैं । महादेव स्वयं महान्तमय (हैं) वे सबका मद्दल विधान करते हैं । वे किस लिये ध्यान करने बैठे (हैं), वह हम तुम नहीं समझ सकते । देवतागण जो सब काम करते हैं, वह क्या तुम हम समझ सकते (हैं) ? मनुष्यको ज्ञान बुद्धि बहुत कम (है) । इसी ज्ञान द्वारा ईश्वरके कार्यकलापका कारण नहीं निर्देश किया जाता ।

पर्वतराज हिमालयने जिस समय सुन पाया कि, भगवान् महादेव अपने राज्यमें आ पहुँचे हैं, उस समय उनके आनन्दकी सीमा न रही । उन्होंने पशुपतिके पास जाकर विनीत वचनसे उनकी अभ्यर्चना की । मकानपर लौटकर उन्होंने पार्वती और उसकी जया विजया नामकी दोनों सखियोंसे कहा "तुम सब रोऊ जाकर देव देव पशुपतिकी सेवा करो ।" दूसरे दिनसे पार्वती पशुपतिकी सेवामें लगी । पार्वती स्त्री (है), युवती (है), ऐसी अवस्थामें तपस्याके स्थानमें जानेसे तपस्यामें विघ्न हो सकता है, यह समझकर भी महादेवने पार्वतीको मना नहीं किया, कारण महादेव बड़े जितेन्द्रिय पुरुष थे । महापुरुषगणका चित्त साधारण मनुष्योंकी भाँति घबल नहीं (है) । जिन्हें सब कारणोंसे

साधारण मनुष्य चचल हो उठते हैं, महापुरुषगण उनपर भ्रूक्षेप भी नहीं करते । महापुरुष प्रकृतिका मन्त्रण यही है । पार्वती प्रतिदिन शिवकी पूजाके लिये फूल और स्नानके लिये जल ला देती और यज्ञका स्थान साफ कर रखती (थी) ।

चौतीसवाँ पाठ ।

पात्री = स्त्री	आनय कर्ता = लाना
अभुसन्धान = खोज	शुत्रा = इमलिये
कोथांश = कहीं भी	गिलिया = मिलकर
प्रलय घटोइया फेलिते पारेन ठिक = ठीक	
प्रलय मचा सकते हैं	पुनवाय = फिर

(७४)

सतीर देहत्यागेर पव हईतेई देवगण महादेवेर ऊठ
 एकटी उपयुक्त पात्रीर अभुसन्धान बबितेहेन । सती येकप
 उगवती ओ रूपवती छिलेन, छिः ऐकप एकटी बत्ता पाठवार
 ऊठ देवगण कउ परिश्रम करितेहेन कउ देश विदेश
 बुरितेहेन किन्तु कोथांश ऐरूप एकटी बत्ता पाठवा
 यहितेहे न। महादेव उ प्रीवियोगेन पर हईते
 म्साव गान्ना त्याग बरिया, सम्यासी माझियाछे। ताँहाके
 आवाव गार्हस्थवर्षे आनयन करी देवगणेर प्रधा उदेश्य
 कहिलेओ, ताँहारा माहस करिया महादेवेर निकट से कथा
 पारेन ना । ताँहावा आनेन वे महादेव क्रुद्ध
 प्रलय घटोइया पारेन । शुत्राः

जलाया । ऊपर प्रचण्ड सूर्य, चारों ओर जलती हुई आग । दूसरा मनुष्य होनेसे अग्निकी गर्मीसे ही जल जाता । ऐसी कठोर अवस्थामें उनहोंने ध्यान आरम्भ किया ।

महादेव स्वयं ही भगवान् (हैं), ध्यान उनका करके कितने ही मनुष्य कृतार्थ हो जाते हैं । महादेव स्वयं मङ्गलमय (हैं) वे सबका मङ्गल विधान करते हैं । वे किस लिये ध्यान करने बैठे (हैं), वह हम तुम नहीं समझ सकते । देवतागण जो सब काम करते हैं, वह क्या तुम हम समझ सकते (हैं)? मनुष्यको ज्ञान बुद्धि बहुत कम (है) । इसी ज्ञान द्वारा ईश्वरके कार्यकलापका कारण नहीं निर्देश किया जाता ।

पर्वतराज हिमालयने जिस समय सुन पाया कि, भगवान् महादेव अपने राज्यमें आ पहुँचे हैं, उस समय उनके आनन्दकी सीमा न रही । उन्होंने पशुपतिके पास जाकर धिनोत वचनसे उनकी अभ्यर्चना की । मकानपर लौटकर उन्होंने पार्वती और उसकी जया विजया नामकी दोनों सखियोंसे कहा "तुम सब रोज़ जाकर देव देव पशुपतिकी सेवा करो ।" दूसरे दिनसे पार्वती पशुपतिकी सेवामें लगी । पार्वती स्त्री (है), युवती (है), ऐसी अवस्थामें तपस्याके स्थानमें जानेसे तपस्यामें विघ्न हो सकता है, यह समझकर भी महादेवने पार्वतीको मना नहीं किया, कारण महादेव बड़े जितेन्द्रिय पुरुष थे । महापुरुषगणका चित्त साधारण मनुष्योंकी भाँति पचल नहीं (है) । जिम सब कारणोंसे

साधारण मनुष्य चवल ही चठते है, महापुरुषगण उनपर भ्रूलोप
भी नहीं करते । महापुरुष प्रकृतिका लक्षण यही है । पावेतो
प्रतिदिन शिवकी पूजाके लिये फूल और स्नानके लिये जल
सा देती और यज्ञका स्थान साफ कर रखतो (थी) ।

चौतीसवाँ पाठ ।

पात्राँ = स्त्रो

अभुसकान = खोज

कोषाँ = कहीं भी

प्रलय गटाँया फेलिते पायेन ठिक = ठीक

प्रलय मचा सकते हैं

आनयन करा = लाना

शुद्धाँ = इच्छलिये

गिलियाँ = मिलकर

पुनराय = फिर

(७४)

मतीर देहआगेव पर हईतेई देवगण महानेवेर अठ
एदती उपयुक्त पात्राँ अभुसकान करितेछेन । मती देकप
शुभवती ७ लपवती छिलेन, ठिइ एकप एकती कथा पाईनार
जठ देवगण कठ परिश्रम करितेछेन कठ देश विदेश
गुरितेछेन किइ कोषाँ अरूप एकती कथा पायेन
यईतेछे ॥ महामेव उ शीविरोगेर पर हईते
म,साय वासना त्याग करिया सम्यानी नाछिछाछेन । तीहाके
आवाँ गार्हस्थमर्षे आनयन करा देवगणर प्रथा तीहाके
हईले७, तीहाका साहस करिया महानेवेर निकट से कना बुनियात
पायेन ना । तीहाका ज्ञानेन ये गजायव जेइइस
प्रणय गटाँया फेलिते पायेन । शुद्धाँ, तीहाका

हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ मन्त्राटपत्र

“प्रताप”

ने लिखा है — “हिन्दी बर्हाखाता—मूख्य२) —लेखक
का० कस्तूरमल बाठिया । सब प्रकारके हिसाब-किताबके
सीखनेके लिये यह पुस्तक परम उपयोगी मालूम पडती है ।
बही-खाता दुण्डी-पुर्जा, चाँकडा, मीजान, जमा, पैठ, बैक,
चेक, लेखापाड, सिलक बही, पक्की बही आदि सभी बातोंकी
इसमें बडे अच्छे ढँगसे शिक्षा दी गई है । कोइ भी थोडीसी
हिन्दी जानने वाला मनुष्य इसका अध्ययन करके एक अच्छा
मुनीम बन सकता है । इसके लेखक इस विद्या के ग्रेजुयेट है ।

“यह पुस्तक अपना प्रचार केवल मुनीमी करने वालो तक ही
परिमित नहीं रखती, प्रत्येक देश-हितैषीको इस पुस्तकको
एक बार पढना चाहिये । क्योंकि ससारमें एक नया औद्योगिक
युग शुरू होनेवाला है और उसका पहिला सन्तरी, ‘इम्पीरियल
प्रिफिरेंस भारतके दवाजे पर दस्तक दे रहा है । पुस्तककी
रूपाइं तथा कागज़ भी बडा सुन्दर है । प्रत्येक घुष्ठ तमवीरके
माफिक मालूम पडता है ।”

पता—हरिदास एण्ड कम्पनी

२०१ हरिमन रोड, कलकत्ता

नरसिंह प्रेस की उत्तमोत्तम पुस्तकें ।

दिलचस्प उपन्यास

मघाट् अकबर (जीवनी)	३)	लच्छमा	१)
सिराजुद्दौला	२॥)	अनाथ बालक	१)
शुक्लचसनासुन्दरी	३)	शरदकुमारी	१)
चन्द्रशेखर	१॥)	इन्दिरा	॥)
राजसिंह	१॥)	मोतीमहल	॥)
स्वर्णकमल	१॥)	बिल्लुडो हुई दुलहन	॥)
कोहनूर	१॥)	मंझली बहू	॥)
नवीना	१)	राधारानी	॥)
बेलून विहार	१)	पाप-परिणाम	॥)
कृष्णकान्तकी विल	१)	वीर चूडामणि	॥)
त्रिषवृक्ष	१)	शैलवाला	॥)
मान सिंह	१)	गल्पमाला	॥)
विलासकुमारी	१)	युगलांगुरीय	॥)
लवगलता	१)	सलीमा बेगम	॥)
फूलोंका द्वार	१)	कलङ्क	॥)
अभागिनी	१)	अलका मन्दिर	॥)
सावित्री	१)	सुनीति	॥)
रजनी	१)	शैव्या	॥)

पता—हरिदास एण्ड कम्पनी

२०१ हरिसन रोड, कलकत्ता ।

